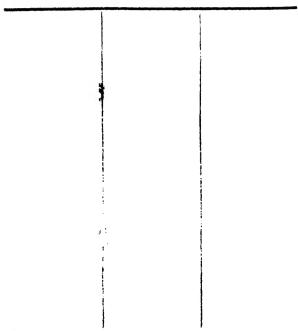
#### GOVERNMENT OF INDIA NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

Class No. 182. Qa
Book No. 862. 1-22

MGIP Santh.—S1-30\_LNL/58-9-4-59-50,000. Vol-7, Pt 2. N6297-308

#### NATIONAL LIBRARY

This book was taken from the Library on the date last stamped. A late fee of 1 anna or 6 nP. will be charged for each day the book is kept beyond a month.



MGIP Santh.-S1-34 LNL/58-19-6-59-50,000.

... •••

\*\*\*

...

\*\*\*

•••

...

•••

• • •

...

\*\*\*

•••

. .

99

১০৪ ব্রাহ্মগণের প্রস্তি ... ১০৭ আর বার বিবরণ ... ১১২ বিজ্ঞাপন ... ...

रेवनाथ २৯२ मःथा

খ্ৰেদ সংহিতা ় ... ---

বর্ষদোষের ত্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা

মৃতন পুস্তক ... ... ... বিক্রেয় পুস্তকের বিজ্ঞাপন ... আয় বায় বিবয়ণ ... ...

খ্যেদ সংহিতা ...

নববর্ষীয় ব্রাগ্ধসমাজের বক্তৃতা

ব্ৰহ্মাবৰ্ত্তে ব্ৰহ্মোপানা ...

ৰাল্মীকির অক্য় কীর্ত্তি সংস্কৃত সাহিত্য

সামবেদীয় কন্মান্মন্তান পদ্ধতি

মৃত্যুম পুস্তুক ... বিক্রেয় পুস্তুক ... আয়ু ব্যুয় বিবরণ ...

মর্ম ও ভাগে স্বীকার ব্যক্তসম্পর্

ধর্ম ও তাগে খাণান ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা ...

সংস্ত সংগিতা ... মুসলমান ধর্ম ও তাহার বিস্তার

평업 ... ...

গ্ৰহ গ্ৰহ

বন্ধু—বাঙ্কলা কবিতা ... বন্ধ সভীত ... ... আয় বায় বিবরণ ... বিক্রেয় পুস্তক ...

ভারের গংলার পঞ্চম সাম্বং সরিক

সমাজের বক্তৃতা ... হিন্দুধর্মের ইতিহাস ...

মুসলমান ধর্ম ও তাহার বিস্তার

ষজুর্বেদ সংহিতা হইতে উদ্ধৃত

मामार्यमीय कन्त्राच्छीम शक्

বান্ধ বিবাহ
আন্ন বিবাহ
আন্ন বান্ন বিবরণ
বিজ্ঞাপন
বিক্রেয় পুস্তক

ব্ৰাহ্মসমাজের বক্তা

পাণ্ডৰগিৰ্যাভ্ৰম হইতে আগত পত্ৰ ...

হিন্দু ধর্মের ইতিহাস 🔍 👵

মুসলমান ধর্ম ও ভাহার বিভার

ৰধেদ সংহিতা ... ... ভৰানীপুৰ বোড়স সাম্বৎস্থিক

রোক্ষমাজের বক্তা ...

ফ্রেনমত মুসলমান ধর্ম ও তাহার বিতার বিক্রের পুত্তক ...

কোমগর পঞ্চম সাম্বৎসরিক

ভাত্র ৩০১ সংখ্যা

আশ্বিন ৩০২ সংখ্যা

সংস্কৃত সাহিত্য ...

বিক্রেয় পুস্তক

খবেদ সংহিতা

খণ্ডেদ সংহিতা

टक्रममञ

ধন্য বাদ—বাঙ্গলা কবিতা

ঈশ্বের প্রতি আক্ষণ ...

उचा विमानिय-नश्यम डेशरिम ... ...

সামবেদীয় কর্মান্মন্তান পদ্ধতি ...

टेकार्छ २२४ मःখ্যा

व्यावार २৯৯ मःथा

প্রাবণ ৩০০ সংখ্যা

229

759

4...

| Company of the Compan |             |         |                   | The second section of the section  |              |
|--|-------------|---------|-------------------|--|--------------|
| <b>3</b>   | रश्या       |         | 70                | <b>म</b> ংখ্যा ¹   | पृष्ठ        |
|  | 229         |         | 35                | उषांवर्ड उरकाशांमना २२৮  | 23           |
| चाय वाय विवतन •  | 224         | •••     | 60                |  | (23          |
| चारा तारा विवरण  | 253         | •••     | 63                | जाकार्य एक उ शहातक ७००   | 368          |
| আয়ুর্যু বিবরণ   | 900         | ***     | 13                | MATER CAZUE  | 97           |
| ष्यास वाग्र विवहन  | 000         | 204     | 202               | विक्ति विवास   | 202          |
| and the second s | 600         |         | 2 99              | 1 1  | 20           |
|  | O.P.        |         | 20.               |  |              |
| खेमहेषातिश्च मात्रश्मतिक जाना  |             |         |                   | ख्वामीश्रत त्वाज्म माय्यमतिक   | sa a         |
|  | 909         |         | 353               | वामामभाष्ट्रत वल्ह् छ। ७०२   | 22           |
| ्ज्य। टब्ला विकालम   |             | • •     |                   | <b>कागनभूरत उरमा भागना त</b>   | CP CP        |
| ঐ প্রাত:কালের প্রথম বক্তৃতা  | 909         | ***     | 324               | বক্তা ৩০৩  | 229          |
| ঐ দ্বিতীয় বক্তা   | FOO         | ***     | 775               | মাদিক বাক্ষসমাজ ৩০৪  | 304          |
| ঐ ভৃতীঃ বক্তা  | 909         | ***     | 797               | थे। गिर्क खामामगारक ते राक का ७०७  | 330          |
| बे मधाद्भ कात्न मन्नीज   | 909         |         | 220               | मानिक लिकाममार्टकत बच्छे का ७०%  | 209          |
| के नायः कात्मत अथम व कृ ठा   | 9.0         |         | 358               | नामक वाद्यमगरिकत्र वक्कृता ७०५   | 141          |
| ঐ দ্বিতীয় বক্তা   | 9.9         | •••     | 350               | মুসলমান ধর্ম ও তাহার বিস্তার ২৯৯   | 0            |
| # 18014 18201  | 909         |         | 329               | মুসলমান ধর্ম ও ভাছার বিস্তার ৩০০   | 90           |
| ঐ তৃতীয় বক্তৃত।   |             | • • • • | 2                 | यमलयां व अर्थ . क कार दिल्ला व १००६  |              |
|  | 2,59        | ***     | -                 | যুসলমান ধর্ম ও তাহার বিস্তার ৩০২   | 98           |
|  | イタア         | •••     | 29                | The state of the s | 704          |
| শ্বেদ সংহিতা   | くこう         | •••     | 87                | মুসলমান ধর্ম ও তাহার বিস্তার ৬০৬   | 100          |
| ঋ্যেদ সংহিতা   | 900         |         | 63                | মৃত্যাকাহমৃতংগময় ৩০৪  | 787          |
|  | ७०५         |         | 43                | यख्रकाम मः विकाशकारक समृ क ७००   | 90           |
|  | ७०२         |         | 29                | বন্ধু— বাঙ্গলা কবিতা ২৯৯<br>বন্ধু—বাঙ্গলা কবিতা ৩০৬  | 42           |
|  | ७०७         | •••     | 220               | वश्च-वाञ्चलां कविज्ञा ७०५  | 12.0         |
| 4044 451401  |             | ***     |                   | বর্ষশেষের প্রাক্ষদমাজের বক্তৃতা<br>সংহের প্রতি আ র্বণ ২৯৭  |              |
| 4644 1717 41   | 908         | ***     | 200               | স্পত্রের প্রতি আ বিগ ু ২৯৭<br>বর্ষদেয়ের ও নববর্ষের ব্রাহ্ম-   | S            |
| बरयम मर्श्डिं।   | soc         | ***     | 200               | TINT FOR FRANCE  |              |
| <b>भार्याम मर्श्वा</b>   | 600         |         | 200               | বলীকির অক্ষয় কীর্ত্তি ২৯৮   | 600          |
|  | 400         |         | 200               |  |              |
|  | 200         |         | 245               |  | 74           |
|  |             | •••     | •                 | বিক্রের পুত্তক ২৯৮   | 45           |
| क्रमाहोताम जानामादक  |             |         |                   | विटक्रम श्रेष्ठक २३३   | 5.           |
| 1100001111   | ७०७         | ***     | 779               | বিক্রেয় পুস্তক ৩১০  | ٠٠           |
| अनाशाम आयमगाद्य  | 400         |         | 220               | विद्राम् श्रृंखक ७:२   | 552          |
|  |             |         | 220               | विटक्रम भूक्क ७७   | 302          |
| কাথিয়া সম্প্রদায়<br>কোন্নগর পঞ্চন সাম্বৎস্করিক   | 402         | •••     | <b>&lt;&lt;</b> 0 |  | •            |
| বান্ধসমাজের বক্তৃতা  | 0:3         |         | 80                | £  | 28 S         |
| भवरा   | 222         |         | es                |  | 75-8         |
| इस्पन्नगत जानागमाज   | 4.0         |         | 223               |  | 201          |
| CONTROL  | ७०२         |         | 208               | বিজ্ঞাপন ৩০০   | 93           |
|  | 909         |         | 329               |  | 5 100        |
| CAMAGE   | 9-8         |         | 300               | শ্যামবাজার পঞ্চম সাম্বৎস্ক্রিক   |              |
| ভোন ও ধর্মের সামঞ্জুসা   | 900         | •••     | 780               | ব্রাশ্বদমাজের বক্তৃতা ৩০০  | 42           |
| खान च वर्णात्र गानकागा   | ৩০৬         | •••     |                   | जः क जाहिजा २० <del>४</del>  | 9            |
| months on the same is such it.   | 203         | •••     | 290               | সংস্কৃত সাহিত্য ২৯৯<br>সংস্কৃত সাহিত্য ৩০০   | 85           |
| उद्घ विमा। – हजूर्थ थए   |             |         |                   |  | 48           |
| সাধন প্রকরণ  | ७०७         | ***     | १२०               | সামবেদীয় কর্মান্তর্ছান পদ্ধতি ২৯৭   | 75           |
| <b>ভ</b> द्ध विमा।—हजूर्थ थेथ  |             |         |                   | সামবেদীয় কর্মান্মষ্ঠান পদ্ধতি ২৯৮   | 0r           |
| সাধন প্রাকরণ   | 909         |         | २०२               | সামবেদীর কর্ম। র ষ্ঠান পদ্ধতি ২৯৯  | 49           |
| হম্যখাদ—বান্ধলা কবিতা  | 224         |         | OF                | माग्रदमीय कर्मा च्छान शक्ष ७००   | 99           |
| श्रम ଓ जांग सीकाव  |             |         |                   |  | १२१          |
| द्धाकाण्याद्भन्न बद्धनुष्ठा  | 222         | *       | 80                | সিন্দ,রীয়াপটী পঞ্চম সাম্বংসরিক  | <b>`</b> ` 1 |
| मरदर्भि डोक्रमभारेकत रक्ष  |             | * *:*   | 79                |  |              |
| মূতনপুত্তক   | 5.24        |         | 78                |  | 309.         |
| মূত্র পুস্তক   | イシア         | ***     | O.D.              | यथ २৯৯   | 6.0          |
| नोधविभित्री खम इहेर उ  | 10.00       |         |                   | हिन्तु धर्मात हैजिहान ७००  | 60           |
| क्रांगंड शब<br>खार्तमा लग्नमशुम्मा छैशरमम  | 2.50        | ***     | 20                | হিন্দু ধর্মের ইডিহাস ৩০১   | 10           |
| उक्तिविमा नय-अस्त्र मन छ गरमन  | 767<br>4024 |         | 200               | हिन्सू धर्मात है जिद्यांग ७०৮  | 570          |
| and the same of th | 233         | ***     | 44                | केष्य ३०२८। क्लिश्य ४०००। २४ टेट्य मामबाह्   | )            |
| उद्यम्भार्थः   |             | •••     | 7.                | The state of the s | ,            |



२३१ मरबा

# তঅবাধিনীপ্রতিকা

ব্রক বাএকমিদমন্ত্রকাসীছান্যৎ কিঞ্চনাসীজনিদং সর্ব্যমসূত্রৎ। তদের নিত্যং জ্ঞানসনস্কং শিবং হুতভ্রন্থির্বয়ব্যেক-স্বাধিতীয়ং সর্ব্যাপি সর্ব্যনিয়ন্ত্র সর্ব্যাভ্রয় সর্ব্যবিৎ সর্বশক্তিমদ্ জ্রুবং পূর্বমঞ্জিমমিতি। একস্য তলৈয়বোগাসন্যা পার্ত্রিকমৈত্রিক শুক্তস্বৃত্তি। তল্মিদ্ প্রীতিক্তন্য প্রিয়কার্য্যসাধনক তদুপাসন্ত্রের।

# ঋগে দ সংহিত।।

প্রথমমণ্ডলস্য চতুর্দশান্ত্র কৈ তাফ মং সূক্তং।
গোত্র ক্ষান্ত ত্রিক প্রকা সোমোক্ষেত্র ।
১০৭৬

৬। অতারিষ্ তর্মসম্পারম্-সোষা উঞ্জী ব্যুনা রুণোতি। শ্রিষে ছন্দোন স্বাযতে বিভাতী স্প্রতীকা সৌমনুসাযাজীগঃ।

ভ। 'অস্য' বৈশস্য 'ড্নস্থ' অক্কার্স্য'পারং 'সমান্তি-প্রচলদং 'অডারিল্ল' উত্তীর্ণাঃ অন্তুর। অনন্তরং 'উহ্বতী' বৈশং ড্নঃ বছাত্তী 'উহা' 'বযুনা' বহুনানি সর্কেষাং প্রানিমাং জ্ঞানানি 'কুনোডি' নির্মিনীতে 'জিবে' সম্পদর্থং 'ছল্পঃ' 'ল' 'স্মতে' বথা উপজ্জাবিতা বদীকরণে সমর্বঃ প্রজ্ঞঃ আন্তাননীপং প্রাপ্ত ত্বং প্রতিত্তর্বাং ক্ষতে হস্তি প্রহঃ পান্তাননীপং প্রাপ্ত ত্বং প্রতিত্তি উষা অকীয়য় নির্মিল্লীক্সা হস্তীব দুল্যতে। এবং 'হ্পেডানা' বিশিষ্ট-ক্রান্স ক্রপড্লেন প্রোভনালী স্তী 'সৌমন্সাহ' সর্কেষাং সৌমনস্যায় 'অলীগঃ' অক্কারং ভ্র্কিডবড়ী।

৬। আমরা এই নৈশ অন্ধকারের পারে উত্তীর্ণ হইয়াছি। উষা, অন্ধকারকে নিরাস করত সমস্ত প্রাণীর জ্ঞান উৎপাদন করি-তেছেন। যেমন বশীকরণ-সমর্থ মনুষ্য হাস্য করে, সেই রূপ এই আলোক-প্রদা উষা স্বীয় কান্তি প্রভাবে যেন হাস্য করি-তেছেন। ইনি প্রিরদর্শনা হইয়া সকলকে প্রীতি করিবার নিমিত্ত অন্ধ্রকার বিনষ্ট করিয়াছেন।

3099

৭। ভাষতী নেত্রী মূন্তানাং দিব স্তাবে ছহিতা গোতামেভিঃ। প্রজাবতো নূবতো অশ্ব ব্যান নুষো গো অগ্রা উপামাসি বা-জান্।

গ। 'ভাগতী' তেজবিনী। স্নৃতেতি বাঙ্নাম। 'স্নৃতানাং' প্রিবনত্যাক্সিনাং 'নেত্রী' প্রনেত্রী কারবিত্রী উবনি
হি লাতাবাং মনুষ্যপ্রপ্রথাঃ প্রাণিনঃ আ আ ব্যাপারার
ইতন্ততঃ শব্দং কুর্মন্তি। এবলুতা 'নিবোদুহিতা' ল্যুলোক সকাশাৎ উৎপদ্ম উবা 'গোডমেভিঃ' অবিভিঃ
আনাভিঃ 'ভবে' ভ্যতে। কে 'উবঃ' অন্যাভিঃ স্তৃতা তং
'বালান্' আমান্ 'উপনানি' প্রক্ষা। কীনুশান্ বালান্
'প্রলাবতঃ' প্রভাভিঃ প্র প্রোরাদিভিঃ যুক্তান্ 'ন্রতঃ'
লাস লক্ষণেঃ নৃত্তিঃ উপেতান্ 'আবর্ধ্যান' আমাঃ বুদ্যা
বিদ্যানামন্ত্রন বোদ্ধব্যঃ বেষু বাজেম্বু তান্ যবা আবর্ধান
বর্ধব্যপত্যা ব্রারঃ। আবস্তান্ অবৈঃ হিরালানঃ ধননি

আলানি চলডভে অডেহিলানাং ডকালডং 'গোআআন' গাৰোহতে অসুধে যেলাং ডাদৃশান্।

৭। তেজস্বিনী সুন্ত বাক্য প্রণেত্রী ছালো-কোৎপন্না উষা আমাদিগের কর্ত্ক সংস্তৃত হইতেছেন। হে উষা! তুমি আমাদিগকে পুত্র পৌত্র দাস অশ্ব ও গো যুক্ত অন্ন প্র-দান কর।

3094

৮। উষ্স্তমশ্যাং যুশসং স্থ-বীরং দাসপ্রবর্গং রুমিমশ্ব্ধাং। স্থাদং সদা শ্রাবদা যা বিভাদি বাজপ্রাভা স্থানে বৃহন্তং।

ভ। হে 'উয়ঃ' উয়ো দেবতে 'তং' 'র্ঘিং' ধনং 'অশ্যাং'
প্রাথি য়াং। কীদৃশং 'ঘশসং' যশসা কীর্ত্তা যুক্তং সর্কৈঃ
প্রশাস্থ ইত্যর্গঃ 'স্থারিং' শোভনৈঃ বীরেঃ পুরাদিভিঃ
যুক্তং 'দাস প্রবর্গং' প্রকৃষ্টো বর্গঃ সন্তমঃ প্রবর্গঃ দাসানাং
কর্মকরালাং প্রবর্গা যদ্মিন্ তং। অনেকৈড্ ত্যৈরুপেতমিত্যর্গঃ। 'অশ্বক্রাং' অশ্বাঃ বুল্ল্যাঃ বোদ্ধব্যাঃ যেন ধনেন
তাদৃশং। হে 'প্রভংগ' শোভন ধন উয়ঃ 'স্থদং সমা' শোভ
তনন কর্মণা যুক্তেন 'স্রব্সা' স্রবর্গীয়েন স্তোত্রেণ প্রীতা
ত্বং 'বাজপ্রস্থতা অস্মন্ডাং দত্যায়া সতী 'বৃহস্তং' প্রৌঢ়ং
'যা' যং র্ঘিং 'বিভাসি' বিশেষেণ প্রকাশয়সি তমস্যামিতি
পূর্ব্বেণ সম্বন্ধঃ।

৮। হে সুভগে! তুমি শোভন কর্মযুক্ত প্রবণীয় স্তোত্র দ্বারা প্রীত হইয়া আমাদি-গকে অন্ধ প্রদান পূর্বক যে বিপুল বিভ প্রকাশিত করিয়া থাক, হে উবা! আমরা কীর্ত্তি পুত্র দাস ও অধ্যের সহিত সেই ধন প্রাপ্ত হই।

2092

ন। বিশ্বানি দেবী ভুবনাভি
চক্ষ্যা প্রত্রীচী চক্ষ্ম রুবি যা বিভাতি। বিশ্বং জীবং চুরদে
ব্যোধর্যন্ত্রী বিশ্বাস্যা বাচ্মবিদশ্বনাবোঃ।

৯। 'দেবী' দ্যোতমানা উষা 'বিশ্বানি' সর্বাণি 'ভূবনা' ভূবনানি ভূতজাতানি 'অভিচক্ষ্য' অভিপ্রবাশ্য প্রকাশ বজি কৃষা অনন্তরং 'প্রতীচী' প্রত্যে মুখী সতী 'চক্লুং' প্রকাশকেন ডেক্লা' উর্বিখা' উর্বী বিভীর্না সতী বিভাতি প্রকাশতে। অনিচ 'বিশ্বং' 'ক্লীবং' সর্বাং প্রাণিক্লাতং 'চরসে' চরণায় অঅ ব্যাপারেষু প্রবর্জনায় 'বোধয়ন্তী' নিরাতঃ সকাশাং উদ্বোধয়ন্তী উরা 'বিশ্বস্য' সর্বাস্থানাবোঃ' মনসা যুক্তস্য বায়্যকার সমর্থস্য প্রাণিক্লাতস্য যা
বাগলি তাং 'বাচং' 'অবিদৎ' অলম্ভত অতএব উষসঃ ক্ল্যুভাবতীতি সজ্জোপপদ্মা ভবতি।

৯। প্রকাশবতী উবা সমস্ত প্রাণিকে
প্রকাশিত করত প্রত্যন্ত মুখী হইয়া প্রকাশক
তেজ দারা বিস্তীর্ণ হইয়া থাকেন এবং সমস্ত
প্রাণিকে স্ব স্ব কার্য্যে প্রবর্ত্তিত করিবার
নিমিত্ত প্রবোধিত করিয়া মনযুক্ত মনুষ্য
দারা সংস্তৃত হইয়া থাকেন।

2080

১০। পুনঃ পুনু জার্যমানা পুরাণী সমানং বর্ণমুভি শুন্তমানা।
শুমুীর্ব ক্রুত্মবিজ আমিনানা মর্তাস্য দেবী জ্রযুন্ত্যামুঃ।
১। ৩। ২৫।

২০। 'পূৰঃ পূনঃ' 'ক্লাযমানা' প্রতিদিবসং কুর্য্যাদ্যাৎ
পূর্বং প্রানুর্ভবন্তী 'চিরন্তনী' পুরানী নিত্যেত্যর্থঃ। যশ্মাৎ
'সমানং' 'বর্ণং' একমেব রূপং 'আছি' প্রাণ্যা দুরুদ্ধানা'
শোভমানা বিভিন্নেলিপ দিবসেখন্যা এক রূপেণাবস্থানাৎ
মিত্যাপং ইত্যর্থঃ। এবং গুণ বিশিক্তী 'দেবী' দেবনশীলা
উদ্যা 'মর্ত্যুস্য' মরণ ধর্মাণঃ সর্ব্যুস্য প্রাণিক্রাত্স্য 'জাযুঃ'
হীযতে উষাচ পূনঃ পুনর্কাযমানেত্যুক্তং অভঃকৈব'আযুঃ'
কীবনং 'কর্যন্তি' উন্যন্তী বর্ত্ততে বন্ধীযুবঃস্বতীভাস্ম হি
সর্ব্যোধ আযুঃ র্কর্যতি। তর দৃষ্টান্তঃ 'কুছুঃ' কর্ত্তনশীলা
'বাদ্বীব' ব্যাধন্তীব। সাম্বর্থা 'নিক্রঃ' চলতঃ পক্ষিণঃ 'আমিনানা' পক্ষাদি ছেদনেন হিংসন্তী তেষাং আযুর্কুর্যতি
তম্বং। ১। ৬। ২৫।

১০। উষা দেবী চিরস্তনী এবং বার বার জন্ম গ্রহণ কবিয়া থাকেন। ইহার রূপ একই প্রকার। কর্তুন শীলা ব্যাধ-স্ত্রী যেমন প-ক্যাদি ছেদন দ্বারা পক্ষিদিগকে হিংদা ক-রিয়া থাকে, দেই রূপ ইনি দমন্ত প্রাণির আয়ু নন্ট করিয়া থাকেন। ১। ৬। ২৫।

# স্থ্যু প্রবিধ্য প্রতি আকর্ষণ। বর্ষশেষের ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা। ত চৈত্র শনি বার। ১৭৮২ শক।

ক্ষতিলাভের গণনাতেই মানব-চক্র দিবা রাত্র ঘূর্ণিত হইতেছে। পৃথিবী বর্ষ-পূর্ণ করিবার জন্য যেমন অপ্রতিহত বেগে স্থ্যা-মগুলকে প্রদক্ষিণ করিতেছে, ঋতু-নিচর স্ব স্ব কার্য্য সম্পাদমের জন্য যেমন পর্যায়-ক্রমে প্রধাবিত হইতেছে, মানব-কুলও তক্রপ আপ্ত-কাম হইবার জন্য প্রতিক্ষণ সুখকর কল্যাণকর বিষয়েরই অনুসরণ করিতে তৎ-পর রহিয়াছে। যে সমস্ত কার্য্য ইউকর সুখ-প্রদ, তাহাই তাহার অনুষ্ঠেয়; যাহা অনিষ্টকর অশুভ-প্রদ তাহাই তাহার পক্ষে পরিত্যজ্য। এই সিদ্ধান্ত-সোপান অবলয়ন করিয়া মর্ত্য-লোকে আবাল রন্ধ বনিতা সক-লেই সুখ সম্পদের, জ্ঞান ধর্মের জন্য ব্যাকুল হইয়া ভ্রাম্যমান হইতেছে।

ছ্মা-পোষ্য-শিশু শান্তি লাভের উদ্দেশেই জননীর ক্রোড় অস্বেষণ করে, বিজ্ঞানলিন্দা যুবা জ্ঞান-ভৃষ্ণা চরিতার্থ করিবার জন্যই ক্রমাগত শ্রেষ্ঠতর উচ্চতর বিদ্যাদরেরই অনুসন্ধান করে, বিষয়-প্রিয় ব্যক্তি
বিষয় বিত্ত সম্বর্জনের জন্য প্রাণোৎসর্গ করিয়া দিবারাত্র অতিবাহিত করে, শান্ত
সমাহিত ব্রহ্ম-জিজ্ঞাসু সাধু জ্বলন্ত অনল
সদৃশ সংসারের জ্বালা যন্ত্রণার মধ্যে অটল
ভাবে অবস্থান করত এক দৃষ্টে ঈশ্বরের
প্রসন্ধ-মুখ চাহিয়াসকল উদ্বেগ নিবারণ করে।

সুখ শান্তি ইহাদিগের মধ্যে প্রত্যেকেরই প্রার্থনীয়। ছংখ না হয়, অবাধে অক্ষয় সুখ শান্তি লক হয়, এই আশাদে আশাদিত হইয়া প্রতি জনেই এই কর্ম-ক্ষেত্র পৃথীতলে নানা বিষয়ের অনুসন্ধান করিতেছে, নানা কার্য্য অবলম্বন করিয়া শরীর আয়ুং-ক্ষয় করিতেছে।

वालक त्काफ़-अध इरेटल, विष्णांशी च-কার্য্য সাধনে বাধা পাইলে, বিষয়ীর বিষয় বিত্ত লাভের ব্যাহাত হইলে তুঃখ মনন্তাপের আর পরিদীমা থাকে না। কন্ট ক্লেশের আর ইয়ভা হয় না। এমন কি, কত শত লোক এখানে পার্থিব সুখের' অনুসরণে প্রবৃত্ত হইয়া—পার্থিব ধন সম্পদ-লাতে অ-নুরক্ত হইয়া নানা কারণে অসিন্ধ-মনোর্থ হইবা মাত্র অবৈধ উপায়ে প্রাণত্যাগ করি-তেছে, অথবা উৎকট রোগগ্রস্ত হইয়া চির-জীবনের মত অকর্মণ্য হইয়া যাইতেছে। কত লোকেইবা বাঞ্জিত বিষয় হস্তগত করি-বার জন্য অনুচিত পরিশ্রম, অসম্ভাবিত মনো-রুত্তি সঞ্চালন জনিত ছুরারোগ্য রোগে আক্রান্ত হইয়া চুংসহ ক্লেশ সচকারে মানব-লীলা সম্বরণ করিতেছে, অথচ তাহাদিগের সুখ-ভৃষ্ণা চরিতার্থ হইতেছে না।

गानव-ऋमग्र अगनि मूथ-श्रिप्त रा, स्त्री-ভাগ্য স্থর্যোদয়ের পূর্বাভাস সন্দর্শন করিবা মাত্র অমনি তাহা পল্লের ন্যায় বিক্লারিত হয়, ছ্রঃখ ও বিষাদ অন্ধকারের আবির্জাব হইতে না হইতেই অমনি তাহা স্লান হইয়া যায়। আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে, **সুখ লাভ** যাহার অভাব অন্টন তাহার্দিগের পক্ষে যার পর নাই ক্লেশকর, অকল্যাণকর, জগতের অষুত অগণ্য রত্ন রাজীর মধ্যে মনুষ্য সেই অমূল্য ধন নির্বাচন করিতে मनिथक (हस्टी) करत ना। या धन लक्ष इटेल আশা পূর্ণ হয়, ব্যাকুলভার শাস্তি হয়, সেই দেব-স্পৃহনীয় তুর্লভ ধনের প্রতি সহসা সকলের চক্ষ্ পতিত হয় না। মনুষ্যের क्षमप्र-कम्मत हरेटा य मूथ-लालमा मञ्जू হইয়া তাহাকে উপভোগ্য বিষয়ের জ্ন্য

कथन गणि गाणिका, कथन यटना मोन, কখন রাজ্য সাম্রাজ্য, কখন বা বিদ্যা-বিত্ত লাভের নিমিত্ত ব্যাকুল করিতেছে এবং काश नक क्रेटल ७९ मट्डार्टर्ग क्क उ অতৃপ্ত হইয়া আবার বিষয়ান্তর উপার্জনের জন্য তাহাকে অধিকতর অহির করিয়া তুলিভেছে, সে যে কি অমূল্য অক্ষয় ধন, কোন্ নিভূত আকরে—কোন্ সুগভীর রত্না-করে যে তাহা নিহিত রহিয়াছে, মনুষ্য পদে পদে হতাশাস ও প্রবঞ্চিত হইয়াও তাহার अनुत्रक्षांन करत् मा। मः नारतत् नकल कान সকল পদার্থের নিকট হইতে নিরাশ হইয়াও সেই চির প্রার্থনীয় লক্ষ্যস্থানের প্রতি, সেই সুশীতল অক্ষয় ভৃপ্তি সরোবরের প্রতি কা-হারও বিজ্ঞান-চকু নিপতিত হয় না। वालटकता रायन এक वात वह आंत्रारम বালুকা-রাশি সংগ্রহ করিয়া গৃহ-দার নির্মাণ করে, আবার মনংপুত না হইলে অমনি তাহা ভগ্ন করিয়া অন্যবিধ দ্রব্যের আহরণে প্ৰবৃত্ত হয়। মনুষ্যও দেই ৰূপ সুখোদেশে এক বার কোন ৰূপ পার্থিব বিষয় উপার্ক্তন করিতে উৎসাহ উদ্যমের সহিত প্রবৃত্ত হই-তেছে, আবার সেই উপার্চ্ছিত বিষয়ে বাঞ্ছিত সুখ-লাভে নিরাশ হইয়া অপর পদার্থের ব্দুসরণ করিতেছে। কোথারও স্বার প্রকৃত সুধ, প্রকৃত শান্তি লাভ হইতেছে না। কেবল বার্থ পর্যাটনে জীবন-কাল নিংশে-বিত্ত করিতেছে। নির্দ্বোধ ভূত্য যেমন প্রভুর আহ্বানমাত্রেই তাঁহার সমীপবর্ত্তী হইয়া তাঁহার জিজ্ঞাসিত বিষয়ের প্রকৃত অর্থ বোধের অপেক্ষা না করিয়া কাাকুল অন্তরে **ইতন্ততঃ** পরিভ্রমণ করে এবং মনঃ-কম্পিত नाना खवा ठांशक मिक्टि लहेका बाहेका ७ ভাঁহার তুটি সাধন করিতে পারে না ; সেই ৰূপ আত্মার যথার্থ লক্ষ্য, প্রকৃত প্রার্থনীয় দখের অনুধাবন না করিয়া, ভাহার যথার্থ

তথ্য জিজ্ঞাসা না করিয়া বুদ্ধি-রুদ্ধি ও ইন্দ্রিয়-প্রবৃত্তি সমুদায় নানা প্রকার সুখ-সামগ্রী সংগ্রহ করিতে ধাবিত হয়। কিন্তু পর্বত সমান ধন সম্পদ, সমুদ্র সমান যশো মান আহরণ করিয়াও আত্মার তুফি-সাধন করিতে—আত্মার সুখ-স্পৃহা চরিতার্থ ক-রিতে সমর্থ হয় না।

জলৌকা যেমন শোণিত-প্রয়াদে একটি তৃণ পরিত্যাগ করিয়া আবার তৃণান্তর আপ্রায় করিবার জন্য ব্যন্ত সমস্ত হইয়া মুখবিস্তার করিতে থাকে, মানব-ছাদয়ও সেই
কাপ সেই আন্তরিক ছনিবার্য্য তৃষ্ণায় আকুল
হইয়া সেই প্রেম-স্বক্রপ রস-স্বক্রপের সমীপাবর্ত্তী হইবার জন্যই—সেই তৃপ্তি সরোবরের
শান্তি সুধা পান করিবার উদ্দেশে নানা
বিব্রেরই প্রতি ধাবিত হয়। কিন্তু কুত্রাপি
কোন পার্থিব বিষয়ে সেই দেব-ছুর্ল্ভ আনন্দ
লাভ করিতে পারে না। কিছুতেই আর
যথার্থ তৃপ্তি, প্রক্রত শান্তি উপভোগ করিতে
সমর্থ হয় না।

দেখ, আমরা কেমন অন্ধ অচেতন জীব!
আমরা দেখিতেছি যে, যে ধন-তৃষ্ণার অন্ত
নাই যে বিষয় বিজ উপার্জন জনিত ব্যাকুলভার শেষ নাই, যাহার দ্বারা চিরজীবন
সুখ স্বচ্ছদে অতিবাহিত হইবারও প্রত্যাশা
নাই, যাহার বিনিময়ে অক্ষয়-শান্তি, বিমলআজ-প্রসাদ লক হইবারও সম্ভাবনা নাই,
আমরা তাহারই জন্য সর্বক্ষণ ব্যতিব্যস্ত
রহিয়াছি, নদ নদী, সিকুসাগর, পর্বত প্রাভর উল্লেজন করিয়া দেশ দেশান্তর পর্যাটন
করিতেছি, ভাহারই অর্জন উপার্জন বিষয়ে
ব্যাপৃত থাকিয়া আজ-জ্ঞান খ্ন্য হইয়া জড়পিণ্ডের ন্যায় কর্ম-ভূষিতে ঘূর্ণিত হইতেছি।

আমরা বাহিরের পদার্থ হইতে যত প্রতা-রিভ হইতেছি, তত দুরস্থ পদার্থের প্রতি-ধাবিত হইরা আরো হতাশ ও প্রবঞ্জি

হইতেছি: তথার নিকটের বস্ততে দৃষ্টিপাত कति ना. चारता पुत्र पूर्वाचरत यारेवात कना वाकिन हरेटिहि। दूरह निर्जीव अफ भना-र्थित मरधारे हिडमरक-भागरक अस्वर्ग করিতেছি, কিন্তু শরীরের মধ্যস্থিত সচেতন আবার অভান্তরে প্রাণের প্রাণকে উপলব্ধি করিতে চেন্টা করি না। আমরা মেঘের भ्डर्न (नर्वित्रा क्यार्थाई जनत्तर जनुमक्रान করিতে আকাশ পথে উত্তীন হইতেছি, কিন্তু इत्तर-कन्तर इरेटि य चिवास प्रतस অনল শিখা নিৰ্গত হইতেছে, তাহা প্ৰত্যক দেধিয়াও তাহার অভ্যন্তরে অগ্নির অন্তিত্ব অনুত্র করি না। আখরা জল-স্রোতে কুদ্র বালুকারেণুর শুভ্র জ্যোতি দেখিয়া রজত-ভ্রমে তাছারই পশ্চাৎ ধাবিত হইতেছি, কিন্তু আত্মা ৰূপ সুগভীর আকরে "হিরশ্বয়ে পরে कारव " य अक्य अमृला-ब्रप्न मीखि পाই-ছেহেন, এক বারও তাঁহার প্রতি দৃষ্টি পাত করি না। কে আমারদিগকে এখানে থেরণ করিয়াছেন, কি জন্য আমরা প্রেরিভ হই-য়াহি, কোন্ অমূল্য ধন লাভের জন্যই বা দিবারাত্র হৃদয়-ভূমিতে আশানল প্রস্থলিত হুইতেছে, একবার তাহার আলোচনা করি না।

হয় তো মণি মাণিক্য-খচিত কাঞ্চন সিংছা-गटनरे चाद्यारन कतिएक भारत, यनि छारात নিতাত্তই ছুৰ্গতি হয়, সুখদ ভোজন পানে বঞ্জিত হইক্স ভিকা-লক্ষ শাকাম ভক্তণেই. मिनशां कतिए इत्र। এই পাर्शिय धन সম্পদের উন্নতি অবন্তি ধারা মনুষ্যের **जात कि अधिक महाचि ७ इगीकि व्हेट**क किंदु य अभूना अक्य धन. পণ্ডিত বর্বর, দরিক্র সম্রাট,—দেব মনুষ্য मकल्लब्रहे अरब्रोजन, यांशेत जना मकल्लहे আকুল ও অভির হইয়া রহিয়াছে, সেই অ-মৃত-ধনের ক্ষতি লাভের আলেক্সা করিতে चाक वर्ष-(भव-निवास चामवा नकरल वर्षात्व मिमालिक रहेशाहि। या धन लक्क रहेल मनुषा मर्खा-कीव श्रेशा (मवष मां कतिए) भारत, कुछ की है इरेग़ जुमा अवस्त्रत नश्नर्ग লাতে সমর্থ হয়, সংসার-বন্ধন হইতে বিমুক্ত হইয়া অনস্ত-কাল অনন্ত উন্নতি-পথে উপিত হইবার সামর্থ্য লাভ করে, পৃথিবীর সঙ্কীর্ণ ভাব পরিত্যাগ করিয়া ত্রিভূবন পরিপালক "পর্যেশরের সহিত কামনার সমুদায় বিষয় উপভোগ করে" এবং যে ধনে বঞ্চিত হইলে ঈশরের সহবাসের অধিকারী হইয়াও অধো-গতি লাভ করিতে হয়, মনুব্যের ন্যায় অক-সৌষ্ঠৰ প্ৰাপ্ত হইয়াও পঞ্জৰৎ জীবন যাপন করিতে হয়, সকল আশা আনন্দ-বিসর্জন দিয়া, কেবল অন্ন পানের মধ্যে মুর্ণিত হইতে रम, तारे व्यक्तम व्यमुला धर्म-धन-जिन्देत-धन লাভে আমরা কত দুর কুতকার্যা হইয়াছি; সহৎসর কাল এই ভুলোকে অবস্থান করিয়া আমারদের আত্মার উন্নতি কি অবনতি হই-ब्राट्स, बाहेन नकरल मत्नितिवन शूर्वक তাহার অনুধাবন করি। আজানুসন্ধান, আত্ম-ক্রিজ্ঞাসা ছারা আপনাপন দোবাদোষ আলোচনা করিয়া দোষ ও অপরাধের জন্য অনুতাপিত জ্বয়ে পতিতপাবনের শর্ণাগত

পদানত হইয়া তাঁহার রুপা-বারি প্রার্থনা করি। বাড় করে সরল-ছদয়ে পাপ-বিকা-রের অপনমনের জন্য তাঁহার প্রসাদ ও সাহায্য তিকা করি। সম্বংসর মধ্যে যদি কিছু ধর্ম্ম-ভাব পুণ্য-ভাব অর্জন করিয়া থাকি, এস সকলে ভজ্জন্য সর্থান্তঃকরণের সহিত তাঁহাকেই ধন্যবাদ দিয়া তাঁহার সন্ধিধানে আরো অধিকতর শুভ বুদ্ধি ও ধর্মবল প্রার্থনা করি। সেই পুত্রবংসল অকিঞ্জন-গুরু অবশাই আমারদের মনোবাঞ্ছা পূর্ণ করিবেন।

ट्र म्ब्बंब्ड नईाड्यांभी-पुरुष! তুমি আমারদিশের প্রত্যেকেরই হৃদয়ের ভাব প্রত্যক্ষ সন্দর্শন করিতেছ, তুমি আমার-দের প্রতি জনেরই আত্মার উন্নতি ও অব-নতি স্পষ্ট অবগত হইতেছ। আমরা যে জন্য ব্যাকুল হইয়া তোমার এই অবারিত দ্বারে আসিয়া উপনীত হইয়াছি, আমরা চাতকের নাায় তৃষিত পিপাসিত হইয়া যাহার জন্য কেবল তোমারই প্রতি এক দৃষ্টে চাহিয়া রহিয়াছি, তুমি তোমার সেই অভয় মলল-মূর্ত্তি আমারদিগের সলিধানে প্রকাশ ক্রিয়া সম্প্রের্ড পাপ-ভাপ-জনিত মহন্তর হইতে বিমুক্ত কর। যন্ত্রণা প্লামি হইতে আমারদের আত্মাকে নিক্ষৃতি দিয়া তোমার পবিত্র ক্রোড়ে স্থান দান কর। নব বল, নব উৎসাহ, নবানুরাগ প্রেরণ করত আমার-দের আত্মাকে ভোমার প্রতি উন্নত কর ভৌমার উপাসনায় ভোমার প্রিয়কার্য্য সাধনে **অধিকত**র উৎসাহী করিয়া আমারদিগকে তোমার মঙ্গনময় মধুময় সহবাস সূথের অধিকারী করিয়া আমারদের আত্মার তুর্নি-বার্যা-স্পৃহা চরিভার্থ কর।

**७ जकरमताविष्ठी**यश

ক্রন-বিদ্যালয়। সপ্তদশ উপদেশ। ঈশবের প্রিয় কার্যা সাধন।

"তিনি তাঁহার শরণাগত দাস হট্যা তাঁহার বিষয় কার্য্য সাধনেই তৎপর খাকেন।"

যেমন জ্ঞান-নেত্রে ঈশ্বরকে দর্শন করি-লেই হৃদয় হইতে প্রীতিরস উচ্ছালিত হয়, তেমনি তাঁহাতে হৃদয় প্রীতিমান্ হইলেই অবিচ্ছেদে ভাঁহার সহিত অবস্থান করিবার निभिड छेटमूका कि गिया थारक। इत्राप्त এই ৰূপ অকপট ব্যাকুলতা উৎপন্ন হইলেই সাধক ঈশ্বরকে প্রাপ্ত হন। মনুষ্য যভক্ষণ জাগরিত থাকেন, ততক্ষণ তাঁহার মন কোন না কোন বিষয়ে অবশ্যই সংযুক্ত হইয়া থাকে। শরীর কর্ম হইতে অবস্ত হইলেও मन এक वादत निम्ठिख इस ना। य विषद्य যে পরিমাণে অনুরাগ হর, মানুষের মন সেই পরিমাণে সেই বিষয়ের অনুসরণ করে। কোন পার্থিব বস্তু যাহাঁর অধিকতর প্রিয়, তাহাঁর চিন্তা দিবসের মধ্যে অধিক বার তাহারই প্রতি প্রধাবিত হয়। যিনি সকল পদার্থ অপেকা ঈশ্বরকে অধিক ভাল বা-দেন, তাঁহার মন ঈশবেতেই অধিক কাল সংলগ্ন হইয়া থাকে। আপনার মনের গভি পরীক্ষা করিলেই বুঝিতে পারা যায় যে, আমরা ঈশ্বরকে কেমন প্রীতি করিয়া থাকি৷ মন সহজে আপনার প্রেমাম্পদ হইতে বি-ক্তিল হইতে চায় না এবং অত্যন্ত ক্লেশ করিয়াও ভাহাকে তাঁহার প্রতি লইয়া ঘাইতে হয় না। যদি বাস্তবিক তাঁহাতে প্ৰীতি জিমারা থাকে, তবে মন সহজেই ভাছার मनी रुरेशा উঠে। विनि जेश्वत्रक कानिशा-ছেন, তাঁহাতে প্রণয় বন্ধান করিয়াছেন এবং তাঁহার মঙ্গে অবস্থান করিতেছেন, তিনিই জ্ঞানী, তিনিই ভক্ত এবং তিনিই যোগী।

ঈশ্বর-প্রীতির সহিত স্বামাদের ইন্ছার একটি আশ্চর্য্য সহস্ধ আছে। ঈশরেতে যে পরিমাণে আমাদের প্রীতি হইবে, সেই পরি-্মাণে আমাদের ইচ্ছা তাঁহার ইচ্ছার অনুগত হুইয়া কার্য্য করিতে থাকিবে। ঈশ্বর যাহাঁর যথার্থই প্রেমাম্পদ হইয়াছেন, তিনি ঈশ্বরের ইছা-স্রোতে আপনাকে নিময় করিবার নিমিত্ত সাতিশয় ব্যগ্র হইয়া থাকেন। তিনি যাহা ঈশরের অভিপ্রায় বলিয়া জানিতে পারেন, তাহাই সম্পাদন করা তাহাঁর কর্ত্তব্য হয়। তাহা সম্পন্ন করিতে পারিলেই তিমি যথেষ্ট আনন্দ অনুভব করেন। তাহা সম্পন্ন করিতে না পারিলে তাঁহার ক্ষোতের পরিসীমা থাকে না। ঈশার-প্রেমের অনুরোধে তিনি পর্বতসমান বিশ্ব বিপত্তিও পদতলে নিপীড়িত করিবার নি-মিত্ত বন্ধপরিকর হন। যাহা ভাঁহার সেই প্রেমাম্পদের অনভিপ্রেড বলিয়া তাঁহার বিশাস হয়, তাহা তিনি বিষবৎ পরিত্যাগ করেন। সমুদায় প্রাণের সহিত ঈশ্বরের অনু-করণ করাই তাঁহার উদ্দেশ্য হয়। তিনি ভাঁহাকে আপনার একমাত্র শরণ ও সুহৃৎ জানিয়া ভাঁহার শরণাগত হন এবং ভাঁহার প্ৰেম-স্বৰূপে আকৃষ্ট হইয়া আপনাকে তাঁহার দাসতত্ব নিয়োজিত করেন।

কিন্তু ঈশ্রকে জানিবার সময় আমাদের
নানাবিধ শ্রম হইতে পারে। ঈশ্রর বাস্তবিক
যে রূপ নহেন,আমরা হয়তো বুদ্ধি-দোবে তাঁহাকে সেই রূপ বলিয়া বিশাস করিয়া থাকি।
শ্রথমে ঈশ্রর সমুদার বুদ্ধি রুদ্ভির অভ্ঞাভলারে আমাদের হৃদয়ে লুকায়িত থাকেন;
পরে জ্ঞানগোচর হন; জ্ঞানগোচর হইলেই
যথন আর্রা তাঁহাকে লইয়া চিন্তা করিতে
শ্রাক্তি, সেই সময়ে তাঁহার বিষয়ে নানাবিধ
শ্রাক্তি ইইতে পারে। এই কারণে ঈশ্রনবিষ্ক্তে পরশার-বিক্তির নানা যত দেখিতে

भाउरा यात्र। याँशाता मृ**ष्टि ७ निर्मा**रणत हेक्त বিশেষ করিতে না পারিয়া সর্বঞ্জী ঈশ্ব-রকে কার্যাতও নির্মাতা বলিয়া দেখেন, ডাঁ-शरपत्र धरे सम श्रेरे जात धक्टि ज्यानक अब उरशम रज्ञ-- डीहाता डीहाटक क्रांश हरे-তে বিচ্ছিন, कार्ड़त नाता निकास ও উদাসীন বলিয়া অবধারণ করেন; ৰাক্য ও বক্তার नाति, गठि ও गस्ति नाति धरः मर्गन ७ खरोत नाम कगद ७.क्नेस्ट्रब्र त्यांग दुविएक পারেন না, এবং তাঁহার বিজ্ঞাম-হীন কর্ম-শীলতা ও তৎকর্ত্তক আমাদের সহায়তা উপ-লন্ধি করিতে পারেন না। ঈশ্রের অনু-क्रवारे श्रवम श्रूक्रवार्थ माधरनत हेशात बदर সেই অনুকরণে মনুষ্য <del>স্বভাবতই</del> প্রবৃত্ত হইয়া **এই জনা উক্তৰপ সাধকগ়**। আপনারাও সংসার হইতে বিচ্ছিন্ন হইতে চান, কর্ম ত্যাগ করিতে প্রবৃত্ত হন এবং সংসারের প্রতি বিরক্ত হইতে থাকেন। কিন্তু যাহাঁরা জানেন, ঈশের জগতের প্রাণ: তিনি अञ्ची छूठ कड़ शमार्थित मधा मिश অবিশ্রান্ত কর্ম করিতেছেন, এবং স্বাধীন আত্মা সকলের নিয়ন্তা হইয়া আমাদের সঙ্গে আছেন; সেই নির্লিপ্ত পুরুষ সংসার হইতে বিচ্ছিন্ন নহেন ও সংসারের প্রতি উদাসীনও नर्दन; প্রত্যুত সেতু-স্বৰূপ হইয়া সমু-দার ধারণ করিয়া আছেন, এবং স্বহস্তে ইহার मक्ल नकल विधान कतिरुटाइन :-- जांशास्त्र জীবন অন্য প্রকার হইয়া পাকে। অতএব ঈশ্বরকে দর্শন করিবার সময় যাহাতে ভ্রম-প্রমাদ উপস্থিত সা হয়, তত্ত্বিয়ে প্রতি সাধ-কের সতর্ক হওয়া অত্যন্ত আবশ্যক।

সমুদায় সংসার সেই দেব-দেরের মন্দির। তাহার ভক্ত এই মন্দিরকে সুসজ্জিত করিবার নিমিত্ত সাধ্যানুসারে পরিশ্রম করেন। পাপ-রূপ আবর্জনা সকল সংসারের যে যে স্থান মলিন করিয়া রাখিয়াছে, সেই সকল স্থান পরিষ্কার করিবার জন্য তিনি কোন ক্লেশকে क्रिम (बाधरे करतम मा। याशांक नमस नश-माद्र शूग-मधीत्र व्यवाद्य मक्षांत्रिक रहा, তিনি সর্ব-প্রয়েত তাহার উপায় সকল বিধান क्रिंटि बाख क्रेमा थारकन । क्र मिन अरे পৃথিবীতে অবস্থান করিবেন, তিনি তাহা গণনা করিয়া আরুংক্ষর করেন না; কিন্ত এখানে যত দিন থাকিবেন, তত দিন এখা-নকার উন্নতি সাধনেই অতিবাহিত করেন; কেন না, তিনি আপনার কৃত সার্থ ছারা সাংসারিক কার্য্যের ফলাফল পরিমাণ করেন না; প্রভাতে ওাঁহার সেই ক্ষুদ্র জীবন দারা সেই মহান্ পুরুষের উদ্দেশ্য কত দুর সম্পন্ন হইল, তাহাতেই তাঁহার একমাত্র দৃষ্টি; সং-নারের কার্য্য তিনি তাঁহার প্রিয় বন্ধুর কার্য্য বলিয়া জানেন, সুতরাং তাহা পরিত্যাগ করিয়া আলস্যে কাল ক্ষেপ তাঁহার নিতান্ত ক্লোকর হইয়া উঠে। জগতের কল্যাণ সা-धरनहे जिनि जाभनात मग्रुनात कीवन छे९-मर्ग करत्न । जैस्तर अम्बन मूर्गिक मर्ग-बुर्ग गाँहात यम मक्षत्रं कतिशा मर्जना স্বাস্থ্য ভোগ করিতেছে, আলস্য ভাঁহার ত্রিসীমায় আগমন করিতে পারে না। কি প্রকারে সেই দেব-দেবের মন্দিরশ্বরূপ এই জগৎ পরিষ্কৃত ও পরিচ্ছন থাকিবে, তাহার চিন্তাতেই তিনি আনন্দের সহিত আপনাকে নিয়োগ করেন এবং তাহার সংসাধনেই আ-পনার সমুদায় ক্ষমতা সমর্পণ করেন।

তিনি দেখেন যে, পৃথিবীতে যাবতীয় বিশৃত্বলা উপস্থিত হইতেছে, ধর্মের প্রতি অনব্ধানতাই প্রায় তৎসমুদায়ের এক মাত্র কারণ। ধর্মাধিকরণ যে জনসন্থাধে আকুল হইয়া উঠিতেছে, কারাগার-সকল যে লোকে পরিপূর্ণ হইতেছে, এবং তাহার শোক্ষনি ও বিলাপে কর্ণ বধির হইয়া যাইতেছে, ধর্মের প্রতি অনাস্থাই ইহার মূলীভূত কারণ।

মানবগণ যে পরস্পর অনিষ্ট সাধনে রভ হইয়া ঘোরতর উৎপাত উপস্থিত করিতেছে. পরনিন্দা ও পরপীড়ায় যে প্রতিসমাকই নিপীড়িত হইতেছে, পাপের স্রোভঃ এতি-পলীকেই যে পরিপ্লাবিত করিতেছে, ধর্মের প্রতি অনাস্থাই ইহার মূলীভূত কারণ। এক দেশের লোক অন্য দেশকে আক্রমণ করিয়া উৎসন্ন করিতেছে, পরস্পরের শোণিত পাত ভাহার দেবমন্দির এই পৃথিবীকে উচ্ছালিভ क्तिराज्या , धवर क्षत्रियर कृत्य मातिराज्य धक এক দেশকে গ্রাস করিয়া ফেলিতেছে, ধর্মের প্রতি অনাস্থাই ইহার মূলীভূত কারণ। অ-ভিপ্রায়ের ছুইতা, বাক্যের কুটিলতা ও কার্য্যের কদর্যাতা কেবল ধর্ম্মের প্রতি অনাস্থা হইতেই উৎপন্ন হয়। কোন স্থানে পতি-প্রাণা রমণী তাঁহার ছুর্ভি স্বামীর বিশাস-ঘাতকতায় নিতান্ত ব্যথিত হইয়া অঞ্ধারা বিসর্জন করিতেছেন; কোন স্থানে নিরীছ স্বামী তাঁহার শীলহীনা পত্নীর অসদাচরণে আকুলিত হইতেছেন, কোন স্বানে ছুর্বল यां क वनवारनत अवटल निशी फिंड इहे-তেছে, কোন স্থানে প্রস্কু ভৃত্যগণের বিশাস-ঘাতকতায় সর্বস্বাস্ত হইতেছেন; তিনি এই সমস্ত শোচনীয় ঘটনার মূলে ধর্মের অভাব নিরীক্ষণ করিয়া অভ্যন্ত ক্ষোভ প্রাপ্ত হন এবং প্রাণপণে ধর্মোন্নতি সাধনে আপ-নাকে নিয়োজিত করেন। তাঁহার প্রিয়ত-মের পবিত্র আলয় হইতে পাপের ছুর্মন্ধ पूत्रीक्रण श्रेश गांशाटण अनवत्रण भूग मधी-त्रग मक्षातिक हरेएक थात्क, काहारे काहात मर्वात्थ पनूर्वंत रहा। त्कवल हेरालांत्कत অশুভ নিবারণ করাই তাঁহার ধর্ম প্রচারের এক गांव छेटमना रह धक्त नरर, छिनि क्षेत्र-धर्गारम रव कान-क्रकृ लाख कतिहा-হেন, তদ্ধারা তিনি প্রতি আত্মার ভবিষ্যৎ গতিও নিরীকণ করিতে সমর্থ হন। সমস্ত

জনসমজি ইহ লোকে সুখ-সক্ষতা ভোগ করিয়া ঘাহাতে উপযুক্ত ৰূপে প্রস্তুত হইয়া পরলোকে প্রবেশ করিতে পারে, তাহার প্রতি ওঁ হার সমধিক দৃষ্টি নিয়োজিত হয়। তিনি জানেন যে, সকল মনুষাই তাঁহার পর্মপিতার সন্তান: অতএব তিনি স্বয়ং **জম্ম**র-প্রে**থের আস্থাদ** পাইয়া যে বিমল আনন্দ ভোগ করিতেছেন, যাহাতে সমুদায় নর-নারী সেই আনন্দসাগরে অবগাহন করেন, ভাহার নিমিত্ত তিনি অকুত্রিম যত্ন সহকারে চেফা করিতে থাকেন। ভাঁহার প্রেমাম্পদ ঈশ্বর যেমন কাহাকেও পরিভ্যাগ করেন না, তিনিও সেই ৰূপ পাপী ও পুণ্যাত্মা, সুশীল ও ছর্ত্ত, সকলের বৃদ্ধু হইয়। সকলের নিমিত্তই হিত চিন্তা শুভান-ষ্ঠান করত জীবনকাল অতিবাহিত করেন। তিনি স্বয়ং যেমন ঈশবের শরণাগত হইয়া চরিতার্থ হইয়াছেন, সেই ৰূপ আর সকল-কেও যত ক্ষণ তাঁহার প্রিয়তম বন্ধুর সহিত সন্মিলিত করিতে না পারেন, তত কণ তাঁহার ধর্ম-প্রচার উদুযাপিত হয় না। তিনি কেবল মতের পরিবর্ত্তন করিয়াই পরিত্ঞ হন না, যত কণ জনসমাজের ধর্মনীতি ভ্রতিষ্ঠ ও বলিষ্ঠ না হয়, যত ক্ষণ মনুষ্যের চরিত্র হইতে ধর্মজ্যোতি বিকীর্ণ না হয়, তত ক্ষণ তাঁহার ধর্ম-প্রচার উদ্যাপিত হয় না।

তিনি দেখেন যে, জানের অভাবে
আনেকে সত্য হইতে পরিভ্রমী হইরা প্রেমাশ্বদ ঈশরের অভিপ্রার উল্লেখন করিতেছে।
যিনি ঈশর, তাঁহাকে পরিত্যাগ করিরাছে;
বাহা বাস্তবিক ধর্ম, তাহা পরিত্যক্ত হইরাছে, এবং যাহা ঘণার্থই উন্নতি, তাহা
আবজ্ঞাত হইরা আছে; প্রত্যুত লোকে
ইশর-রুদ্ধিতে অনীশরের আরাধনা করিতেছে, অফল কর্মের অনুষ্ঠানেই সমস্ত আয়ুয়্ব
কেশণ করিতেছে এবং এক স্থানে অবস্থিত

হইয়াই আপনাকে উন্নত বোধ করিতেছে: যেখানে প্রীতি করা উচিত, দেখানে দ্বেষ করিতেছে, যেখানে তক্তি করা উচিত, সে-খানে ঘূণা করিতেছে, যেখানে অনুরাগ হওয়া আবশ্যক, তাহার উপর বিরাগ প্রদ-র্শন করিতেছে; আত্মকৃত তৃষ্ণধ্যের কল ঈশবের বিভয়না ভাবিয়া অনর্থক উদ্বিগ্ন इटेट्टर्स, व्यक्तिक श्राह्म श्राह्म महत्त्वर আপনাদের শুভাশুভের নিয়ন্তা ভাবিয়া রুখা বিব্রত হইতেছে, এরং লভ কামনাতে উত্তেজিত হইয়া উন্নত আশা ও মহানু উদ্দেশ্য পরিতাগ করি-তেছে: আত্ম-নিগ্ৰহ দারা আত্মাকে উত্তপ্ত করাই তপদ্যার অর্থ, কিন্তু তাহার পরিবর্ত্তে শরীরকে পরিতাপিত করিয়া অনর্থক ক্লেশ ভোগ করিতেছে: ঈশ্বর অনন্ত-স্থূরূপ, জাঁ-হাকে পরিমিত করিতেছে: তিনি সকলের শ্রষ্টা, তাঁহাকে স্বহস্তে নির্মাণ করিতেছে: তিনি সকলের প্রাণ-দাতা, মর্ত্ত্য জীব মনুষ্য তাঁহার প্রাণ দান করিতেছে: তিনি জন্ম হীন, তাঁহাকে মনুষ্য গর্ম্ভে, হা ! ইতর জম্ভর উদরেও উৎপন্ন ভাবিতেছে; তিনি সর্ব-ব্যাপী, ভাহাঁকে স্থান বিশেষে বন্ধ করিভেছে: তিনি প্রেমের আম্পদ, ওাঁহাকে ভয়ের আ-न्त्राम क्रिक्टिंग भासिनिक्चन चर्गिक বিলাস-ভূমি করিতেছে। এই সমস্ত ভ্রম হইতে যে সকল কর্মানুষ্ঠান প্রবর্ত্তিত হয় ; তাহা যে নানা ছুঃখের প্রস্থৃতি-স্বরূপ হইবে ইহা বলা বাহুল্য মাত্র। জ্ঞানের অভাবে এমন নহে, অন্যান্য কার্য্যেও রছবিধ বিশৃ-चना मः चिंछ स्टेटिह । कि मंत्रीत त्रका, কি পরিবার প্রতিপালন, কি সামাজিক कार्या, खार्मित चलाव मकल विवरमुत्रहे ঘোরতর অন্তরায় স্বৰূপ। ভৌতিক জগৎ. मनुषामयाक ও क्रेबंत करे जित्मत महिन्हरे

आंबारमद अनुझ अनीत मक्क विमामान আছে; অনন্ত কালের বন্ধু ঈশর ইং কালে ভৌতিক জগৎ ও মনুব্যসমাজের উপর জগতের বছতর কল্যাণ গচ্ছিত করিয়া রাখি-য়াছেন, কিন্তু মনুবা জ্ঞানের অভাবে সেই क्लारिशत वह अश्रम विश्व उँ० शामन कति-ভেছে। দেখ, যে সকল ভৌতিক পদার্থে मनूत्वात इन्ड नारे, जोशंट अभेदतत रेव्हा दव-मन जवार्य करा मुक्त इंटेरटरह ! शृथिवी (क-মন নির্মিত রূপে আপনার পথে পরিভ্রমণ করিতেছে। সূর্য্য কেমন যথোচিত সময়ে প্রতিদিন আমাদের সহিত সাক্ষাৎকার করে। দিবা রাত্রি, মেঘ বিছাৎ ও এই তারা কেমন অবাধে ঈশ্বরের ইচ্ছা সম্পন্ন করিতেছে। ঈশ্বরের ভক্ত সর্বত্রই তাঁহার ইচ্ছাকে এই ৰূপ জয়যুক্ত দেখিতে অভিলাষ করেন এবং সকল পদার্থ হইতেই কল্যাণ-রস নিষ্ক,মণ করিবার নিমিত্ত আগ্রহান্বিত হন। তিনি জনসমাজের অজ্ঞান ও মুর্থতাকে এই শুত কামনার বিশ্ব-স্থৰপ দেখিয়া জ্ঞানা-লোক প্রচারে যত্ন করিতে থাকেন। যাহাতে मञ्जूषाय मञ्चा अस्थातत मञा अक्षा, मधूमस ধর্ম, সামাজিক নীতি, শারীরিক বিধান ও ভৌতিক নিয়ম অবগত হইয়া সুশৃষ্থল ৰূপে ইং লোকের কার্য্য সকল সুসম্পন্ন করিয়া পর লোকে উপযুক্ত বেশে উপনীত হইতে পারেন, তাহার নিমিত্ত তিনি সাধ্যাৰুসারে সর্ব্বত্র সত্য জ্ঞান প্রচার করিতে থাকেন।

যাহারা মোহ বশতং মঞ্চলম্বরূপ পরমেশরের মঞ্চলময় অতিপ্রায় উল্লেখন করিয়া
ছর্বিবহ ছরবস্থা তোগ করিতেছে, তিনি
তাহাদিগের বিপদ্ ও ছংখরাশি মোচন
করিবার নিমিত্ত অকপট মমতার সহিত অগ্রসর হন। "যাহারা ঈশরের নিয়ম লজ্মন
করিয়াছে, ঈশর তাহাদিগকে দণ্ড দিতেছেন, অভগ্রব তাহার প্রতি মনুবার দ্য়া

কর! অনুচিত " তিনি এই কুতর্কমূলক যুক্তিকে পদতলে দলিত করিয়া ভাঁহার প্রেমাস্পদের উদার প্রীতির সহিত পরামর্শ করেন। দরিছের পর্ণকূটীর, রোগীর মলিন শ্যা ও শোকাতুরের নির্ক্তন গৃহ গাঁচার ভক্তিভাজন পরমেশরের পরিচারণা-স্থান। দীন হীনের প্রার্থনা বাক্য, রোগীর করুণ স্বর ও শোকার্ত্তের ক্রন্সনের অভ্যস্তরে লীন হইর। ঈশ্বের মধুময় ধনি সমর্থদিগকে নিরন্তর আহ্বান করিতেছে, ঈশবের ভক্ত তাহা প্রবণ করিয়া কখনই নিশ্চিন্ত থাকিতে পারেন না। ছংখী ও ছংখিনীদিগের জন্তা-ধারা তাঁহার আলস্য ও বিলাস-স্পৃহা চুর্ণ করিয়া দেয়। তাঁহার শারীরিক ও মানসিক শক্তি যত ক্ষণ তাহাদিগের উপকার সাধনে পরিআভ না হয়, তত কণ তিনি নিরস্ত रम मा।

রাজনীতি, রুষি, বাণিজ্য ও শিণ্প প্রভৃতি যে সকল বিষয়ের উপর মনুষ্য সমাজের কল্যাণ নির্ভর করিতেছে, ঈশবের ভক্ত তথ সমুদায়েরই উৎকর্ষ সাধনে মনোনিবেশ করিয়া থাকেন। ঈশবের ইচ্ছা সম্পন্ন করাই তাঁহার উদ্দেশ্য; তিনি জানেন যে সেই ইচ্ছা কেবল মঙ্গলময় এবং জগতের মঙ্গল কার্য্যই সেই মঙ্গলময় ইচ্ছার পরিচায়ক; অভএব তিনি যাহা জগতের—মনুষ্যসমাজের কল্যাণক্র দেখিতে পান, ভাহাই তাঁহার প্রেমাম্পন্দের প্রিয় কার্য্য বলিয়া অবধারণ করেন এবং সাধ্যানুসারে ভাহারই অনুষ্ঠান করিয়া থাকেন।

ঈশবের এ ৰূপ অভিপ্রায় নহে যে, এক জনকেই জগতের সমুদায় কার্য্য সম্পাদন করিতে হইবে। যেমন এক জনের মুখনী অন্যের মুখলীতে লীন হইয়া যায় না, সেই ৰূপ এক জনের মন অন্যের মনের সহিত সম্পূর্ণ একীভূত হয় না। দকল শরীরের

উপাদাম একই প্রকার হইলেও যেমন ভিন্ন ভিন্ন শরীরে বিশেষ বিশেষ ভিন্নতা লক্ষিত इहेग्रा थाटक, टम्हे बार्श अस्टाइत निर्मान-की-শলে একই উপাদানে নির্দিত ভিন্ন ভিন্ন আত্মা সকল পরস্পর ভিন্ন ভিন্ন ভাব প্রক-টিভ করিতেছে। ইয়া দারাই তাঁহার এই অতিপ্রায় বাস্ত্র হইতেছে যে, সকলে তাঁহার ভিন্ন ভিন্ন কার্য্যে নিযুক্ত হইয়া তাঁহার উ-**रम**ना मन्नामन कतिए थाकिरव। এই বিচিত্রতাই তাঁহার সংসারের পৌন্দর্যা। কেহ আচার্য্য হইয়া জনসমাজের ধর্মোল্লতি সং-সাধন করিতেছেন, কেহ রাজা হইয়া প্রজা সমূহের শান্তি রক্ষা করিতেছেন, কেহ বণিকু হইয়া নানা দেশের দ্রব্যজাত স্থানে স্থানে প-রিবেশন করিতেছেন, কেহ রুষক হইয়া ঈশ্ব-রের পুত্র ও কন্যাগণের নিমিত্ত অন্ন ব্যঞ্জন প্রস্তুত করিতেছেন এবং কেহ শিণ্পী হইয়া প্রয়োজনোপযোগী নানা দ্রব্য নির্দ্ধাণ করি-তেছেন, এই সমস্ত ভিন্ন ভিন্ন লোকের ভিন্ন ভিন্ন কার্য্য দারা ঈশবের একই উদ্দেশ্য সম্পন্ন হইতেছে—জগতের মঙ্গল হইতেছে। যদি পৃথিবীতে এমন কোন উচ্চ স্থান থাকিত যে তথায় আরোহণ করিলে সমস্ত পৃথিবীর সমস্ত কার্য্য অবাধে নয়ন গোচর হইতে পারে, তাহা হইলে এই বিচিত্রতা ও এই বিচিত্রতা দ্বারা এক মহানু উদ্দেশ্যের সম্পা-দন যুগপৎ সন্দর্শন করিয়া বিস্ময়সাগরে নিমগ্ল হইতে হইত। কোন নাট্যশালায় প্রবেশ করিয়া দেখ, নাটকের প্রথম অঙ্ক ক্ষাধি শেষ আৰু পৰ্য্যন্ত সমস্ত ভাগ কেবল বিচিত্রতাতেই পরিপূর্ণ দেখিবে; সেই বিচি-ত্রতাই অভিনয়ের সৌন্দর্য্য ও সূত্রধারের **अटब्स्मा मण्णापन क्रिट्टिश् । এই সংসার-**ৰূপ শাট্যশালায় সেই এক মাত্র স্থারের স্বাদেশে—যে অক্ষয় অভিনয়-ক্রিয়া সম্পন্ন रहेर्क्टर, कान् कवि हेरात मोमर्गा ७

মাধুর্য্য বর্ণনা করিয়া শেষ করিতে পারে ?
ইহার বিচিত্রতা কে বা গণনা করিতে পারে ?
তিনি যাহাকে যে ভূমিকা প্রদান করিয়াছেন, স্থ্রত্বধারের প্রসন্মতা লক্ষ্য করিয়া ভিনি
তাহারই কার্য্য সুসম্পন্ন করিতে থাকুন।
কার্য্য ভেদে তাহার প্রসন্মতার ইতর বিশেষ
হয় না; কর্ভব্য মাত্রেই তাহার কার্য্য। প্রজ্ঞাগণের শান্তি স্থাপন অবধি সামান্য স্থচীকর্ম
পর্যান্ত জগতের কল্যাণকর সমস্ত কার্য্যই
তাহার প্রিয় কার্য্য। তন্মধ্যে তিনি যাহাকে
যে কর্ম করিবার ক্ষমত। প্রদান করিয়াছেন,
তাহাকে সেই কার্য্য সম্পন্ন করিতে হইবে; তাহার অন্যথা করাই তাহার আদেশ
লক্ষন করা।

যাঁহার যে ৰূপ সাধ্য, তিনি তদনুসারে मः मारतत यकल माधम कतिरवस, देश**हें आक** ধর্মের নিয়ম। যিনি সহস্র মুদ্রার অধিপতি, তিনি যদি দরিদ্রগণের সাহায্যার্থ পঞ্চশত মুদ্রা দান করেন, এবং শত মুদ্রার অধিপতি যদি পঞ্চাশৎ মুদ্রা দেন, ঈশ্বরের দৃষ্টিতে উভয়ই সমান। সকল কার্য্যের সময়েই ঈশ্বর এই ৰূপ বিচার করেন। ঈশ্বরের কোন কার্য্য আমা হইতে কত দুর অনুষ্ঠিত হইল, ইহা গণনা করিয়া কেহ যেন অভি-मानी ना इन: आमि आमात ममुमाय कम्छा অকপটে ঈশবের কার্য্যে নিয়োগ করিতেছি कि ना, हेरात आत्मालन क्तारे आधारमत শ্রেরকর। তাঁহার কার্য্যের শেষ নাই: কিন্তু व्यागारमत भक्तिरे ठीरात कार्या निःरमव কবা উচিত।

অনবরত প্রবাহিত কার্য্য-স্রোক্ত ভাসমান হইয়া মনুষ্য অনেক সময় আত্ম-বিস্মৃত হইয়া পড়েন। ঈশরের প্রসন্নতা যে কার্য্যের একমাত্র লক্ষ্য হওয়া উচিত, তাহার সহিত মনুষ্যের ক্ষা ক্ষা কামনা সকল জড়িত হইয়া তাহাকে অপবিত্র করে। অত্তব সাৰধান হইয়া কর্মকেত্রে অবভরণ কর;
ঈশবের সংসার হইতে ঈশবের অধিকার
বিলুপ্ত করিবার চেকী করিও না। ঈশবের
প্রসন্নতাই একমাত্র লক্ষ্য, সেই প্রসন্নতা
আমাদের আত্মাতে আত্ম প্রসাদ রূপে আবির্ভূত হয়। তাহাই ভক্তের ভৃতি, তাহাই
ভক্তের পুরস্কার।

# সামবেদীয় কর্মান্মপ্তানপদ্ধতি।

खरामत छ छ अभीछ।

मर्द्धकर्म माधातन डेमीहा कर्म।

নবগ্ৰহ হোম।

২৮৮ সংখ্যার ২০ পৃষ্ঠার পর।

র্হম্পতে পরিদীয়া রথেন রক্ষোহামিত্র।
অপবাধমানঃ প্রভঞ্জৎসেনাঃ প্রস্থানা যুধা
জন্মস্মাকমেধ্যবিতা রথানাং স্বাহা।

হে 'বৃহস্পতে' ছং 'র্থেন' 'পরিদীযাঃ' পর্যাট 'অনি-বান্' শত্রু 'অপবাধনানঃ' কিন্তু ত ছ্বুং 'রকোহা' রাক্ষস-কন্তা তথা প্রভন্তাং বিষদ্ধং কুর্মিতাং দৈত্যানাং 'নেনাঃ' দৈন্যানি 'যুধঃ' যুক্ষেন 'প্রেয়ণো' প্রক্ষিপ তথা 'ক্যন্' দন্ অধাদ্যোধান্ 'ক্ষাকং' 'র্থানাং' 'অবিতা' 'এধি' গাল-কোন্তব। ইতি দেবৈভ্যতে।

হে বৃহত্পতি ! তুমি রাজসগণের হস্তা, তুমি
লক্তগণকে বিনাশ করত রথারোহণ পূর্বক পর্যাটন
কর, তুমি যুদ্ধে বিমর্ফকারী দৈত্য সৈন্য পরাজয়
কর এবং জয়যুক্ত হইয়া আমাদের রথ-সকল ব্রক্ষা
কর।

শুক্র স্থে সন্যদ্যজত তে সন্ধিবুরপে সহনী দ্যৌরিবাসি। বিশাহি মায়া অব্দি স্থাবন্ তদ্রা তে পুষ্টিই রাতিরস্ক স্থাহা।১

১ এইটি ঋষেদ সংহিতার বর্ত মণ্ডলের পঞ্চম অনুবাকের নগদ স্থান্ধের অধন ঋক্,ভরবাক ঋবি ত্রিউ পৃত্যত ও পূবা দেবতা। বাজ্ঞবলকা স্থৃতিতে এ ঋক্টি গৃহীত হয় নাই। ইহার পরিবর্তে অন্য ঋক্ আছে। এই ঋকে কেবল একটি উক্লে সম্ম আছে। উদ্ভিদ্ধ আছে। আছি আজ্ল আছহর উপযোগী আর কোন শক্ষ নাই। উক্লে সম্পের বৌশিক অর্থ শুল্ল। নহর্ষি বাক্ষ প্রীয় নিক্লক প্রন্থে লিখিয়াছেন—

खंबर ८७ जनाद, स्ताहिलर ८७ जनाद; बस्तीवर ८७ जनाद जबसीहर ८७ जनाद हैंडि वा; विवस्तरण कहनी;

रह 'कहती' युवार 'खंकर' 'यकणर' खंकार्क्रमर अधि करिकद्रवकारम्भभक्षकः। कार्याद्रत्कार्यस् द्व प्रधारम् '(ज' जर चारः 'चानाब' चर्चारतक्रमधीवृक्कपाद जर्था (इ পृथम् '(उ' उर काः) 'कामाद क्रमाद्रोधमकावृक्षपाद। व्यवर छोतः। यन्त्रिप्रह्मि चर्थातीम् काकारक म कञ्च श्रृष्ठाः यञ्ज পুষা ন তত্র কথাবান্। খক্তঃ পুনক্তমতোপার্চ্চতে এক-ক্ষিরেবাছনি অধাবতা সহ প্রক্রোহর্চ্যতে। অপরক্ষিন্ পূসা সচেতি। অতথ্য হে অহনী 'বিষুদ্ধপে' নানারপধারিণী। एकम जिनवराग्टधा बाटम चाटकाः नत्वाधन भूकिक चारबं-শোগং। তথা হে 'বধাবন্' বধয়া আদ্ধ কর্মোপলক্ষ্যতে না যস্যান্তি স সম্ব ধ্যুতে হে প্ৰান্ধদেব হে সূৰ্য্য ইতি যাবৎ ष्ठः प्रातिवानि चाकान देव व्यानकानिः दि वना व्यविधाः 'मायाः' 'कार्यन' व्यविमाध्यक्षां नश्मात्रमा मायाक्रभन्थः জগত্রপামাধা গোপাবসি। আদিত্যাজ্জাযতে রুক্টিবুক্টে-রমং ততঃপ্রজা ইতি ফুডেঃ কুর্যাত্রর ক্রগতঃ পালয়িতা তথা হে 'পুষন্' 'ইহ' ৰজেঃ 'ভজা' তাভঞালা 'রাডিঃ' আনাশী-की मज़ भर '८७' जर मानर 'बाक्य'। स्वी भूव खेळानायम्-কীর্ত্তনাৎ শুক্রার্জনেপ্যুপযুক্তা ঋগিয়ং।

কর্মণা দেয়ীরিবাসি; সর্কাণি চ প্রাক্ষানানি জ্বনসি; জন্মবন।মাধবাচার্য্য ধৃত।

হে পুৰা ভোমার বিসদৃশ দুটি দিম—একটি শুক্ল আর একটি লোহিত অথবা একটি যজীয় আরে একটি আয়েজনীয় তুমি কার্য্যে কুর্যোর ন্যায়; হে আয়েৰন্! তুমি সমুদায় প্রজ্ঞান রক্ষা করিতেছ।

মাধবাচার্য্য এই নিক্লক ভাবলম্বন করিয়া এই জার্থ করিয়াছেন।

হে 'পুষন্' তে 'তব 'শুক্রং', শুক্ল বর্ণং 'জান্তং' এकः अरु: अर्वे रामदाजाकः। उधाः (७ ' उर्व मश्रक्ति 'यक्रफर' यक्रिवज नक्रफिक्द्ररन वर्फरफ बक्रमी यर---ध्यका-শেৰ সংগ্ৰমীয়ং ভাতঃ কুক্সৰ্ং 'ভাৰাৰ,' একং আহঃ ভবতি রাত্র্যাখ্যং। ইখং বিষুক্তণে শুক্লভ্ৰতন্ম নানা क़र्ल अहमी उर महिमा निजारणाट । यथा दह भूतम् चनीयर 'अंगाद' अकर ज़लर स्टब्स् ' निर्मलर मिवन-(मार्गश्यापकर चुमीसर 'स्वार' अवर ज्ञानर 'वक्कर' (करकर यक्षनीयर न क्षकांभकर द्वारतक्रदशांतकर व्यवकार 'वियुक्तरश' বিষম রূপে 'আহ্মী' আহ্দ্ড রাত্রিশ্চ ভবতঃ। আহোরাত্রবো-নির্মাণে ভূর্য্যএব কর্তা কথমস্য প্রসন্ধিরিতি ভত্রাছ 'মেট্রা-রিবাসি' যথা দ্যৌরাদিত্যঃ প্রকাশযিতা তথা ত্বং প্রকাশ-কোহসি। কৃত ইভাত আহ হে 'বধাবঃ' (মাধরাচার্য্যতে 'खधारम्' शार्ठ नटक) जाबरम् भूषम् 'तिचाः नव्यीः' गांबीः' প্রজাঃ 'হি' যত্মাৎ করণাৎ 'অবলি' রক্ষলি অভঃকার্ণাৎ ত্বং সূৰ্য্যাইৰ জনসি ইতাৰ্থঃ। ভাতুশদ্য '৫ড' ডৰ 'জক্লা' क्नार्गानी 'ब्रांजिश' जांनर 'हेंक' अन्त्राञ्च 'अवध् ।

হে পুৰা তোমার দিন ও রাত্রিরণ সৃষ্টি দিবল বিচিত্র
অথবা পরস্পার বিসভূপ; একটি শুক্তা করাঁও শুক্তবর্ধ, আর
একটি যক্ত অর্থাও কুফবর্ধ; ভূমি কুর্য্যের ন্যায় প্রকাশক
কেন না ভূমি সমুলায় প্রজ্ঞা রক্ষা করিতেছ; ভূমি প্রামারিগতে শুক্তপার আন্টির্জ্ঞার প্রদান কর।

दिश्वधान्। छोत्रेति कर्कनात मित्न श्वा देवरेकेति कर्कना इत्र मी; देव श्वा। देवरे क्रम देक्केति श्रेकोतिवरमेक वर्षावारमञ्ज कर्कना देव मा। क्रिकेट इत्र मृद्धक श्वाधानात काल। द्वाधानान्। क्रम कार्कात कात्राधनात काल। द्वाधानान्। क्रम कार्कारकात कात्राधनात काल। द्वाधानान्। क्रम कार्कारकात कात्राधनात काल। द्वाधानान्। क्रम कार्कारका कात्राधनात काल। द्वाधानान्। क्रम कार्कारका कात्राधनात काल। द्वाधानान्। क्रम कार्कारका कात्राधनात काल। क्रम विध-नेर्काति क्रका कात्रिकेछ। देव श्वा। क्रम करे वरका क्रम कार्कीवीन करेत्र।

্ৰ শক্ষা দৈৰীরতীক্ষরে শক্ষো তবন্ধ পীতয়ে শংৰোরতিশ্রবন্ধ নং শ্বাহা।

শ্বাপং 'নং' অন্মাকং 'দাং' 'কলাাণ্যং' 'ভবন্ধ' কিন্তু ডাং
'দেৰীং' দেব্যঃ দুত্যাদিবিষয়াঃ কিনৰ্থং 'অভীউয়ে' উপচৰাৰ্থং 'পীতয়ে' পানায় চ। কিন্ধ 'নং' অন্মানু 'অভিক্ৰন্ত' কিন্ত্ৰ' পাংহ্যাঃ কল্যাণসংঘোগায়। আপোহন্মাক্ৰ্পচ্যায় পানায় কল্যাণসংঘোগায় চ ভবন্ধ ইত্যাদাংসা
বাক্যাৰ্থঃ। শনিবনেন গ্ৰহত্বে পূৰ্ক্নভিবিক্ক ইডি ডন্মভোষং।

खामारमत खंडीके-निक्ति ও পাर नहें निमित्त बंबरमत्त्रका कन्नामिक्रणा श्डेन अवेश्मझरनेत निमित्त निःमृत शहरू थाकून।

ক্যা নন্দিত্র আভূবদূতী সদার্ধঃ স্থা ক্যা সচিত্রা রতা স্বাহা।

'हिट्य' हवनकंपनि व्यट्योक्सक हैका क्या 'छडी' छडा।'
टक्क वर्जरन 'नाः' काषाकर 'नमाद्धः' नमा वृक्तिकाती
'बाकूरल' क्या 'क्या' ह 'बादूका' किएया 'हिट्य' नाः 'नथा'
मिक्रर बाकूरल किक्कुक्सा बादूका 'निहिचेसा' नोजिनासकर्या-वर्जा नहीं कि कंपिनासीय वर्ज हैके ट्रिनायसर्वः नोजिनास-क्षियका दक्क वर्जरन क्या वा क्रियमा नाहिनाका हटका-स्वायक दृष्टिकाही नथा ह क्यांनिक क्षाचा वाकार्थाः। स्था

› এই শক্টি শগ্ৰিকু ভউ জল-দেৰভাৱ পক্ষে অৰ্থ করিয়া নিয়াছেন কিন্তু এই বলিয়া শনির প্রতি নিযোগ করিবাছেন যে, এই মন্ত্র নলিয়া শনি পূর্বেই এইছ পর্টেই ক্রিটিইছি ইইয়াছিলেই এই জন্য ইচা ভীহারই মন্ত্র ইন্দ্রাছে।

र बहे मक्कि बट्टब मरहिजान म्पूर्व मन्द्रांन कृतीय जानू-नेर्द्रिक वर्णन कृतक बन्द्रेश बाद मिन्द्रित मुर्जाकित विकीय किमीनेटक वृष्ट महेना बादक। है बान कि नामदान, दनवजा हेन, इक्कर भावती, करदमदान नामदान कादम बन्द्रे जान क्ष्य अविक कि कि जानिक कि कि विनिष्ट्रेत मिन्द्रेश मिन्द्रेश कि अविक् महिक विनिष्ट्रेत मिन्द्रेश मिन्द्रेश कि अविक् हैशाद्ध हेन दमया नेटक है क्या किन्द्रां मिन्नाद्रमां, बादद हैशाब बिन्नाद्रम दब बहै क्या बान नेट्रिक कि विवाद कार्जा हैशाब बिन्नाद्रम दब बहै क्या बान नेट्रिक कि विवाद कार्जा हैशाब बिन्नाद्रम दब बहै क्या बान क्या कर्याद्रिक विकाद कार्जा केविरेण वर्षर जनमृत्तिकीमाः। भूकीमहससे मौक्षेकिविक रेखि कर किरवाभावर मकः।

ইন্ত আমাদের অভ্যুদর কার্যে কি রূপ ছাতি ও কর্ম-পারিপাটা ছারা আমাদের উন্নতি প্রদ ও স্থা হইবেন ?

क्ष्र कृष्मदक्टरवं त्यां गर्या घरण-भरत त्रमुविद्धक्रोत्रथा चोश । "

दंश दिवा सकतान प्रश्नित निष्ठ निष्ठ विश्व के वि

হে কেডু । ফান-হীন ও রপ-ছীন মনুষাগণকে জান ও রপ প্রামান করত হাইত্বগণের ইছে জন্ম গ্রহণ কর।

লোকপালাদির চৌদ।

১। ভৎপরে ইক্রাদি লৌকপালগণের হোম করিবেক, যথা—

७ अहें है सर्थम नश्हिलाज क्षांत्रम मण्डलज्ञ चिलीज चानू-वारकत्र जृषीय स्टब्स्त ज्जोर कर्। विचामित्रभूत मधुम्बन्धाः हेबांद्र श्रवि.शांद्रजी हेबांद्र इत्कद्र नाम; हेळ हेबांद्र स्ववणा खाक्कात मरकात नहाम देशहरू ७ कान ८० है कियू मान चारक । माधवां हार्य। देशांत्र धरे क्षेत्र वर्ष कतिया निमारक्त, ८इ 'बर्बााः' समुखााः क्रिमाण्ड्याः शणाण वेजाशांकांकः । कियान्तर्यामिष्ठि अमृहारकः आप्तिकात्ररभाश्यमित्वः 'स्व-हिः । नाइरेक द्रमिष्ठिः अधिनिन सूरः कारेलर्ग 'नर' न-स म : कारायाः केम शमाज । काथवा स्वारेतावास मंगरम मद्रवम्भावर्षः वाष्ट्रयम् वक्ष्यव्यवस्य कृष्यां मध्याधमः क्रिप्रदेष द मही कार्डिमनर पर अक्रविश है कि खांकार। किर कु-র্মন্। 'অকেডবে' রাজৌ নিক্রাভিতৃতদ্বেশ প্রজানরহিতায় व्यागितन 'रक्कपूर कृत्म' क्यांजः क्यांकां मर कूर्वान्। व्यारभगतम वाजावसकातादेउट्यम अमेजियाकसार क्रमेविकार मेंगा-बीय व्यक्तिककात मिरोहरनम 'लिना' जलर कास्त्रियाका-मामर कुर्मम्।

এতদন্যায়ী অর্থ এই—জ্ঞানী সকল রাত্রিতে নিজ্ঞান্তিত হওঁয়াতে জ্ঞানরহিত হইয়াছিল, তাহাদিগকে জ্ঞান প্রদান করত এবং রাত্রিতে তনসাবৃত হওয়াতে সমুনায় পদার্থ ক্লপদান হইয়াছিল, তাহাদিগকে ক্লপ দান করত তাপশীল কর জালের সহিত (অথবা উহা স্থানের সহিত) উল্লেখ্য হইয়াছেন। বে মনুষ্যাপণ দেখ।

ওঁ ইক্রায় লোকপালার স্বাহা। এবং বছ্লে যমায়, নিশ্বতিযে, বরুণার, বারবে, কুবেরায়, ঈশানার।

২। এই কপ প্রত্যক্ষ দেবভাদিশের হোম করিবেক। উদকাঞ্জলিদেক।

প্রথমে কুশণিকাতে উদকাঞ্চলিসেকের যে রূপ পদ্ধতি আছে, তাহার সহিত এই উদকাঞ্চলিসেকের প্রেক্ত এই উদকাঞ্চলিসেকের প্রেক্ত এই বে, দেখানে সর্বশেষে '' দেব সরিভঃ'' ইত্যাদি মন্ত্র ছারা অগ্নিকে পর্যুক্ত করিবার বিধি আছে; এখানে সেই মন্ত্র ছারাই প্রথমে প্যুক্ত করিবেক। এবং অনা তিনটি মন্ত্রে 'অনুমনাম' (অনুমতি কর) এই পদের পরিবর্তে 'অম্বন্ধে (অনুমতি করিয়াছ) এই রূপ হইবেক।

#### ् यकातास्त्र कत्र ।

১। অনস্তর উত্তান হস্তদ্বরে আস্তীর্ণ কুশ সকল হইতে কতকগুলি কুশ লইয়া নিয়োক্ত মস্ত্র তিন বার পাঠ করিয়া ষ্ণাক্রমে সেট কুশসম্ফির অগ্র, মধ্য ও মুগ ঘৃতে নিমগ্র করিবেক।

প্রজ্ঞাপতিশ্ব বিং. বযোদেবতা (পক্ষিণো দেবতা) দর্ভতুণাত্যঞ্জনে বিনিয়োগঃ।

উ অক্তং রিহানা ব্যস্ত বয়ঃ।

'অকং' ছতাকং 'রিহানা: আবাদয়তঃ 'ব্যক্ত' ভক্ষ
যক্ত 'বয়ঃ' পক্ষিণঃ।

পক্ষী সক্ল এই ঘৃতাক্ত কুখ আবাদন করত ভোজন করন।

২। তৎপরে সেই কুশজুটিকায় জল সিঞ্ন করিয়া নিম্লিখিত ক্কুছারা অগ্লিতে নিকেপ করিবেক।

প্রকাপতিশ্ব বি অনুষ্ঠুপ্ছন্দঃ রুদ্রো-দেবতা দর্ভজুটিকাহোমে বিনিয়োগঃ।

ওঁ যাং পশ্নামধিপতী ক্লদ্ৰস্ত ন্তিচরো রুবা প-শ্নন্মাকং মা হিংসী রেতদন্ত ছতং তব স্বাহা। 'ষঃ' 'ক্লড়ঃ' পরেষাং রোদনদাতা 'পশ্নং' গবাদীনাং 'অদিশতিঃ' স্বামী 'তত্তিচরঃ' অন্তরীক্ষকঃ 'রুষা' বর্ষিত।

'অদিপতিঃ' আমী 'ডভিচরঃ' জন্তরীক্ষকঃ 'রুষ' বর্ষিতা পর্ক্তনারপঃ। হেক্তর 'জন্মাকং' 'পশুন্' মাহিংনীঃ' 'এডং' 'হুতং' 'তব 'জন্তু' জীতিয়ে ইতি শেষঃ।

অন্ধানী বৃত্তিদাতা ক্তম প্রগণের অধিপতি; হে ক্তম ! আবাদের প্রগণতে হিংসা করিও মা; ভোমার জ্ঞীতির বিষয়ি এই আহুতি দিতেছি।

#### পুৰাছতি ৷

১ অনন্তর বধারীতি মৃত্ত নামে জান্তর নামকরণ, আবাহন ও গল্প মালা ভাষুণ মালা অর্চনা করির। নিমের মন্ত্র পাঠ করির। অগ্নিতে পূর্ণাকৃতি প্রদান করিবেক।

প্রজাপতিখাধিঃ বিরাত্পাষতীক্ষা ই-ক্রোদেবতা যশকামস্য যত্ত্বীয় প্রয়োগে বিনিয়োগঃ।

ওঁ পূর্ণহোমং যশনে জুহোমি যোহদৈর জুহোতি বরমদৈর দদাতি বরং রূপে যশসা ভামি লোকে স্বাহা।

'পূর্বহোমং' 'যশদে ' ভীর্জ্যর্থং 'জুছোমি' 'ষঃ' 'জাইল্ম'
যশদে জুছোতি যশঃ কর্ত্তু 'জাইল্ম' ভোত্রে 'বরং' জাজিমজুকলং দলাতি আতোহং 'বরং' 'বৃদে' 'যশস।' 'ভামি'
'লোকে' যশখী ভবামীতার্থঃ।

যশের নিমিত পুর্ণাছতি প্রদান করি, বিনি ইহার নিমিত হোম করেন, ইনি ডাঁহাকে বর দেন, অতএব এই বর চাই আমি বেন জগতে বশ্বী হই।

#### নৃতন পুস্তক।

ক্তজ্ঞতা সহকারে স্বীকার করিতেছি যে, নিম্ন লিখিত পুস্তকগুলি আমরা প্রাপ্ত হইয়াছি।

১। আছোৎকর্ষ বিধান। শ্রীযুক্ত সারদাপ্রসাদ জ্ঞাননিধি প্রণীত: বর্জমান অর্যমাযত্ত্বে মুদ্রিত। এই প্রস্থ সুপ্রসিদ্ধ মহান্ধা।
চ্যানিঙের সেল্ফ্ কলচর নামক পুরুক্
অবলঘন করিয়া লিখিত ও ছমটি পরিক্রেদে
বিভক্ত হইয়াছে।

২। বরিশাল বর্ত সায়ৎসরিক ব্রাক্ষসমাজ।
ইহা বরিশাল ব্রাক্ষসমাজ হইতে প্রকাশিত
হইয়াছে। ইহাতে বরিশাল ব্রাক্ষসমাজের
ইতির্ভ, ও উপাচার্য্যের উপদেশ এই ত্রুইটি
বিষয় আছে।

৩। আগ্নীয় সভার সভাদিগের বিবরণ। ইহা ইংরাজী গ্রন্থ কর্ত্তার এভিসনকে আনুসর্শ করিয়া লিখিত ও কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজ যন্ত্রে মুদ্রিত হইয়াছে।

| The state of the s | The state of the s |
|--|--|
| s । 'रश्मला । हेरा जक्योनि विविध   | षाञ्च छ दिन्हा )०  |
| मङ्भरमम भूर्न माहिला। अयुक्त नेयत्रहस  | धर्मा-भिका/•   |
| कत कर्जुक वितिष्ठि ও सूचन मः क् उ यदा  | দীপ্ত-শিরার অভিবেক (১০   |
| মুদ্রিত হইয়াছে।   | ভবানীপুর ব্রহ্মবিদ্যালয়ের উপদেশ   |
| c। ि किउटिक्टामाम्स । धरे भूखक अयुक्   | अराजाशायाम् अरचा धक्य राषाम् )   |
| त्रवलाल भूरथाशाशात्र कर्ज्क शरमा अनीड  |  |
| ও স্কুল বুক প্রেসে মুদ্রিত হইয়াছে।  | वर्गमाना—व्यथम नर्था (১०   |
| ৬। স্তোত্রাইক ও সদীত, এবং শিশুর  | ব্ৰাহ্ম ব্যবহার  |
| নিতাকর্ম ও নীতিপঞ্চাশৎ। এই ছুই থানি  | इर्ताष्त्रव /०   |
| भूखक द्वियुद्ध (परीमात्र त्यन कर्ज्क तिष्ठ   | পৌডলিক প্ৰৱোধ৷ ৷০  |
| भ विकाशनी यद्य मुक्ति श्रेशारह।  | इक्ति गरिक कर्छाशनियर दम्बनाशव ककरत ८०   |
| ৭। কলিকাতা ত্রাক্ষসমাজের সংক্রিপ্ত   | उप्रतिमा व्यथम थ्यः >  |
| ইভিহাস এই পুস্তক ইংরাজীতে লিখিত  | ঐ দিভীয় খণ্ড ১৯০  |
| ও জি. পি, রায় কোম্পানি হারা মুদ্রিত   | बे ज्डोग्रयस ।००   |
| ,  | অ ডিন থও একক বাঁধান ১৪০  |
| হইয়াছে।<br>সম্প্রিকার ১০১ প্রস্তুত শিক্ত  | জীবনের উদ্দেশ্য ও তৎসাধনের উপায়   |
| ৮। অজবিলাপ। এই পুস্তক শ্রীযুক্ত শিব-   | विमक्षारस्य 🗸 🧸  |
| কুক্ ভট্টাচার্য্য কর্ভৃক কালিদাসের রঘুবংশের  | धर्माङ्क मोलिका—श्रथम छात्र >  |
| ऋल विरमस्त्र अमानुवाम। उन्निम्माक  | এ দিভীয় ভাগ ,   |
| यत्त्र भूकिण श्रेशांटह ।   | আত্মোৎকর্ষ বিধান ১০০   |
| चित्रकार अध्यापार अध्य   | मार्चारमव ,  |
| কলিকাতা ব্রাক্ষসমাজের পুস্ত-   | भर्मा हर्का  |
| কালয়স্থ বিক্রেয় পুস্তক।  | কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজের বজ্ডা ১৯০  |
| অনুষ্ঠান-পদ্ধতি ॥০   | প্রবচন সংগ্রহ /১০<br>সংগীত মুক্তাবলী ৷০  |
| ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান—বিভীয় প্রকরণ ॥০   |  |
| প্রান্তাহিক ব্রহ্মোপাসনা ১০  | विश्वना बिकामगार्थित वस्तृष्ठा । । । । । । । । । । । । । । । । । ।   |
| বন্ধার /১০   | ভবানীপুর সাধৎসরিক সমাজের বজ্জা /০  |
| व्यार्थमा धरः मनीष /•  | ব্রন্ধোপাসনা পদ্ধতি  |
| द्धाव्यतमात्मत वस्त्रा ।०'०  | উरवाधनाञ्चल  |
| রাজনারায়ণ বসুর বস্তৃতা ॥•   | ध्र कर्म   |
| সংস্কৃত ব্রাহ্মধর্ম ৷৷ ৷০  | স্তোত্তমালা  |
| ৰ ভাৎপৰ্য্য সহিত ৪০  | ধর্ম দীকা /•   |
| এ প্রথম ও বিভীয় খণ্ড একত্র ভাল  | बक्तराधन /১∙   |
| কাগজে ছাপা (লাল কাল অকরে) ১॥°<br>বাজলা বাজার্য   | সুভাৰ সঙ্গীত ৷ ৷ ৷   |
| বাজলা ব্রাহ্মধর্ম ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷  | Rs. As   |
| के के खार्श्या महिख  | Defence of Brahmoism- and  |
| আ আ ভাবস্থা নাহত . ।। ।।   | Colorian Con W. 1  |
| च्यानायककात्र न <b>च</b> छ।यद्यान ०० ०० ॥  | Selections from Vaidanta 2   |

| Hindoo Theism.   | i              |
|--|----------------|
| Theists Prayer Book  | i i            |
| Signs of the Times   | i              |
| Vaidantic Doctrines Vindica  | ted 2          |
| Doctrine of Christian  |                |
| Ressurrection  | 2              |
| Lectures on Patholgy of  |                |
| Fever  | 1 4            |
|  |                |
| কলিকাতা ব্ৰাহ্ম-সম   |                |
| ১৭৮৯ শকের কা <b>ন্ত</b> ন ও চৈত  | वे भोटनंत्र    |
| कांत्र वास विवत्र।   |                |
| আয়  |                |
| उद्दर्शियनी शिवना  | 3384/0         |
| शुक्रकानग्र  | 82970          |
| बद्धांनग्न   | 4 6 No         |
| डाक मायून  | 200            |
| ज्ञवा विक्य  | 5100           |
| অনিক্সিড   | . 10           |
| গৰিংড  | ० ० ५७०        |
| agrandation of the state of the |                |
| 717  | OF ANO         |
| ্ব্যন্ত্র<br>হালিক বেভন  | 300            |
| चतुरवाधिनी शकिका   | > 9 9 %        |
|  | <b>૭</b> ૨     |
| शुक्रकांगम   | 20/0           |
| ভাক মামুল  | 0 + 4/30       |
| <b>अक्टू क्</b> टूर  | 8 0 10/4       |
| च्हरतारकत वात्र  | 2811/30        |
| অবিরূপিত   | . 281/30       |
| গৰিত   | > 8            |
| मान्स्य क  | A so so so sho |
| *  | 489100         |
| win 9 + 9  | / 0            |
| श्रीकाह दिख ७७७।   | •              |
|  | 96970          |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·  | * 8 9 110      |
| বিভ  | 208190         |
| की विरम  | खनाय ठाकूत।    |

| २१४३ मेर्ट्स्य कार्डन खरेडेंच मोर्ट्स |
|---------------------------------------|
| मार्टनंत्र कांग्र राज्ञ विवेद्रन ।    |
| <b>પાં</b>                            |
| ঞ্চিজ্ঞাত দাছৎস্তিক দীন।              |

|    |                  | 4 |                   |       |
|----|------------------|---|-------------------|-------|
|    | (क्वाइस वेडू     |   |                   | 2     |
| de | बङ्गार्थ म       |   | •                 | *     |
| 46 | ब्रोमध्यांच्य दम |   | * * * * , * * , , |       |
|    |                  |   | -                 | 3 190 |
|    |                  |   | ,                 |       |

| जीगुक | विकासीयम वक्तवर्जी | • •  |     |   |
|-------|--------------------|------|-----|---|
| 46    | क्षिकंश्च रच्      | ÷ ·• | . 1 |   |
| 66    | रमञ्ज क्रेडिशियी   | •'•  | · . | > |
| 46    | अध्यक्षनाथ द्वार . |      | *   | 2 |
|       |                    | ***  |     |   |

ताश

| 4)   | ×  |                                       |                         |
|--|--|---------------------------------------|-------------------------|
| গ্রীযুক্ত ঈশানচন্দ্র বসুর<br>ফাল্ডন মানের বের্ডন . | মাৰ ও  | 2                                     | •                       |
| জায়   | 60   | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | No.                     |
| भूकीके विख   | R . 8  | 250                                   |                         |
|  | and the state of t | 2 3                                   | 8 3/20                  |
| বায়   | ****   | ২                                     | •                       |
| ৰিত ···  |  | 2 8                                   | 8 250                   |
|  | की विद्या  |                                       | केक्द्र ।<br>सन्तर्भक्त |

# বিজ্ঞাপন।

বর্ষ শেব হওয়াতে খাঁহালিগের অঞ্জিম
মূল্য নিঃশেষিত হইয়াছে, তাঁহারা বর্ত্তমান
বর্ষের নিমিত্ত অগ্রিম মূল্য প্রেরণ করিয়া
বাধিত করিবেন। অগ্রিম মূল্য অঞ্জেপ্রদান না করিলে সমাজের ক্ষতি করা হয়।

যাঁহাদিনের নিকট পত্তিকার মূল্য বাদল
মান অনাদার আছে, তাঁহারা অনুপ্রহ করিরা
বৈশার্থ মানের মধ্যে উহা পরিলোধ করিবেন। নতুবা সমাজ জ্যৈত মান অবিধি
তাঁহাদের নিকট মাজন দিয়া পত্তিকা প্রেরণে
অসমর্থ হইবেন।

হ । ১০ তত্ত্বাহিনী পত্রিকা কলিকাড়। ব্লাহ্মসনাম চইতে এডি মানে প্রকাশিত হয়। বুল্য ইয় আনা। অগ্রিম বর্ত্তিক ইয়াকুর। হুল্য ভিন্ন টাকা। ভাক নাজল বার্হিক বার আনা। সম্পাদক। সহত ১৯২৫। কলিগড়াক ১৯৯১। ২০ বৈদীক্তিক বিশ্ব



তন্তারোধনীপ্রতিকা

রত বারক্ষিদ্ধরতাদীলান্যৎ কিক্লাদীত্তিলং সর্কান্ত্রং। তদের নিতাং জ্ঞান্ত্রনতং পিবং ওতভ্রিরব্যন্ত্রক-বেরালিডীয়ং সর্ক্রাণি সর্ক্রিরত, সর্ক্ষান্ত্র সর্ক্রিৎ সর্ক্ষাক্রিমদ্ ক্রবং পূর্বসঞ্জিমমিতি। এক্স্য ডলৈয়বোপান্ত্রণ পার্ত্রিক্টমহিক্ক অভ্যাবতি। তদিন্দ্ প্রীতিত্তস্য প্রিয়ক্ষ্যিসাধনক তদুপাস্নুমের।

# ঋগেদ সংহিত।।

প্রথমণ্ডলস্য চতুর্মপানুবাকে অউমং ক্রং।
গোতম খবি: ত্রিক্তুপ্ত্ন্য: উষাদেবতা। >

১১। ব্যুণ্তী দিবো অষ্ঠা অবোধাপ স্থারং সমূতর্বিষা-তি। প্র্যিন্তী মৃত্যা যুগানি ধোষা জারস্যু চক্ষ্যা বি ভাতি।

551 'निदर' मछनः 'क्यकाम्' श्रीकाम 'दृर्वजी' दिद्जाम् क्यमा दियुकाम् कृर्याजी खेवाः 'क्यवावि' नटेयाः श्रीमछिः क्यकावि क्यांजा हृद । जनस्त्रतः 'यनातः' जेवनः
श्रीकृष्ठीट निज्ञ व्ययम् नत्रकीः निर्मार 'मन्जः' क्यनः
श्रीकृष्ठीट निज्ञ क्यक्रिंजश्रीट्रामाः 'मन्जः' क्यन्
विंक मोरेमण्ड क्यक्रिंजश्रीट्रामाः क्ष्मवृत्याजि क्यनगम्मम्
भ्राम् करवाजि 'मन्द्रा' मन्द्रामार नयक्रीनि 'युगानि'
कृष्ठाद्रजानिनि 'श्रीमनजी' व्यवमनागमनास्त्राः श्रीकर्षनि क्रियाः क्रांचाः क्रांचाः
क्रियाः 'क्रक्माः' क्यांक्रीट्रियं व्यक्राटमन 'विष्ठाजि' दिर्मादवन

১১। যে উবা আকাশের প্রান্তভাগ সকল অক্কার হইতে বিমৃক্ত করেন, সকলে তাঁ-

১ বৈশাপ দানের পত্রিকার 'লোমো দেবতা' ছলে 'উলা দেবতা' হইবে : হাকে জ্ঞাত হইরাছে। যে নিশা উষার উদয়ে স্বরং প্রস্থান করে, উষা তাহাকে অন্তর্হিত প্রদেশে দূর করিয়া দেন। ইনি মনুষ্যদিগৈর যুগচতুকীয় বিনষ্ঠ করেন। স্থ্যদেব ইহাঁকে ভার্যাত্তে শ্বীকার করিয়া-ছেন। এই উষা শ্বীয় তেজে প্রকাশিত হইয়া ধাকেন।

STERES OF

#### 2045

১২। পূশ্র চিত্রা সূভগ। প্রথানা দিস্কুর্ন কোদ উবি্যা
ব্যবৈশ্বং অমিনতী দৈবাানি
বতানি সূর্যাসা চেতি রুশিভি
দৃশ্যনা।

১২। 'হ্ৰন্ডগা' লোভনধনা 'চিত্ৰা' চাৰনীয়া পূজনীয়া উষাঃ 'পশুন' 'ন' যথা পশুন শোপালকোহরব্যে বিজ্ঞানতি তথা 'প্রথানা' তেজাংসি বিজ্ঞারয়ন্তী 'উর্ব্বিয়া' উর্ব্বালি নহতী এবজুতা সা 'ব্যক্তৈয়' সর্ব্বং জগৎ ব্যাহথাথ । তত্র দৃত্যীক্তঃ 'সিক্তুঃন কোলঃ' যথা স্যুক্তনন্তীলং উদকং নিমুদ্দেশে অচিরাদেব ব্যাথোতি তৰ্থ। কৈবোষাঃ 'হ্র্যাস্যু' 'রন্মিভিঃ' কিরবৈঃ সহ 'দৃশানা' দৃশ্যমানা সতী 'চেতি' প্রজ্ঞাতা জাসীথ। কিং কুর্বেডী 'লৈব্যানি' দেবসন্থলীনি ব্রতানি দর্শপূর্ণনাসাদীনি কর্মাণি 'অমিনতী' অহিংস্তী অনুষ্ঠানে বজনানান্ প্রবর্ত্বন্তীত্যর্থঃ। উবসঃ প্রামৃত্যানান্তরং ক্রিছোরাদীনি সর্বাণি কর্মীবিজেঃ। ব্রালি ক্র্যালি কর্মাণি ক্র্যালি ক্র্যালিক ক্র্যালিক ক্র্যালিক ক্রয়ালিক ক্র্যালিক ক্র্যালিক ক্রয়ালিক ক্

১২। শোভন-ধন-সম্পন্ধা মহতী প্ৰনীয়া উবা গোপালক যেমন অরণ্য-মধ্যে পশু সকল বিভার করে সেই রূপ আপনার তেজ সকল বিভারিত করিয়া প্রক্রেত সলিল যেমন নিম্ন দেশে ব্যাপ্ত হয়, সেই প্রকার স্বরং সমস্ত জগতে ব্যাপ্ত হইয়া থাকেন। উবা দেবী দৈব কার্য্য সকল প্রবর্ত্তিত করত স্বর্য্য কির-ণের বহিত দৃশ্যমান হইয়া পরিজ্ঞাত হন।

डिकिक् क्रमः।

2080

১৩। উষ্স্ত চিত্রমা ভরাম-ভাং বাজিনীরতি। যেন তোকং চুতন্ধং চুধানহৈ।

३७। दह 'शिक्षितीविष्ठ' वादका किन्तिकानः काहर प्रमुख्यां किया विक्रिती प्रया क्रियता यूर्क्क' केवः' केद्या क्रियत्व क्ष्याक्ष्याः 'किवः' कावतीयः 'कः' धनः 'काक्ष्यः' कावत क्ष्याक्षः। द्वात धटनम 'क्षांकः' भूतः 'क्ष्मधः' प्रश्नुतः 'के धांमदः प्रयादः चाव्यामाः। कात निक्रकः केवकितः कायनीयः धनमाक्ष्यामान्यकामचन्ति स्या भूतांश्यकः भौताः मधीमितः।

১৩। হে অন্নবতী উষা। তুমি আমাদি-গকে সেই মহার্হ ধন প্রদান কর, যদ্ধারা আমরা পুত্র পৌত্রদিগকে প্রতিপালন করিতে পারি।

>0 F 8

১৪। উধে। অদোহ গোমুত্য-শ্বাবতি বিভাবরি। ব্রেবদুম্মে বু'্যাছ সুনৃতাবতি।

১৪। হে 'কোমডি' জন্মভ্যং দাতব্যঃ গোভিঃ ঘুক্তে তথা 'জনাবভি' জলৈৰ্য কৈ 'বিভাবি কি কাৰ্যপো-পেতে 'জ্মৃতাবভি' প্ৰিয়সভান্তিক নাক্ স্কৃত। ভাঙূল্যা নাক্তা যুক্তে এবজুভে হে 'উষঃ' উষো দেবতে 'জন্য' ই-কানীং প্ৰভাত সমুয় 'ইহ' জান্মি দেশে 'জান্মে' জন্মাকং 'রেবং' ধন্মুক্তং কর্মা যথা ভবতি তথা 'ব্যুক্ত' নৈশং ওমে। নিবার্য।

১৪। হে উবা ! তুমি গো এবং সম্বযুক্ত প্রকাশশীল ও স্থাত বাক্য সম্পন্ন । একণে নিশার সাক্ষর নিবারণ কর, আমরা এই স্থানে মহা সাভ্যার দৈব কর্ম সম্পাদন করি। ১৫। যুক্ষাহি বাজিনীবৃত্যপ্ত। অদ্যার্ক। উষঃ। অধা ক্ষো বিশ্বা সৌভাগান্যা বহা ১। ৬। ২৬।

১৫। হে 'বাজিনীবডি' হবিলক্ষণাল্লবডি 'উইঃ' উহেছা দেশতে 'অকুণান্' অক্ষণবর্ণান 'অখান' অখুকুনিীয়াম গোল বিলেষান 'অদ্য' অক্ষিন কালে 'যুক্ক্বা' 'জি' বোজবৈব। হিরব্যারণে ৷ অধানজ্ঞং রখনাক্ষক্ক 'বিখ্বা' 'সৌজগানি' সর্বাণি সৌজাগ্যানি 'মঃ' অখ্যজ্ঞাং 'আবহ' আনব।

১৫। হে অরযুক্ত উষা ! তুমি একণে অরুণ বর্ণ গো সমুদয় রথে যোজিত কর। তৎপরে আমাদিগকে সমস্ত সৌভাগ্য প্রদান কর। ১। ৬। ২৬।

অশ্বিনী দেবতা।

2083

১৬। অশ্বিনা বৃতির আদা গো-মদন্রা হির্নাবে । অ্বাগ্রহণুং সমনসানি ইচ্ছতং।

ा । উषः সাস্চর্যাৎ বৃদ্ধিবাবিদ্যাদিকেন তৃচেন কুষেতে। তে 'অধিনা' অধ্যত্তী ব্যাপ্রশীলো বা দেবৌ 'দলা' শত্রুণাং উপক্ষপ্যিতারৌ 'অস্পং' অস্থাকং 'বর্জিঃ' বর্জনছেতু ভূতং গৃহং 'আ' সমস্তাৎ 'গোলং' বছাভি-র্গোন্তর্ম কুছা হিরণ্যবং' হিত রমণীয় ধনযুক্তং চ মধা স্তবন্ধি তথা 'সমস্তা' সমান মনকৌ সন্তৌ যুবাং যুজ্মনীয়ং 'র্থং' 'অর্কাক্' ক্ষর্কাচীনং অস্থানীয়ং গৃহ্মভিনুথং 'নিয়ক্তং' আবর্জনতং।

১৬। হে শক্রনাশক অশ্বযুক্ত অশিনীকুমারদর! তোমরা একমনা হইয়া সমস্তাহ
গোগণ পরির্ভ ও সুবর্ণপূর্ণ আমাদিগের
গ্রের অভিমুখে ভোমাদিগের রথ প্রেরণ
কর।

2019

১৭। বাবিত্থা শ্লোক্ষা দিবে। জ্যোভিজন ব চক্রপুঃ। আ নু উজ ং বহতম্বিনা যুবং।

১१। তে অখিনৌ 'যৌ' যুবাং'দিবঃ' দ্যুলোকাৰ 'লোকং' উপলোকনীয়ং প্ৰশংসনীয়ং 'ক্যোতিঃ' তেজঃ'ইখা' ইখং क्षणाजिः जुनुक्षनातम् क्षणाद्वतं 'ठळ्णूः' क्ष्वतं क्षि क्षणाकि सर्वन वर्षााठळ्यमावित्नो केट्टाट्व । जन्-त्वर बाटकन वर्षाविद्यो क्षाप्राण्यिकाविद्याद्वर्णाः ठज्ञम्माविद्याद केषि । क्षणा क्षणाक्षण प्रवास्मानम् एको 'सूबर' सूनार 'मस' क्षणाकार'केक्दर' रसक्षममसर 'क्षाव-रक्षर' क्षाप्रवर क्षामक्षणः ।

১৭। হে অধিনীকুমারত্বর ! তোমরা ছা-লোক হইতে প্রশংসনীয় তেজ এই দৃশ্য-মান ভাবে প্রকাশ করিয়াছ। এক্ষণে ভোমরা আমাদিগকে বলপ্রদ অন্ধ প্রদান কর।

#### 7022

# ३৮। এই দেবা মধ্যাতুবা দ্রা হির'নাবতনী। উষ্ব্রো বহস্তু, সোমপীতযো ১। ৬। ২৭।

১৮। হে উষাকালে প্রবৃদ্ধ অশ্ব সকল।
ভামরা শক্রনাশক দানাদিগুণযুক্ত সূবর্ণময় রথ সম্পন্ন সূথপ্রদ অশ্বিনীকুমারদমকে
সোমপান করিবার নিমিত্ত এই স্থানে আনয়ন রূর। ১। ৬। ২৭।

## ব্ৰাহ্মসমাজ।

নববর্ষীর ব্রাক্ষসমাজের বক্তৃতা। ব্রবিবার ১ বৈশাগ ১৭১০ শক।

অন্যকার ব্রাক্সনমাজ বুধবারের স্থাজের ন্যার নতে; জন্য বিশেষ স্থাজ; আমাদের প্রম প্রানীর পূর্ব পূরুষগণ জ্যোভিঃ শাত্তের নির্মানুনারে যে দিন অবধি নব বর্ষের গশনা জারম্ভ করিয়াছিলেন, জন্য সেই

देवनाथ बादमञ् व्यथम मिन । जन्माविध कृष्टन বংশর কেবল হিন্দু জাতির যধ্যেই পরি-शिविक रहेशा चारक। खानामयाक व्यक्त হইতে ত্রান্ধ সমতের গণনা আরম্ভ করিয়া জন্ম-ভূমির সহিত আপনার অক্ষেদ্য সম্বন্ধ প্রার্থন করিতেছেন। তদনুসারে আদা প্রভৃতি উন-**ठेपातिश्य जानामृश्यातन हरेल । "याहात** শাসনে অহো-রাত্র ভারা সহৎসর পরিবর্ত্ত হইয়া আদিতেছে; " ব্রান্দেরা " সেই জ্যো-তির জ্যোতি, অমৃত এবং সকলের আরুর কারণ " পর ত্রন্মের উপাসনায় নব বর্ষের প্রথম ভাগ উৎসর্গ করিয়া এই জন্য यज्ञलां ठत्र विदिलन, যাহাতে সম্প্র কাল কেৰল মঙ্গলেতেই অভিবাহিত হয়। ভৌতিক, শারীরিক ও আধ্যাত্মিক সমস্ত মঙ্গলই সেই সর্বাক্তিমান্ মঙ্গলস্বরূপের উপর নির্ভর করিতেছে। চিরকালই ভিনি আমাদিগের মঙ্গল বিধান করিতেছেন এবং এ বৎসরও আমাদিগের মঞ্চল বিধান ক্রি-বেন তাহার সন্দেহ নাই; কিন্তু আমরা যেন আপন দোষে সেই সমস্ত মনল লাভে বঞ্চিত না হই, তল্লিমিত্ত তাঁহার নিকট শুভ বুদ্ধি প্রার্থনা করি। যেমন বৈশাখ মাসের সাসিক সমাজ এই নব বর্ষের ত্রাহ্ম-সমাজের সহিত একীভূত হইরাছে, সেই ৰূপ আমাদের জ্ঞান ভাব ইচ্ছা ওাঁহার সহিত একীভূত হউক। কিন্তু যে ত্রাহ্মসমাজে উপ-বেশন করিয়া আজি সমৎসূরের মকল প্রার্থনা করিতেছি, হে ত্রাহ্মগণ! আপনারা দেই ব্রাক্ষসমাজের উন্নতি সাধনের কন্য বল প্রার্থনা করুন—ব্রাক্ষসমাজকে কি প্রকার উল্লভ করিয়া জগতের মঙ্গল সাধন করিবেন, তাহা আলোচনা করুন। আপনাদের সময় যুত্তই মহামূল্য হউক,ভাহা ব্রাক্ষসমাজের হিছ চিন্তার নিয়োগ করিলে অপবায়িত হইবে ना । ज्यागारमत वार्थ किसाहे कि नम्बन ज्याहर

आंत्र क्रिया ब्राधितः ब्राम्बर्ध कि ममानि चांचारमञ्ज यमका चांकर्यन कतिरक भारतन नाहे? बाक्षमगांक कि जागांत्मत विशंक्षम হন মাই : অলনেরা বেমন পরিশ্রমের তার সাধ্যাণের উপর সমর্পণ করিয়া পরিঅযের कल अगटहीटा अशहतन कतिया लत्न, आम-রাও কি সেই কপ ব্রাক্ষমণান্তের উন্নতির পরিশ্রম অন্যের মন্তকে চির কাল নিকেপ করিয়া রাখিব এবং তাহার ফল ভোগের नभरत्र निर्लब्ध इरेशा इन्छ अनात्र । कतिय ? হারুবক! তুমি এই গ্রীম্ম কালে তীবণ উত্তাপে দক্ষ হইরা গলক্ষর্য কলেবরে অতি कठिंग मुखिका मकल कर्षण कतिरुष्ट, आत চোমার রক্তে যে তণ্ডুল উৎপন্ন হইবে, আমরা তাহার প্রত্যাশায় আলস্য-শ্যায় উপবেশন করিয়া আছি! জনক জননীর গলগ্রহ হইয়া কেবল তাঁহাদের ধন ক্ষয় করা পুত্রগণের কি লক্ষার বিষয় নহে? অতএব আপনারা ব্রাহ্মসমাজের উন্নতি সাধনে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ পরিশ্রম স্বীকার করুন, তাহার অনন্ত ফল পাইবেন; কেবল আপনারা নহেন, পুত্রপৌক্রাদি বংশপর-ম্পরায় সেই কল শত গুণ করিয়া ফলিত হইতে থাকিবে। ব্রাক্ষসমাক্ষের উন্নতি সাধন क्क्न ।

ব্রাক্ষসমাজ আর কিছুই নহে—আপনাদের সকলকে লইয়া ঈশারের মঙ্গলময়
উদ্দেশ্য সংসাধনের জন্য যে একটি কল্যাণৰূপ সুন্দর শরীর নির্মিত হইয়াছে, তাহারই
নাম ব্রাক্ষসমাজ; আপনারা প্রত্যেকেই তাহার
অক্ষরপ হইয়া তাহার উন্নতিতে উন্নত
হইয়া উঠিতেহেন; এই ৰূপ নিশ্চয় জানিবেন, ইহার অবনতিতে আপনারাই অবনত
হইয়া পড়িবেন; আপনাদের বংশপরস্পরাকে সেই অবনতির বিষময় কল ভোগ
করিতে হইবে। আর অনবধানতা ও উদা-

সীনা প্রদর্শন করিবেন না। তারত বর্ষে যে শোচনীর ছ্রবছা উপস্থিত হইরাছে, এই অনবধানতা ও উলারীনতা হইতেই তাহার বীজ অন্ধ্ররত হইরাছিল; হিন্দু লাতির পতন সেই অন্ধ্রজাত বিষম্ম রক্ষের ফল। যথেই হইরাছে; তথাপি কি শিক্ষালাত হয় নাই? একপে ব্রাক্ষরমাজ্যের উন্নতি সাধন করুন; যে উপায়ে তাহা সংসাধিত হইবে, তাহা অবলয়ন করুন; ব্যাক্ষন করুন।

ত্রাক্ষসমাক্ষে একমাত্র পরমেশ্বরের উপা-मनोत्र कमा छेशामकपिरशत मिल्लन इहेरव । যে দেশের লোক হউক, যে জাতির হউক. যে অবস্থার হউক, যে বয়সের হউক, একমাত্র পরব্রক্ষের আরাধনা লক্ষ্য করিয়া একত্র স-मागठ श्रेटलरे जाकममाक श्रेट । कि अहा-লিকায়, কি পর্ণকুটীরে, কি অনার্ভ প্রান্তরে, কি নদীকুলে, কি পর্বতের পরিসরে, কি বুক্-তলে সর্বত্রই ব্রাহ্মসমাজের কার্য্য সম্পন্ন হইতে পারে। কি প্রভাতে, কি মধাতে. कि नाग्नः कात्न, कि निशीध नम्दन्न नक्त कालहे \*अस्तित छेशामनात सना मकल একত হইতে পারেন। পুণ্যবান্ কি পাপাত্মা, विशान कि मूर्थ, में कि वर्तन, धनी कि দরিজ, ত্রাহ্মণ কি চণ্ডাল, পুরুষ কি ত্রী. বৃদ্ধ কি বালক, সকলেই ব্ৰাহ্মসমাঞ্চে আসিয়া পরমেশ্বরের উপাসনা করিতে পারিবেন। **बाक्रमगटक क्रेबरव्रव बावाधनाव मगरव्र मर-**সারের সমুদায় প্রভেদ বিলুপ্ত হুইয়া যাইরে। সংসারের কর্মকেতে রাজার সহিত প্রজার. পণ্ডিতের সহিত মুর্খের, ধনীর সহিত সরিচের পুরুবের সহিত জীর, উচ্চের সহিত শীচের **প্রতেদ করা যদি আবশাক रয়—মধ্য**য় व्यगत्रत्र विरक्टमत् करना नत्र शत्रभटत्रत मनत्त्र करना यनि अञ्चर कत्रा चारनाक इत्न, रुष्टकं; बाक्षत्रगाटकं त्रम्पात व्याचा अक डेशात्रना-इटल अविच इरेग्ना शत्रम शिका शत्रम्यदात त्रिधात्म डेश्नीच रुरेट्व। एन-एनतं निग्नम नारे, काटलतं निग्नम नारे, व्यत्नव हात्र निग्नम नारे, काचित्र निग्नम नारे, व्यत्नव निग्नम नारे; अरे माल निग्नम ट्य, बाक्षत्रमाटकं द्यवन अक यांक शत्रम्यदात छेशात्रना रुरेट्व। बाक्षत्रमाटकंत्र व्यात द्यान व्यर्थ नारे।

ব্ৰাহ্মসমাজ সেই সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত অপাপবিদ্ধ প্রমাত্মাতে আত্মা সকলের সমাধান করি-বার স্থান: সংসারানলে দীপ্রশিরাদিগের অমৃত-সলিলে অবগাহন করিবার স্থান: সেই कर्मन् अं अपन-मयुक्त इट्रेट व्याखानरम् লাভ করিবার স্থান: সেই শান্ত-রসাম্পদ রসম্বরূপ হইতে শান্তিরস পান করিবার স্থান। আকাশের প্রতি বিশ্বতে সেই অতী-ক্রিয় আত্মা ব্যাপ্ত হইয়া আছেন: প্রত্যেক পদার্থ হইতে সেই অদুশ্য জ্যোতি বিনির্গত হইতেহে; আমাদের আত্মাতে তিনি প্রাণ-ৰূপে বৰ্ত্তমান আছেন। আমি যেমন এই শরীরের আত্মা, তিনি তেমনি এই প্রকাণ্ড ব্রন্ধাণ্ডের আত্মা: তিনি এই সমস্ত ভৌতিক পদার্থের আত্মা, তিনি আমাদের আত্মার আত্মা। তিনি সমস্ত জগতের প্রাণ, তিনি আঘাদের প্রাণের প্রাণ, চকুর চকু, প্রোত্তের ভৌত, বাক্যের বাক্য, মনের মন। তিনি উদ্বেকে অধোতে, বামে ও দক্ষিণে, পশ্চাতে ও সম্পুৰ্যে বৰ্ত্তমান আছেন। শরীর দ্বারা मंत्र, रेक्सिय घाता नया, कण्यना घाता नय, আন্ধা আপনার নৈসর্গিক বিশাস দারা তাঁ-হাকে উপলব্ধি করিতেছে। এই প্রীয় কালে ৰেমন শীতল জলে অবগাহন করিলে আরাম विष इत्र, त्नहे बन जाना त्नहे नान्ति-मद्वा-বরে নিময় হইয়া আরাম লাভ করে। তাঁহাতে विक्रिक स्ट्रेल मनुषा श्रीचित्र श्रमात्र, कर्ड-বার উপদেশ ও ধর্মের বল অতর্কিতন্ত্রপে

**क्षां क्रे**श थारक। (महे मईएमी चारा-দিগকে দেখিতেছেন; কেবল আমাদের वहिर्जाश नत्र, किश्र आगारमत्र अन्तरत्र शृष्ट कामना, शृष्ठ अञ्जिक्ति ও शृष्ट्र छेटलना व्यक्तिकत्रवर भार्र कतित्रहरून; जीहात अरे मर्बठः अमादिक मृचि, এই ख्वारक मृचि আত্মা যথন অনুভব করে, তথন, সহস্র চেষ্টাতে যে ফল লাভ করা যায় নাই, তাহা এক নিমেষ মধ্যে প্রাপ্ত হওয়া যায়। গুভা-नुधाशी श्रेक्टपव वह उभटपटम य माय সংশোধন করিতে পারেন নাই, তাহা তাঁহার পৰিত্ৰ জ্যোতিতে এক বারে ভন্মীভূত হয়। অনেক যত্নেও যে উন্নতি হয় নাই, ভাহা সেই মহান্ পুরুষে সংযুক্ত হইরা অনায়াসে প্রাপ্ত হওয়া যায়; সংসারের কোন স্থানে যে সাস্তুনা মিলে নাই, তাহা সেই প্রেমমুখ দর্শন মাত্রেই লাভ কর। যায়। মর্দ্র্যা থার কি ফল লাভ করিতে চাও ?

ব্রাক্ষসমাজ এই প্রকার চিত্ত সমা-ধানের উপায়-সকল বিধান করিয়া দিবেন এবং ইহার প্রতিবন্ধক-সকল দুরীক্ষত করি-বেন। কিন্তু ইহাতে সাধকগণেরও বছ যতু আবশ্যক হইতেছে। প্রধানতঃ এই-সাধ-কগণকে একনিষ্ঠ স্থির চিন্তা লইয়া এখানে প্রবেশ করিতে হইবে। পৃথিবীতে নানা-विध भाग रें रेंडड विकिश ररेंगा चार्ट, নানাবিধ ভাবের লোক আমাদিগকে বেইন করিয়া থাকে এবং বিচিত্র ঘটনা-সকল আমাদিগকে লইয়া প্রতি মৃহুর্ত্তে ক্রীড়া করি-তেছে: আমরা নির্লিপ্ত থাকিবার নিমিত্ত যতই চেফা করি, তথাপি তৎসমুদায় হইতে আমাদের মনে নানাবিধ ভাব সংক্রামিভ इरेट थारक এবং আমরা ইচ্ছা না করিলেও কিয়ৎ পরিমাণে আমাদের চিস্তাকে অপহরণ करतः, अञ्चलः मनुरमातं भरन अभन नकन বিক্তুত প্রতিবিদ্ব আরোপিত করিয়া দের যে,

काश अक बाद्य व्यक्तांतम कता नकस्त्र भएक महान बार्गान नरह । यनुरगत यन रयमन न्यक्षकारक मारे मकल अधिविध महेशा <del>डिक्रोटनर्स मार्ग्य रावश्य करत, त्मरे क्</del>म व्यमस्यक इरेवांगांज काजानवदारक्छ स्मरे मयस अकिरिय यात्रा माना मिटक विकिश्व रहेता भएक । हेरां अ अन्य आटकरभंत वियत নয় যে, কত আবশাক কর্ম পরিতাগ করিয়া वाचनगरक छेशदिक इरेशा वस करते हि-ন্তাকে যেমম হির করিলেন, অমনি তাহা टैक्न-शैन अमीरभत नाम निर्जान स्टेस राज्य. किनि बिखाविष्ठे हरेलन এवः करा करा পার্শ্বর্জী উপাসকদিগেরও বিশ্ববরূপ হইতে লাগিলেন। চিত্তের চঞ্চলতা, অথবা তাহার লয় উভয়ই সাধকের আশা ও পরিপ্রম বিষ্ণল করিয়া লেয়। চিত্তকে এই উভয়বিধ উপদ্রব হইতে মুক্ত রাখিয়া অবাতকশিত অথচ প্রজ্বলিত দীপশিখার ন্যায় প্রস্তুত করিতে হইবে। উপাসনা, স্তোত্র, সংগীত वाचाम. छेशरमण मकलई निवर्धक इंहर्त. चाठि डिक्क स्टेटवः विविक्तिकत् स्टेटव. यपि ক্তির চিত্তে অবস্থান অভ্যন্ত না হয়।

একান্তে ঘাঁহাকে নিজৰ বলিয়া ভোগ করিয়া থাকি, তাঁহাকে সাধারণ করিয়া মনুষ্য জাতির সোঁ দাত্রকাপ মহামূল্য রত্ন উপাক্রিন করিবার ছান এই ব্রাহ্মসমাজ। একটি
মূল্র দীপ হর তো অতি সামাল্য বায়ুতেই
নির্বাণ করিয়া ঘাইবে; কিন্তু ঘণন অগ্নিরাশি
একত হইয়া মহারণ্য দক্ষ করিতে থাকে,
ভখন সেই পূর্ব শক্র বর্তায়ন করিয়ে থাকার
কর্তা করিছে যায়; মনুষ্য বর্তমান কংবারে
অন্তঃশক্র ও বহিংশক্রতে বৃগপৎ আকান্ত
হইয়া আছে; একানী বেই সমন্ত অরাতিকে
পরাজয় করিয়া আপনার কর্তন্য সাধনে অব্যান্তর ক্রিয়া ক্রিয়া না প্রান্তন কর্তন্য সাধনে অব্যান্তর ক্রিয়া ক্রিয়া না প্রান্তন কর্তন্য সাধনে অব্যান্তর ক্রিয়া ক্রিয়ান, একন মহাল্যা প্রান্তই
চুক্তিগোচর ইন্য না । ক্রিয়া আদাধিগকে

পরস্পর সাহাধ্য-সাপেক করিয়াই ভূমি করি-शांदिन: नश्नादतत्र कांदर्ग द्यमम धने नाहाया जावनारु, जाबात देवकि श्रास्त्रात देश तिहें तुश जायगाक हेहा भाव शहत भन्नी-किक स्ट्रेट्ट्रा श्रद्धन्तरात् श्रूषं मित्रीकन कतिता मनुषार्गन व्यनुर्ध यस श्रांतन करतम । करण्त्र नाम चाचात्र चाचात्र अकात्र আধ্যাত্মিক যোগাকর্মণ আছে, তাহার প্রভাবে মনুষ্য জাতি অতি অভুত ছংলাধ্য ব্যাপার সকল সম্পন্ন করিতে পারেন। কুত্র কুত্র পরসাণু কেবল যোগাকর্ষণ প্রভাবে এই প্রকাপ্ত পৃথিবীৰূপ ধারণ করিয়াছে। কোন বুক একাকী প্রান্তরের মধ্যে বসন্ত কালে পুশ-ৰূপ লোভনীর হাদ্য বিস্তার করিছে পারে. কিন্তু গ্রীম্ম কালের প্রচণ্ড বাড্যাঘাতে ছিম্ম ভিন্ন হইয়া পড়ে; যদি তাহাকে বৃক্ষপ্রেণীর মধ্যে রোপণ করা য়াইত, হয় তো চির কলিই জীবিত থাকিতে পারিত। মনুষ্যও সেই ৰূপ मगांटक अनुश्रविके शांकिया आकर्षा दल ধারণ করেন এবং কত বিপৎপাত অনায়ানে বছন করিতে থাকেন। थार्भिक स्ट्रेबोन निभिष्ठ मनुषा हरेवात निभिष्ठ य अकात বিশাস, যে প্রকার ভাব ও যে প্রকার সদা-চার নিতান্ত আবশ্যক, সাধু নমাকে ছাহা আশ্চর্য্য রূপে পরস্পরের উপর সংজ্ঞামিত ट्स । यथन जैत्रादात जाताधनात्र जानि, उधन পরস্পরের প্রেমোক্সল চকু কর্পন করিলে भागारमत त्थामान सांबानरमत नात क्षाच-लिंग रहेशा छेर्छ ; हेरा नामाना छेलकात नटर । जाकाध्दर्भन त्य गराम् छत्कामा भारत्, তাহা পরস্পরের সৌঞাররংস সম্মিদিত नगान वाठीक अस्त्र काला क्लान करेतात नरह। এक উरम्बरका मुन्ति बनाय नाहिका नगरत नगरत करूत समार्थक स्थारक जाक-गयात्कात्र त्य कि वस भूग कृतन अकि भारे-ट्यट्ड, कारा टक युविटक शाहित्व । यसन

परानपूरकंत्र निकृष्ठ शत्कं श्रदानकी हे नकन शक अकृष्टि चानित्रा थान छाना करत, रा । कथन क्हरे लट्ड मा, किंद्ध जारा स्ट्रिंडरे थकां छ দ্বীপ মহাসাগরের বক্ষাহল ভেদ করিয়া উদ্ধিত হয়, পর্বত্যমান তরদের আ্যাত-প্রশারা অবলীলায় সহু করিতে থাকে এবং ক্ত শত ভগ্নপোত নিরাপ্রয়দিগকে স্ত্যু-वात्र इट्रेंटक छन्नात्र करत्। "वाक्रानगांदक আগ্রম করিবার কোন ফল নাই!" আর এ कथा (कहरे राम वरलन ना। रह मधू-मिककार्राग । वालकिप्तरांत উटडकमांत्र छ-खाक हरेशा शतिखारम कांच हरे अ नाः मधुक्रम निर्मान क्रिएड शाक ; यथन मधु मक्षत्र इटेर्टर, তখন বিকারগ্রন্ত মর্ত্তা লোক, বিকারগ্রন্ত হিন্দু জাতি মহৌষধ জ্ঞানে সমাদর করিবে এবং হন্ত তুলিয়া তোমাদিগকে আশীর্বাদ করিবে। হায়! ব্রাক্ষসযাজে আসিবার কোন কলই নাই! তুমি কি ফলের প্রত্যাশার আগমন কর ? যে কলের প্রত্যাশার নানা-দ্রব্য-পরিপূর্ণ আপণ মধ্যে যাও, যে কলের প্রত্যাশায় রাজসভায় প্রবেশ কর, বে কলের প্রজ্যাশায় নাট্যশালায় উপস্থিত হও, সে কলৈর প্রত্যাশা এখানে রুথা। চিত্তের শান্তি ও প্রসাদ এবং ধর্মাবলের রুদ্ধি এখানকার कल. क्रेबंद्र इरेटड डेशरम्म लांड এখानकांद्र কৰা, সমূল্য ভ্ৰাতৃতাৰ শিকা করা এখানকার कला आन्नांत कुछ मरमत्र मूर्थ हुः भ भवना পরিত্যাগ কর, ঈশবের ভক্ত হও, মনুবাকে क्षीकि क्या. बरमस्भव ध्याप विश्वलिक इ.स. ছবে এখানে আনিবার ফল ব্রন্ধিতে পারিবে। क रकरवार कल देशंत क्रवरकतारे कारतन। द्र क्रुयक्शन । अञ्च छेखार चीठ रहे । मा अबे जेवानरे कामात्मत कता स्मय मध्य ক্ষুদ্রিক্তাক, বিশ্ব চিতে কর্মণ করিতে থাক कार कामक समा केश्या कविशा ट्यामात्मव अभिनानोध्य स्मर्था ७, फारात टेकना रहेन ।

जामनमाम जेगारतत छेगानना निका করিবার স্থান। ঈশরে প্রীভিও ভাঁছার থিয় কাৰ্য্য সাধনই তাঁহার উপাসনা " তব্যিৰ প্ৰীতিশুস্য প্ৰিয়কাৰ্য্য সাধনঞ্চ ভদ্ৰ-পাদনমেৰ।" এই প্ৰকার উপাসনাই ঐতিক ও পারত্রিক মনলের এক যাত্র নিদার: "একসা তলৈাবোপাসনয়া পার্ত্তিক মৈহিক্ঞ শুতং তবতি।" ঈশরের উপাসনা প্রীতি ও প্রিয় কার্য্য সাধন এই ছুই ভাগে বিভানিত হইয়াছে ; কিন্তু বস্তুতঃ এ তুইই এক : অন্তরে ঈশরের উপাদন।—প্রীতি: এবং বাহিরে তাঁহার উপাসনা—প্রিয় কার্য্য সাধন; এই মাত্র প্রতেদ। ইহাই ঈশবের প্রকৃত উপাসনা। ব্ৰাক্ষদমাজ এই ৰূপ উপায়না শিক্ষা করি-বার স্থান: এই ৰূপ উপাসনা অভ্যাস कतिवात द्यान । शान ७ आर्थना वहे छेना-সনা শিক্ষা করিরার উপায়। ব্রাক্ষসমাকে এই ছুইটি উপায় মুখাৰূপে অবলম্বিত হইয়া থাকে। প্রতি ব্রাহ্মও নির্জ্জনে এই উপায় শ্ব-বলম্বন করেন তাহার সজেহ নাই। ঈশ্বরের স্বৰূপ ও মহিমার প্রতিপাদক এন্থ, স্তোত্ত ও मश्गी**छ मिहे धान ७ धार्थनात <del>कारलब</del>न** : সাধকগণ গ্ৰন্থ, স্তোত্ৰ অপৰা সংগীত অবলয়ন করিয়া ঈশরকে ধ্যান ও প্রার্থনা করিয়া থাকেন। সেই খান ও প্রার্থনা ভারা ঈশ্ব-রেতে প্রীতি বিকশিত ও প্রিয় কার্য্য সাধ্যমের दल পরিবার্দ্ধিত হয়। কেহ যেন এই শ্যান ও প্রার্থনাতেই উপাসনার পরিস্থাপ্তি মনে क्तिश निकिस ना इन ; शाम ७ धार्मना अप्र: छेशानमा नरह: छेशानमा लिका कवि-ৰার উপায়। উপাৰৰা—প্ৰীতি ও থিয়কার্য্য नाधन, छेशानवादान- धक लागाटता सुतन, मांड मामारमञ्ज कर्मारकव । स्वारत वैश्वात कक्क स्ट्रेंटर स्ट्रेटर अवश् कर्ष्य जीवात तातक হইতে হইনে : করে তাহার উপানর। সাভার रहेर्य । केशानबाद मार्चान श्रीकि के पार्कान

প্রিয় কার্য্য সাধন; উত্তয় মিলিত না হইলে উাহার উপাসনা সম্পন্ন হয় না। বৃদ্ধের কিয়নংশ পৃথিবীয় গর্ডে নিহিত ও কিয়-দংশ আকাশে বিভ্তুত হইয়া থাকে; কিন্তু উত্তয় অংশ মিলিত হইয়াই পুশাকল প্রস্কাক করে। ত্রাহ্মসমাজ ঈশরের এই প্রকৃত্ত উপাসনার শিক্ষা দান করিবেন। হাদয়ে ঈশরের ভক্ত ও কর্মে তাঁহার সেবক এই কপ ত্রহ্যোপাসক সকল প্রস্তুত করাই ত্রাহ্মসমা-জের উদ্দেশ্য হইবে।

ব্রাহ্মসমাজ পাপীদিগের প্রায়শ্ভিত-স্থান। পাপী ছুই প্রকার। এক প্রকার এই—তা-হারা আত্মকৃত পাপ অবগত হইয়া সন্তাপা-नाल पश्च श्रेरिक्ट वार प्रमार्ख श्रिरावत ন্যায় শাস্তি-বারি অম্বেবণ করিতেছেন। ব্রাক্ষদমাঞ্চ তাঁহাদিগকে শান্তি-নিকেতনের পথ প্রদর্শন করিবেন: তাঁহাদের দগ্ধ আত্মা যেন সেই অমৃত-সাগরে অবগাহন করিয়া শীকল হইতে পারে। ঈশ্বর ভয়া-নক নহেন; তিনি মাতা অপৈক্ষাও কোমল; छिनि छैशिएनत क्लर्स य यञ्जन। अलोन করিতেছেন, তাহা কেবল তাঁহাদিগের পাপ-বিকার ধংস করিবার নিমিত্ত: তাঁহাদি-গকে পরিত্যাগ করিবার নিমিত্ত নহে: এই আশাপ্রদ সভ্য-এই মৃতসঞ্জীবন ঔষধ প্রদান করিয়া ব্রাহ্মসসাজ তাঁহাদিগের হ্র-मझ-मला उकात कतिया मिटवम এবং প্রেমের সহিত ঈশবের প্রেম প্রদর্শন করিয়া তাঁহা-मिगैरक जैयदात अछि चाक्रके कतिरवन। পাপতাপিত ব্যক্তিরা শোকে ও ভয়ে হত-ক্তেন হয়, প্রেমপূর্ণ ঈশরকেও উদ্যত বচ্ছের नात्र गराच्यानक रालिया ताथ करत जवर নৈরাশ্য-সাগরে নিম্ম হইয়া শোচনীয় কাগু সকল উপস্থিত করে—হয়তো ক্রমের মন্ত **डेवान-तार्टर्ग व्याकान्ड रहा; महा, रखनाह** অধীর হইরা পাপের উপর পাপ করিতে वारक; व्यवन वहरत वार्णमात वान कल कित्र वान् विक शारणत श्रीवाक्ति कित्र केत्र के वार्ण वार्ण वान् विक शारणत श्रीवाक्ति केत्र के रिष्ठ यात्र । हा ! असन शावाक्त वान् वार्ण अहे शृश्यितीर वार्ण वार्ण राह रा, राहे क्रांत्र महात्र का का कित कर्त । असे वार्णित नात्र याचात्र नात्र अहे व्यवकार वार्णित वार्य वार्णित वार्णित वार्णित वार्णित वार्णित वार्णित वार्य वार्णित वार्

দিতীয় প্রকার পাপী এই—তাহারা অজ্ঞাতসারে ভূরি ভূরি পাপ অনুষ্ঠান করি-তেছে অথবা তাহাদের হৃদয় এমন কঠোর হইয়া গিয়াছে যে, সেই সকল পাপাচারের নিমিত্ত তাহাতে অনুশোচনার একটি রেখাও সমুভূত হয় না। ইহাদিগেরই পাপাচারে মনুব্যসমাজ কত বিক্ষত হয়। বিচারালয়ে দৃষ্টিপতি কর, দেখিবে, কেমন অম্লানবদনে উৎকোচের প্রতি দক্ষিণ হস্ত প্রসারিত হই-তেছে! বিচারাথীর ভয়কিশিত হস্ত হইতে কেমন অকুতোভয়ে তাহাদের শুদ্র শোণিত পান করা হইতেছে ! আ ! এক বার এক ছুরাত্মা অসংকোচে বলিয়াছিল, ইহাতে কি পাপ! বণিক্দিগের বিপণিমধ্যে প্রবেশ কর, কেমন প্রভারণার জাল পাতিত আছে. मिथिए शाहेरव । जे मिथ, जक विचान जा-পনার নিভূত গৃহে উপবেশন করিয়া কাহার সর্বনাশের নিমিত্ত জালপত্ত প্রস্তুত করি-তেছে। এ দিকে দেখ এক যুবা পতিব্ৰভা পত্নীর অরুতিম প্রেমে জলাঞ্জলি দিরা স্থা-রের সাজা তৃত্ব করিয়া ধর্মের মন্তব্দ চুর্ণ করিয়া বারাদনার পরিচর্য্যা করিছেছে ব ওদিকে দেখ, এক বিষয়ী নিয়ীহদিটোর স-শক্তি সকল কেম্ম অশ্যে অংশে আন্মন্ত

করিতেছে। আর এক ছানে দেখ, কতকগুলি वृद्धां वाकि अकिवानीत छेरशी प्रत्यत करना क्मन गथनी वाश्विता ठकांख कतिरहरू। এখানকার শনিবাসরের আমোদের প্রতি দৃত্তিপাত কর; কি পিশাচ-হত্তি সকল অনু-क्रुड हरेरडाइ, सिथिटड शारेटव । धर्म हरेटड বিষয় কর্ম কেন এত পৃথক্ হইয়া আছে ; বিষয় কর্মের লোক ও ধর্মের লোক কেন ভিন্ন ভিন্ন ত্রেণিতে পরিগণিত হর? মনুষ্য-मभारकत উচ্ছেদকারিণী এই সমস্ত পাপ-পর-ম্পরা ব্রাহ্মসমাজে তীব্রন্তে তিরক্ত হইবে, —যাহাতে তাদৃশ ছু র্ত্তদিগের হৃদয়ের ছুর্গন্ধ ভাহাদের ভ্রাণেক্সিয় স্পর্শ করিতে পারে। তাহাদের পাপের মূল আবিষ্কৃত করিতে হইবে, তাহার গ্রলময় ফল সকল প্রকাশ করিতে হইবে; তাহা হইতে মুক্তি লাতের छेलार नकल अमर्भन कतिए इटेरव ववः তাহাদের সংশোধনে স্নেহের সহিত সাহায্য क्त्रिरा इरेरव । मूनिश्रुग अञ्जितिरुगरकत ন্যায় তাহাদিগের হৃদয় খণ্ড খণ্ড করিয়া अमर्भन कतिए हरेरव-कि महाविनारभत বীজ সকল উহার অভ্যন্তরে অঙ্কুরিত হই-তেছে। ইहा यथार्थ या, ইहाতে वाका-ममाञ्च जात्राकत वित्रिक्षिकत श्रेटिव, जात्राकत সুখতভাগের বিশ্বস্থৰূপ হইবে, অনেকে ইহার তীব্র ভৎ সনা সম্ভ করিতে না পারিয়া তিরো-হিত হইবেন এবং খনেকে ইহার প্রতি অভি-সম্পাত প্রদান করিবেন। ক্ষমাময় ঈশর मकरनत मन्न कन्नम এवः मक्नरक अञ दृक्षि अनान क्सनः जाकाश्य मनुत्रात अनुशामी श्रुरेदन ना ; यनुषारक बाक्तधर्णत अनुशागी इटेट इटेट । পाशीनिगरक घृगा क्रिया পরিত্যাগ করা অপেক্ষা প্রীতির সহিত তির-कांत्र कहा त्यात्रकत त्याथ रहा। त्या ७ निर्धा र िक्रकारत्र मृत, डांश धर्यात्र माकार বিক্লোধী মহাপাপ। হিতৈবণার তির্ভার

রুক্তিন সম্পদ্ধ অপেকা অনন্ত গুণে উৎকুক্তি
তাহার সন্দেহ নাই। মনুবা। যে ব্রাক্ষসমাজ তোমার ঐহিক ও পার্ত্তিক হিতারুসন্ধান করিবেন, ওাঁহাকে ভূমি কি শত্রুক্তান
করিবে? ভূমি কি প্রতির তিরকার অপেকা।
কপটের স্তৃতিগানে অধিক মুক্ক হইবে?

ব্রাক্ষসমাজ ধর্মের বিজ্ঞান অপেকা ধর্মের প্রতি অধিক দৃষ্টি করিবেন ; বাক্যের বিশু-কতা অপেকা চরিত্তের বিশুক্তায় অধিক नमापत कतिरवन। मनूर्यात गरन धर्मछान কি প্রকারে সঞ্চারিত হইল,ইহা না জানিয়াও এক জন ধর্মানুষ্ঠান ও সফরিত্রভার অনু-করণীয় দৃষ্টান্ত হইতে পারেন ; কিন্তু আর এক জন ধর্মতত্ত্বের বিচারে অসাধারণ ব্যুৎপন্ন হইয়াও পাপাচারীর একশেষ হইতে পারে। যাঁহার চরিত্র ধর্মের সহিত একীভুত হইতেছে, দর্শন শাস্ত্রে তাঁহার ব্যুৎপত্তি থা-কুক আর নাই থাকুক, তিনি অবশাই আদ্ধা-म्भम ७ मानाम्भम रहेरवन। किन्दु शिन দর্শন শান্ত্রে অধিতীয় পণ্ডিত, ডাঁহার চরিত্র যদি ধর্ম হইতে পৃথক্ হয়, ভবে ভিনি মণি-মণ্ডিত বিষধরের ন্যায় সুদূর-পরাহত হইবেন, গন্ধাহীন কিংশুক রুক্ষের ন্যায় কেবল গৃহ-সজ্জার উপকরণ মাত্র থাকিবেন। হাঁছার হৃদয় যথাৰ্থৰূপে ধৰ্মশাস্ত্ৰ অভ্যাস করি-য়াছে, তাঁহার চরিত্র সেই ধর্মশান্তের ব্যাখ্যান-चक्र इसं। यमन नय्रत्नत च्यान्यां क्षम्य-নিহিত শোকের পরিচয় প্রদান করে. সেই ৰূপ অন্তরের ধর্মভাব চরিত্রে প্রভিবিশ্বিত হর। याँहाর চরিত্র দেখিরা লোকে ধর্মানিকা করিতে পারে. ভিনিই মহাপুরুষ। সাধারণ লোকে ত্রাহ্মধর্মের গ্রন্থ পাঠ করিয়া ব্রাহ্মধর্ম জানিতে চায় না; ব্রাক্ষদিগের চরিত্র দে-ৰিয়া তাহা জানিতে চায়। সত্য কথা, সত্ৰল ব্যবহার, ন্যায়ানুগত আচরণ, পরোপকার, ক্ষমা, সৌজনা, বিনয় ও শিক্তাচার শত শত

কর্মন শান্ত অপেকা নহন্ত ওবে উৎকৃতি
বহাতুলা রয়। তুমি নীতিশারের বিচারে
কৃত দুর ব্যুৎপত্তি লাভ করিয়াহ, তাহা তাতৃশা
অনুসংজ্ঞার নকে: কিন্তু মনুষ্যসমাজে ব্যবহারকালে ন্যায়পথে কৃত ক্ষণ দণ্ডায়মান থাক,
তাহাই পরিপণিত হইবে। বস্তুভঃ নির্মান চরিত্রই ঈষর-পূজার উৎকৃতি উপহার; গন্ধ-পূজা
ধূপ-দীপ তাহার আরাধনার প্রকৃত উপকরণ নহে। ব্রাহ্মসমাজ ঈদৃশ ধর্মপরায়ণ
সক্ষরিত্র সাধুগণের নিজ গৃহত্বরূপ ও তাহার।
ব্রাহ্মসমাজের অলকারত্বরূপ হইবেন।

যে বীর আপনার প্রাণকে তুদ্ধ জ্ঞান ক্রিয়া রণকেত্রে দগুায়মান আছেন, ব্রাক্ষ-সমাজ ভাঁহার ন্যায় সাহসী হইয়া কর্ম করিতে थाकित्वन : कर्ड्ड माग्न स्व रहेश काल कर क्तिर्वन ना : छेनानीन ७ मूक हरेशा रक्वल ইহার মন্ত্রী হইবে ; ভয় ও জালসোর পরা-মর্শ এক বারে পরিত্যক্ত হইবে। সত্য জ্ঞান, সাধুভাব ও মদল ইচ্ছা ইাহাঁর এক মাত্র व्यक्त रहेरत । मधूनात मश्मारतत केर्र्य धर्म-রাজের সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত করিবেন। ক্নণ-কের লাঙ্গল অবধি সম্রাটের মুকুট পর্যান্ত ইহাঁর শাসনে কম্পিত করিতে হইবে। অস-ভার সহিত, অন্যায়ের সহিত, পাপের সহিত অবিজ্ঞানে সংগ্রাম করিবেন। ক্ষণ-স্থায়ী নিক্ষা ও প্রশংসা তুক্ত্ করিয়া চির-স্থামী মূলল ব্লাক্ষ্য বিস্তার করিতে থাকিবেন : পর্বতের ন্যায় অটল ভাবে ভীষণ বাভাখাত ও বন্ধপাত সহু করিয়া ঈশবের মঙ্গল উ-्राम्यः नाधन क्रिट्ड थाक्टियन।

ব্রাহ্মসমাজ অক্তরিম সম্মানের সহিত পুরুষীর বৃদ্ধগণের শীতল হাদরে অনন্ত লী-বনের ক্র্তিকর আলোক প্রথানিত করিরা দিবেন এবং তাঁহাদের আশীর্বাদ প্রার্থনা ক্রিবেন া তাঁহারা ইমারের কার্যা যত দুর সম্পন্ন করিয়া চলিলেন, ছাড়াতে বছ মান क्षपर्णन क्षिर्देश क्षेत्र जैशिक शिक्ष कोर्कि नकन जिल्ल ७ गाउत त्रक्ति द्रका করিতে থাকিবেন। তাঁহারা বছ কর্ম্ভে যে স-কল রম্ব উপার্জন করিয়াছেম, অলনের নাগর কেবল তাহা ভোগ করিয়া আয়ুগণেম করা কর্ত্তব্য নহে ; আরও নব নব রত্ন আছিলণ করিয়া ভাষার হৃদ্ধি করা উচিত। ভাষারা ক্ষেত্রের যত দুর কর্ষণ করিয়াছেন, কেবল তাহারই উপর হল চালনা লা করিয়া অব-শিষ্ট ভাগ কর্মণ করিতে হইবে। ওাঁহা**লে**র যে নকল দান আমাদের সময়ের উপযুক্ত ना स्ट्रेटर, छाइ। अधिगरपुत महिल छाडारमत প্রতিমূর্ত্তির—মাননীয় প্রতিকৃতির পার্ষে নাস্ক रुरेग्रा आमारमत श्रीडि आकर्षन कतिए बा-किटन। ज्यामारमत शूर्च शुक्रमशर्भत (तममः हिन्दा ष्यामारमञ्ज উপাসনার উপযোগী না इहेरल्ख যেমন আমাদের যত্নের ধন ও প্রীতির আম্পুদ হইয়া আছে সেই ৰূপ তাঁহাদের যে সকল দ্রব্য व्यामात्मत छे भरगंभी ना स्ट्रेटन, उद्धांता व्यक्ति যত্নের সহিত তাহাঁদের কীর্ত্তিগৃহ—মানাস্পদ कीर्जिश्र जनकृष्ठ श्रेट्ट । शृक्षमीय दृक्षभन যেমন আমাদের অগ্রে এই পৃথিবীতে আ-গমন করিয়া কত শত বিষয়ে আমাদের সহায়তা করিলেন, সেই ৰূপ পর লোকেও আমাদের অঞ্জনর হইয়া আমাদের মহোপ-कारतत कता रा कर भारताकन कतिरवन ভাহা কে কলিতে পারে ৷ তাঁহারা চিরকালই न्यागाटमञ्जूनीय शांकिटका।

ব্রাজ্যসমাজ অংশবর্গ যুবকগণকে প্রীতি ও সমাদরের সহিত পরিপ্রহ করিবেন। তবি-যাতের আশা ও উন্নতি ত্রাহাফিনেরই মুখ নিরীক্ষণ করিয়া আছে। শুজনীয় রুজেয়া যে সকল কার্যা অসম্পন্ন রুজিয়াহেন, ঈশর ভাহা ভাহাদিশের স্থারা সম্পন্ন করিয়া লাই-বের । কিন্তু, যদিও ভাহানের হৃদয় স্থাশা

**७ छम्।त्य** शद्रिभूर्न, अवः नम्पूर्यत निरक्रे প্রধাবিত আছে ; বদিও বার্দ্ধকা-সুক্ত उर ६ मिक्रश्ताहरा जनामि राशनिभटक উৰিয় করে নাই; ভৰাপি ভাহার৷ অদুর-দর্শিতা ও অনভিজ্ঞতায় অন্ধ ও বিষয়সূথের ल्लाटक अधियांक हकतः काशंता व्यापनारमत পশু-প্রমৃত্তির ও সেই প্রমৃত্তির বিষয় সকলের শ্বল ও পরিণাম সহসা পরীক্ষা করিতে शाद्य मा, वज्रक कारलत मन शहरवत मात्र बिना वाधाम প্রতিপালিত হইতেছে, প্রীম-কালের ভীষণ বাড্যাখাত সহু করিতে জানে ना : काशास्त्र योवनमूलक निथिल हिटड कीवटनत्र महत्कम छिट्मना महन। वक्तमूल इस না; তাহারা পুত্তলিকার ন্যায় ক্রীড়নক इट्या मः नारतत रस्य मानास्यान स्रेएटर ; এবং তাহাদিগের উদ্যমপূর্ণ শরীরের ন্যায় মনও ইচ্ছাপূৰ্বক চজুৰ্দ্ধিকে ঘূৰ্ণমাণ হইতেছে। ব্রাহ্মদাজ তাহাদিগকে সৎপথে অগ্রসর করিবেন: তাহাদের কোমল হাদরে ঈশরের প্রতি ভক্তি, মনুষ্যের প্রতি প্রীতি, ধর্মের প্রতি আহা, সংকর্মে সাহস ও কর্মানুষ্ঠানে পটুতা উৎপন্ন করিতে থাকিবেন। তাহাদিগের বালাসুলত ঔদ্ধত্য পিতার ন্যায়, সদ্গুরুর नाम मझ क्रिए इहेर्ट थवर क्र्म जाएना দারা নয়, কিন্তু কোমল ভাব ও দৃষ্টান্ত দারা বিনয়, সৌজন্য ও শিষ্টাচার শিক্ষা দিছে হর্টবে। পিছামাছাই ধর্ম শিক্ষার স্বাভা-বিক গুরু, কিন্তু সকল পিতাদাভার অবস্থা দেৰণ মহে; এখামকার বিদ্যালয় সকলও ल क्षकात सरह। खाकामभाक यमि खाका-ধর্মের বিভার দেখিতে চান, পাপের ভ্রোত নিৰারণ করিতে চান, নাত্তিকতা দমন ক-রিছে চাম, ভারত বর্ষের উন্নতি দেখিতে कान, करव स्टाटक व्यवनारे काशरमत धर्म-শিক্ষার ভার প্রহণ করিছে হইবে ৷ এক্সণে বিৰ্যালয়ে জান বিক্ষা করিয়া ভাহাবিগের

বৃদ্ধি যে প্রকার উল্লভ হইতেছে, গৃহে আদিলা হাদর পরিভূপ্ত করিবার নিমিত ভাহারা নে প্রকার ধর্ম প্রাপ্ত হইতেছে না। ইহাতে যে গরলমর কল উৎপন্ন হইতেছে, ভাহা কাহারও অগোচর নাই। "ঈশ্বর নাই, পর লোক নাই, ধর্ম কেবল প্রবঞ্চনা" এ সকল ভ্য়ানক কথা কোথা হইতে উৎপন্ন হয় ?

ব্রাহ্মনমান চির কালই উন্নতি হইতে উন্নততর অবস্থায় অবগাহন করিতে থাকি-বেন। ব্রাহ্মসমাজ যে পথে পদার্পণ ক্রিয়া-हिन, ठाशास्य छन्यमीन दुई। कथन खद्यशाची रहेरव ना এবং विखारमञ्ज जाकि कथनहे আসিবে না। মহৎ হইতে ঘহত্তর কর্ম্পের ক্ষেত্র সকল দিন দিন উপস্থিত হইতে থাকিবে। অতএব ব্রাহ্মসমাজকে চির কালই উন্নতির আদর্শ হইয়া অবস্থান করিতে হইবে; নতুবা ইহাঁর অক্টিত্ব কেবল বিড়-वनामाळ स्टेर्ट । जाक्रममाक राम विका, मञाञा ও माधात्र উन्नजित्र निकार कथनहे **हीन हहेग़ा ना পড़েन: छाहा हहेत्ल हेहाँ**ब व्यविष्ठि मत्मरहत विषय हरेशा छेठिरव। माधात्रम त्लाटक खान धटर्म य डेन्नडि लाख করিবে, এখান হইতে যদি তাহা অপেক্ষাও অধিক উন্নতির পথ প্রদর্শিত না হয়, তাহা ररेल रेशाँत जीवन कत हरेएड शांकित। धमम नमस कथनरे जानित्व ना, यथन जात्र উন্নতির প্রয়োজন হইবে না। বিদ্যা, সভ্যতা ও সাধারণ উন্নতির সহিত ক্রম্মই যেন ইহাঁর विद्रापिका ना इस । हेहा संबंधि बटके त्य. ব্রাক্ষনমাজ বিধান্ ও মূর্থ এবং সভা ও বর্রর नकटलद्रवे अधिशंग व्हेटबन। खान्तनमास ए नकरलदरे अधिशेषा स्टेरिक देशा किन् गांक गटनार नारे; किन्छ कि बाभ रहेता बाना-ममाम नकालद्ररे व्यविशया हरेटवस ? जान-नवाक याँग विमात व्यनामत करत्व, कर्द रेटैं। एक स्कार मुर्भ मरेबा व्यवसान कविएक

ব্রাহ্মসমাজ সমুদায় পৃথিবীর মঙ্গল সাধ-নেই মুক্তহন্ত থাকিবেন; কিন্তু ভারত বর্ষের সহিত যে ইহাঁর সবিশেষ সম্বন্ধ স্বভাবতঃ সং-ঘটিত আছে, ইহা যেন কখনই বিস্মৃত না হন। ভারতভূমির সন্তানগণকে লইয়াই এই ব্রাহ্ম-সমাজ নির্দ্দিত হইয়াছে; ভারত ভূমিই এই ব্রাক্ষসমাক্ষের জন্মভূমি; ভারত বর্ষের গ্রন্থ হইতেই ব্রাহ্মধর্ম প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে; ভারত বর্ষের অর্থ লইয়াই এই ব্রাহ্মসমাজ-গৃহ প্রস্তুত হইয়াছে; এবং ভারতভূমি আট-ত্রিশ বৎসর এই ব্রাহ্মসমাজকে বক্ষে করিয়া বহন করিতেছে; অতএব ভারত ভূমির মঙ্গল সাধনে ব্রাহ্মসমাজ কি পরিপ্রান্ত হইবেন? আমাদের প্রেমাস্পদ ভারত বর্ষকে, আমাদের মাতৃভূমিকে উন্নত করিতে হইবে। আমা-ষের আত্মা এই ভারত ভূমিতে জন্ম গ্রহণ করিয়াছে, এই ভারত বর্ষের মৃত্তিকাই व्यामार्गत त्रक माश्त्र स्मन मक्का ७ व्यक्ति হইয়া আমাদিগকৈ জীবিত রাখিয়াছে; ভারত ভূমির এ ঋণ যদি পরিশোধ না ক-রিয়া প্রস্তান করিতে হয়, বদি আমরা ভারত

ভূমির কোন উপকারে না আসিয়া কেবল ইহার গলগ্রহ হইরা থাকি, যদি ভারত বর্ষে আমাদের মমতা ও প্রীতি সঞ্চারিত না হয়, যদি জননী জন্মভূমি আমাদের পর ও আ-মরা ইহার পর হইয়া উঠি, যদি মাতৃ-সেবায় व्याचीटमत क्रिम 'त्वाथ हर्रे, एटव व्याचीटमत जब धर्ग विज्ञा गांक, धरः आधारमञ জীবন কেবল কুভম্বতা মাত্র। ভারত বর্ষ 🗷 ক্ষণে ব্রাক্ষসমাজের নিকট বছ প্রত্যাশা করিতেছে। এক বার কর্ণপাত করিয়া ভারত-ভূমির আর্ত্তনাদ প্রাবণ কর; যদি হৃদয় थार्क, এक वांत हेशत जीर्न मना नितीकन क्तः, यनि श्रांग थातकः, এक वात कक् छेकी-लन कत : ममुनाय त्रक्क 🥶 क इटेसा याहेटव । ধন্য হিল্ফুজাতির পুণ্য যে অদ্যাপি ভাঁছারা জীবিত হইয়া আছেন। পাপ, তাপ, রোগ, শোক, উৎপীড়ন, অত্যাচার, দরিদ্রতা স্বর্ণ-ভূমি ভারত বর্ষকে অরণা করিয়া কেলিল। বিক্ হিল্ম সন্তানগণের জীবনে, যাহাদের জননী সৃত্যু-শ্যায় শ্যানা, তাহারা কি বলিয়া হাস্য মুখে অমোদ করিয়া বেড়ায়! এখন ব্রাক্ষসমাজ এই ভারত বর্ষের এক মাত্র ভরসা। ব্রাহ্মসমাজকে সেই মুমুর্যু জননীর প্রাণ দান করিতে হইবে;—পাপের স্রোভ নিবারণ করিতে হইবে এবং ইহার যন্ত্রণানলে শান্তি-বারি সেচন করিতে হইবে। ইছার জন্য কত পরিশ্রম স্বীকার করিতে হইবে, কত ক্লেশ দহা করিতে হইবে, কত বিপদ্ मखरक कतिया वहन कतिरा हरेरवः, कछ অপমান ও তিরকার অনের আতরণ করিছে हरेरव: তবে এই জননী জন্মভূমির ক্ষণ হইতে ব্রাক্ষসমাজ মুক্তি লাভ করিবেন।

ব্রাহ্মগণ। ব্রাহ্মসমাজের এই সকল উৎ-কৃষ্ট ভাব আপনাদের অগোচর নাই; বর্ত্তমান সমর আপনাদের সর্বাংশেই সহায়তা করিতে প্রস্তুত আছে; সর্বাক্তিমান্ ইম্বর আপ-

নামের রক্ষুধে; আপনাদের সংখ্যাও নিতান্ত জাপ নয়: কর্ম-ক্ষেত্রও সমুধে বিস্তৃত; আর কত কাল পরস্পর মুখ নিরীক্ষণ করি-বেন ৷ আর কত কাল উদাসীন হইয়া থাকি-বেন; যে বৎসর চলিয়া গেল, তাছা জব্মের মত विषाय इरेल; त्य वदमत आमिरक्टर, रेशंत জন্য সতর্ক হওয়া এখনও আমাদের ক্ষম-তার মধ্যে আছে ; যে ব্রাক্ষসমাজের উপর আপনাদের মদল নির্ভর করিতেছে, আপ-नारमत वर्भभतत्भतात मनल निर्वत क्रिटिट्ह, म्बर्धे खाक्तमभारकत উन्नजित कमा এ वर्षत কি করিবেন ? ত্রাহ্মসমাজ ! এই আশা-হীন নিরুদাম প্রম-কাতর তীরু ছংস্থ বন্দদেশ ভোমাকে ধারণ করিতে পারে না। অথবা ভোমারই প্রসাদে বন্ধ দেশ, ভারতবর্ষ শোচ-নীয় দশা হইতে মুক্তি লাভ করিবে। হে ঈশার ভোমার ইচ্ছাই সম্পন্ন হউক।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

#### ব্ৰকোপাসনা ৷

ব্ৰহ্মাবৰ্জঃ মহৰ্মি বাল্যীকির তপোৰন বসস্ত কাল ১১ ফাল্স্কন ১৭৮২ শক।

কি নিভৃত স্থান! কি শান্তি ভাবে পরিপূর্ণ! মনোমধ্যে কি প্রগাঢ় শান্তিরসের আবির্ভাব হইভেছে। এই মহা প্রাচীন ভপোবনে প্রবেশ কালীন আমারদিগের স্বর

১ ব্রহ্মাবর্ত্ত অর্থাৎ বিঠুর প্রাম, কানপুরের অতি
সন্নিকট। এই রূপ প্রবাদ আছে যে ঐ ছানে
মহর্ষি বাল্মীকি বাস করিতেন। অদ্যাপি লোকে এক
বিশেষ বনকে ওাঁহার তপোবন বলিয়া নির্দেশ
করে। উহার অনতি দূরে সীতা-পরিহার নামে
এক ছাল আছে, লোকে বলে বে ঐ ছানে সীতাকে
দক্ষ্মণ পরিত্যাগ করিয়া যান। ঐ ছানে পরিহারমন্দির নামে একটা অপুর্ব্ব মন্দির আছে। কত
নাজ পরিবর্ত্তন ইইয়াছে কিন্তু এই তপোবন অদ্যাপি বিদ্যমান আছে; কোন অন্ত্যাচারী মুসলমান
নিক্ষা অপ্রা ছুআমী ভাছা লগ্পা করিতে সাহস

সভাৰতঃ মৃত্ব হইয়া আসিল। বোধ হই-তেছে যেন তপংস্বাধ্যায়-নিরত মহর্ষি বালী-কির আত্মা অন্যাপি এখানে সঞ্চরণ করি-তেছে। যথন আমরা মনে করি যে তিনি এই তপোবনে রামায়ণের প্রারম্ভে পরিকী-র্ত্তিত যে অঞ্চ, নিগুণ, গুণাত্মকু লোকধারী পুরুষের উপাসনা করিতেন, আমরা অদ্য এখানে প্রায় পঞ্চ সহস্র বৎসর পরে সেই নিরতিশয় মহান্ পুরুবের উপাসনা করি-তেছি। যখন আমরা মনে করি যে তিনি যে उक्क नाम উচ্চারণ পূর্বক ঈশরের উপাসনা করিতেন, সেই নাম উচ্চারণ পূর্বক আমরা এখনও উপাসনা করিছেছি। যথন আমরা विद्वा कति य. य उन्निवरमत स्नोक-সকল তিনি পাঠ করিয়া ব্রহ্মানন্দ রস পান করিতেন, সেই সকল উপনিষ্টার স্লোক আ-মরা পাঠ করিয়া অদ্য দেই ব্রহ্মানন্দ-রসপান क्रिटिंह, उथन आभाविमर्गत मरन कि বিষ্ময়-রদের আবিষ্ঠাব হয়, ইহাতে বোধ হইতেছে যে যাবৎ গিরি ও ভ্রোভঃস্বতী সকল মহীতলে স্থিতি করিবে, তাবৎ ব্রহ্ম নাম তাবৎ প্রকৃত হিন্দু ধর্ম এই ভারত মণ্ডলে বিদ্যমান থাকিবে। যখন আমরা বিবেচনা করি যে, যে সকল গভীর মহোক্ষ সত্য-ভাব-প্রতিপাদক শব্দ আমারদিগের প্রাচীন ঋষিরা হিমবৎ গুহাদি হইতে নিঃসারণ

করে নাই। উপাসনা কার্যা ছুই প্রহরের সময়ে তপোবদের অভ্যন্তরে পিলু রক্ষের সিম্ব ছায়ায় সম্পাদিত হইয়াছিল; সেই দিবস বৈকালে তাছার অনতি দূরে গঙ্গাতীরে বাল্মীকির কবিত্ব শক্তি বিষয়ে বক্তৃতা হইয়াছিল। এই পিলু রক্ষ আর্যাবর্তের অপর ছুই এক তীর্থ ছাম বাতীভ জায়া কোম ছামে দৃষ্ট হয়না। তপোবদের রক্ষ সকল দেখিলে স্পান্টই বোধ হয় বে কালক্রমে তাছারদের শাখা সকল কাতে পরিণত ছইয়াছে। এই বক্তৃতাত্ব-রের অন্তর্গত জানেক শব্দ ও বাক্য বাল্মীকির রামায়ণ হইতে পরিগৃহীত ছইয়াছে।

পূর্বক ঈশরের উপাদনা করিতেন, সেই সকল শব্দ উচ্চারণ পূর্বক আমরা এখনও ঈশ্বরের উপাসনা করিতেছি—তথন স্বদেশ-প্রেমাগ্রি আমারদিগের হৃদয়-মধ্যে কি ৰূপ প্রজ্বলিত হইয়া উঠে। হে ত্রাহ্মগণ! ইহা তোমারদিগের পৈতৃক ধন; এই পৈতৃক ধনকে তোমরা কথন অবহেলা করিও না। এই পৈতৃক ধনের সাহায্য লইয়া ত্রাহ্মধর্ম প্রচারে যত্নবান্ হও, তাহা হইলে অচিরাৎ ব্রাহ্মধর্মের আধ্যাত্মিক জয়পতাকা ভারত-রাজ্যে উভীন হইবে। ঈশ্বর-শ্বৰূপ-প্রতিপাদক এ ৰূপ বাক্য অন্য কোন জাতির ধর্ম-গ্রন্থে প্রাপ্ত হওয়া যায় না। আমারদিগের দেশের বৈষ্ণবদিগের ধর্মগ্রন্থে যেমন বৈকুঠের কথা আছে, তেমনি অন্য অন্য জাতির ধৰ্ম-গ্ৰন্থে এ ৰূপ উল্লেখ আছে যে প্রমে-শ্বর সর্বস্থান অপেক্ষা এক বিশেষ স্থানে অধিকতর প্রকাশমান আছেন। উপনিষদে ঈশ্বর-শ্বৰূপ সহস্বে এ ৰূপ হীন ভাব দৃষ্ট হয় না। উপনিধৎকারেরা বলিয়া গিয়া-ছেন যে ঈশ্বর "বিভূং সর্বগতং সুস্থক্ষাং"। ঋষিরা বলিয়া গিয়াছেন যে ঈশ্বর জ্ঞান শ্বৰূপ ও মঙ্গল স্বৰূপ কিন্তু সৃষ্ট মনের গুণ সকল তাঁহাতে কিছুই নাই। তাঁহারা বলিয়া গিয়াছেন যে ঈশ্বর "অমনো২ তেজক্ষ-ৰপ্ৰাণ মমুখ মমাত্ৰং" "তিনি মন রহিত তেজ রহিত, প্রাণ রহিত, মুখ রহিত, উপমা রহিত" এ ৰূপ মহোচ্চ তাবে অন্য কোন জাতির ধৰ্ম-বক্তা উত্তীৰ্ণ হইতে পারেন নাই। "সত্যং ক্সান মনন্তং ব্ৰহ্ম "যভোবাচো নিবৰ্ত্তন্তে অ-প্রাপ্য মনসা সহ" এই সকল অপ্রমেয় গভীর ভাব-পূর্ণ্য বাক্য ঘাঁহার৷ উচ্চারণ করিয়া গিয়াছেন, ঘাঁহারা দেই সকল বাক্য-প্রতি-পাদ্য পরমেশ্বরের প্রতি এমত প্রীতি প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন যাহা অন্য লোকে প্রকাশ कतिरा नमर्थ इस ना, टीहाता कि महान्या

ব্যক্তি ছিলেন! সেই সকল শাস্ত গন্তীর-প্রকৃতি মহাস্কাদিগের যে দোষ থাকুক না কেন তাঁহারদিগের কতক গুলিন অসাধারণ গুণও ছিল। তাঁহারদিগের চারিটী গুণ অনুকরণ করিবার যোগ্য। প্রথমতঃ শ্ববিরা ঈশ্বনগত-প্রাণ ও ঈশ্বনগত-চিত্ত ছিলেন: তাঁচারা প্রমান্ধাতে ক্রীড়া ও প্রমান্ধাতে রমণ করিতেন : তাঁহারা ঈশ্বরের সহিত আত্মার নিগৃঢ় যোগ সম্পাদনে অতীব যতু-বান্ছিলেন। তাঁগারা ঈশ্বর-শ্বরণকে নি-শ্বাস প্রশাসবৎ সহজ ও স্বভাব-সিদ্ধ করিতে চেষ্টা করিতেন। আমাদিগেরও এই ৰূপ योग मल्लामत्न यञ्जवान् इ७ या कर्डवा। পরমাত্মার সহিত সকল বস্তুর স্বাভাবিক যোগ আছে; তিনি যদি আপনাকে সকল বস্তু হইতে পৃথক করিয়া লয়েন, তাহা হইলে এখনই সকল বস্তু বিনাশ-দশা প্রাপ্ত হয়। সেই আত্মার আত্মার সঙ্গে আত্মারও স্বভা-বতঃ নিগৃ যোগ আছে। পরমাত্মা যদি জীবাত্মা হইতে আপনাকে পৃথক করিয়া লয়েন, তাহা হইলে জীবান্ধা এখনই বিনাশ-দশা প্রাপ্ত হয়। সচরাচর যাহাকে যোগ বলে, তাহা আর কিছুই নহে, কেবল পরমে-শরের সহিত জীবাত্মার যে স্বাভাবিক যোগ আছে, তাহা উজ্জ্বল ৰূপে সর্বদা অনুতব করা। কিছ এই ৰূপ যোগ অভ্যাস করিতে গিয়া যেন আমারদিগের অন্যান্য মহান্ कर्डवा नकल विमाष्ट ना इहै। आभात्रिमदशंत मत्न यन এই मठा मईना जागकक थारक যে সংসারই সমাধির পরীক্ষা-ক্ষেত্র। সাং-मातिक कार्या मन्नामन कारल यपि क्रेस्त-স্মরণ আমারদিগের মনে প্রদীপ্ত থাকে, তবে তাহাই যথার্থ যোগ। এ বিষয়ে ভ্রেষ্ঠতম খাৰিরা যাহা কহিয়া গিয়াছেন, তাহাই করা কর্ত্তব্য "আজক্রীড় আত্মরতি ক্রিয়াবানেষ ब्रक्षविषाः वित्रिष्ठः " यिनि श्रत्रभाषाटक कीड़ा করেন, বিনি পরমান্ধাতে রমণ করেন ও সংক্রিরাস্থিত হয়েন, তিনি ত্রন্ধবিৎদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ।

দ্বিতীয়তঃ ঋষিদিগের ন্যায় আমারদিগের শান্ত প্রকৃতি হওয়া কর্ত্তব্য। শান্ত সমাহিত না **হ**ইলে **ঈশ্**র-স্বরূপ আত্মাতে এতিতাত হয় মা। আমারদিগের ছরন্ত ছম্পুরুত্তি সক-लाक प्रमा मा कदितल आमता कथमरे क्रेय-রের সন্নিকর্ষ লাভ করিতে সমর্থ হইব না। যদি আমরা প্রবৃত্তি-স্রোত ছারা সর্বদা নীয়-मान इहे, তবে আমরা ঈশরের অধীন কি ৰূপ হইতে পারি? ঋষিরা পুনঃ পুনঃ বলিয়া গিয়াছেন শাস্ত সমাহিত না হইলে কেবল প্রজ্ঞান দারা ঈশ্বরকে কখনই প্রাপ্ত হওয়া যায় না। "নারিরতো ছুক্রিতালা শান্তো নাসমাহিতঃ না শান্তমানসোবাপি প্রজ্ঞানেমৈনমাপ্রুয়াৎ "। ঋষিরা ঈশরকে প্রিয় রূপে উপাসনা করিতেন কিন্তু শান্ত-ক্রপে উপাসনা করিতেন। ঈশ্বরের প্রতি তাঁহাদিগের অসামান্য প্রীতি ছিল। তাঁহারা ঈশবের জন্য ধন মান সকলই পরিত্যাগ করিয়াছিলেন কিন্তু তাঁহারা ঈশরকে শান্ত-ৰূপে উপাসনা করিতেন; তাঁহারা বলিয়া গিয়াছেন " প্রিয়মুপাসীত " কিন্তু " শান্তমু-পা**সীত** "! इंहा यथार्थ वर्षे ए श्रथमण्ड ঈশবের প্রতি প্রীতি অতান্ত উষ্ণ রূপ ধারণ করে: এমন কি উপাসককে উন্মন্ত করিয়া কেলে। কিন্তু ষতই প্রীতি প্রগাঢ় ও পরি-পকু হয়, ততই তাহা উষণ তাব পরিত্যাগ করিয়া শাস্ত ভাব ধারণ করে। প্রিরের সঙ্গে প্ৰথম প্ৰণয়-কালে প্ৰীতি কি উষ্ণ ৰূপ ধারণ করে ৷ কিন্তু যতই তাঁহার এতি প্রীতি বর্দ্ধিত হইতে থাকে, যতই তাহা কাল সহকারে প্রগাঢ় ও পরিপকু হইতে থাকে, ততই তাহার উষ্টা ভিরোহিত হয়। বন্ধুর প্রতি প্রীতিও চ্ছাপ জানিবে। জভিনব প্ৰীতি এক ৰূপ

পরিপক প্রীতি অন্য রূপ। ঈশর শান্ত-স্বৰূপ: যদি আমারদিগের প্রকৃতিকে ঈশ্বর-সদৃশ করা ধর্ম্মের চরম লক্ষ্য হয়, তবে শাস্ত-স্বৰূপ ঈশ্বরকে শাস্ত ভাবে উপাসনা ক্রা বিধেয়। শান্ত ভাবে সর্বদা ঈশরের মাধুর্যোর গাঢ় আস্বাদনই ঈশবের প্রকৃত উপাসনা। কোন ঋষি এই ৰূপ উক্তি করিয়াছেন যে. "নিস্তরকোতি গম্ভীরঃ সান্ত্রানন্দসুধার্ণরঃ। মা-ধুর্যোক রসাধার এক এবান্তি সর্বতঃ"। ঈশর নিস্তরঙ্গ অতি গম্ভীরং নিবিড় আনন্দ-স্বৰূপ, সুধা-সমুদ্র, মাধুর্য্য রসের এক মাত্র আধার ও সর্বস্থানব্যাপী। যাঁহার হৃদয় হইতে এই শ্লোক নিঃসত হইয়াছিল, তিনি কি ৰূপ क्रियंत- १ भी ना हिटलन। क्रियंत मुधा-म्रमूख ও মাধুর্য্য রসের এক মাত্র আধার যিনি এই বাক্য উচ্চারণ করিয়াছিলেন, তিনি ঈশবের মাধুর্য্য কি ৰূপ আস্থাদন না করিয়াছিলেন। य गर्शि वरे स्भाक त्राना कतिशाहित्नन, তাঁহার নাম বশিষ্ঠ: তিনি কত বার এই তপোবনে আগমন করিয়া মহর্ষি বালীকির সহিত ব্রহ্ম প্রসঙ্গ করত ব্রহ্মানন্দ-পীযুষ পান করিয়াছিলৈন; আমরা কুদ্র ব্যক্তি হইয়াও এখানে সেই প্রসন্ধ করত সেই পীয়্ব পান করিয়া ক্লভার্থ হইতেছি।

তৃতীয়তঃ মহর্ষিরা যশস্থা-পূন্য ছিলেন, ভাঁহারদিগের যশস্থা-পূন্যতা আমারদি-গের অনুকরণ করা অতীব কর্ত্ব্য। আমরা সংবাদ পত্ত্তে কোন প্রস্তাব লিখিলে আমরা সেই প্রস্তাবের লেখক ইহা লোককে আনাই-বার জন্য কতই ব্যগ্র না হই, কিংবা বক্তৃতা করিয়া প্রশংসা-স্থাচক যথেষ্ট করতালি প্রাপ্ত না হইলে আমরা কতই ক্র না হই, কিন্তু মহর্ষিরা এই রূপ যশোলোলুপ ছিলেন না, ভাঁহারা আপনারদিগের নাম না দিয়া কতই প্রস্থা রচনা করিয়াছিলেন। কত ধর্ম-কর্ত্তার সংক্ত ভাবায় আছে, যাহাতে গ্রন্থ-কর্তার कान नाम नारे। यहर्षिता याणत कानाका कित्राज्य ना, ठीराता काराती याणत कना गाकूल शिलन ना, काराज्य मनल नाधन रहे-लारे ठीराता माखाय लाज कित्राज्य। कित्म काराज्य यथार्थ मनल नाधन रहा धारे विषया ठीरात्र निरात सम हिल ; स्म-चूना मनुवा काथाय चार्ट ? किन्न काराज्य मनल नाधनरे ठीरात्र निरात कार्यात धक मांख छेटक्ना हिल, हेश काराग चीकांत कित्र हरेदा।

চতুর্থতঃ শ্ববিরা আড়য়র-প্রিয়তা-শ্না ছিলেন। তাঁহারদের উপাসনায় আড়য়র ছিল না। উপাসনা কার্য্যে যতই বাহ্যাড়য়র য়ৃদ্ধি হইবে, ততই আধ্যাত্মিক পবিত্রতার প্রতি লক্ষ্য না থাকিয়া কেবল বাহ্যাড়য়রের প্রতি লোকের মনোযোগ বদ্ধিত হইবে। ঈশ্বরে চিত্ত সমাধান করিয়া তাঁহার মাধুর্য্য ক্রমাগত আস্থানন করার সলে বাহ্যাড়য়র সলত হয় না। উৎসব কার্য্য-সম্পাদন জন্য কিছু কিছু উৎসবের চিত্র আবশ্যক করে বটে, কিন্তু বাহ্যাড়য়র যতই অম্প হয় ততই ভাল।

য়বিদিগের এই সকল গুণ অনুকরণ করিতে গিয়া তাঁহাদিগের দোষ শঅনুকরণে যেন আমরা প্রবৃত্ত না হই; শান্তভাব অবল্লমন করিতে গিয়া লোক-সমাজের প্রতি আমারদিগের মহান্ কর্ত্তবা সকল যেন আমরা বিস্মৃত না হই। শ্বনিরা লোক-সমাজ পরিত্যাগ করিয়া কেবল ঈশরের প্রবৃণ, মনন, ও নিদিধ্যাসনে নিমৃক্ত থাকিতেন। কিন্ত তাল্বধর্ম আমারদিগকে উপদেশ দিতেহেন যে যেমন ঈশরকে প্রীতি করিতে হইবে, তেমনি তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধনও করিতে হইবে। এই তুইএর সমন্বয় অতি ক্রিতে হইবে। এই তুইএর সমন্বয় অতি

হে নিস্তরক অতি গঙীর শান্তি-সমূদ্র! হে নিবিড়-আনন্দ-শ্বৰূপ! হে সুধা-পারা-

বার ৷ হে মাধুর্য রদের এক মাত্র আধার ৷ তোমার প্রতি আমারদিগের মনকে আকর্ষণ কর, যাহাতে আমরা তোমার সহিত আত্মার নিগৃঢ় যোগ সম্পাদন করিতে পারি, যাহাতে ভোষার মনন নিশাস প্রশাসের ন্যায় আমার্দিগের সহজ ও স্বভাব-সিদ্ধ হয়, এমত ক্ষমতা আমার্রদিগকে প্রদান কর। হে "শান্তং শিবমধৈতং" আমারদিগের মনে অপার শান্তি প্রেরণ কর; ছুরস্ত ইন্দ্রিয় সকল আমারদিগকে গ্রাম করিতে আসি-তেছে, আমারদিগকে রক্ষা কর। ঋষিদিগের বলবৎ ক্ষমের উপর তুমি অপেকারত লঘু-ভার অর্পণ করিয়াছিলে, কিন্তু আমারদিগের ক্ষীণ ক্ষন্তের উপর তুমি অতীব গুরুতার অর্পণ করিয়াছ। কি ৰূপে ভোমার প্রতি প্রীতি ও তোমার প্রিয় কার্য্য সাধনের সম-শ্বয় সম্পাদন করিব এই চিন্তাতে আমরা আকুল হইতেছি। এক এক বার সংসারের ভীষণ তরঙ্গ দেখিয়া যথন আমরা ভয়েতে <u> অিয়মাণ হই, তখন বোধ হয় যে ঋষিরা</u> সংসার আশ্রম পরিত্যাগ করিয়া এক প্রকার ভালই করিভেন; কিন্তু লোক-সমাজের প্রতি আমারদিগের মহানু কর্ত্ব্য যখন স্মর্ণ করি, তথন লোক-সমাজের দিকে আমারদি-গের মন অভিশয় হেলিত হয়। হে নাথ! আমরা বিষম শকটে পতিত হইয়াছি; আমারদিগের কীণ কন্ধ এ ছংসহ ভার সহ করিতে অক্ষম হইতেছে কিন্তু আমারদিগের ক্ষমকে কেন আমরা ক্ষীণ মনে করিতেছি ? যথন তুমি আমারদিগের প্রতি ঐ ভার অ-র্পণ করিয়াছ, তথন অবশা আযারদিগকে উপযুক্ত वल अमान कतिरव । ज्यामात्रिमरभव চিত্ত যেন সর্বাণ ভোমাতে সমর্গিত থাকে। দিক্ যন্তের শলাকা যেমন উত্তর দিকে সর্বদা লক্ষিত থাকে, সেই ৰূপ আমারদিগের আলা যেন সর্বদাই ভোমার দিকে লক্ষিত থাকে। হে জীবন-সমৃত্যের ধ্রব তারা।
তামার জ্যোতি দর্শন করিয়া জীবন-সমৃত্যে
বেন আমরা পোত পরিচালনা করিতে সমর্থ
হই। ধনি পোতের কম্পিত ভাব বশতঃ
কেই জ্যোতি আমরা জীবন-সমৃত্যের উপর
কম্পিত ভাবে দর্শন করি, তথাপি তাল যেন
কখন আমারদিগের দৃত্তি পথের বহিভূতি
না হয়।

#### **७ अक्टमवाविछी**शः।

## বাল্মীকির অক্ষয় কীর্ত্তি।

ব্ৰহ্মাৰৰ্জে গন্ধাতীৰে সীতা পৰিচাৰ নামক স্থানেৰ নিকটে ৰন্ধুপণেৰ প্ৰতি কোন কাৰ্যানুৱাগী ব্ৰাচ্ছেৰ উদ্ভি । ১১ স্থালগুল ১৭৮৯ শক ।

বন্ধুগণ! আমরা কি মনোহর স্থানে একণে উপবিষ্ট আছি ! সম্মুখে সজ্জনগণের मरनत्र नाम निर्माल त्रभगीय व्यमसाम्, शकानणी मन मन लश्ती-लौला विश्वात कत्र अवाहिष्ठ হইতেছে। পার্শ্বে মহর্ষি বাল্মীকির তপো-ৰন শোভা পাইতেছে। ও দিকে যে স্থানে সীতাকে লক্ষ্মণ পরিত্যাগ করিয়া যান, তৎ-স্থান-স্থিত মন্দির নয়ন-গোচর হইতেছে। চতুর্দ্ধিক হ স্থান ভূতকাল সম্বন্ধীয় কত রম-ণীয় ভাবের সঙ্গে সংজড়িত রহিয়াছে। নিকটক তপোবনে তপংস্বাধ্যায়-নিরত মহর্ষি বাল্মীকি ঋষিগণ-সেব্য অনিৰ্বচনীয় অতীক্ৰিয় পরব্রন্ধের উপাসনা ও তপস্যা করিতেন। তিনি এই তপোবনে বীর ও করুণ-রসের প্রাক্তাল-প্রদর্শক অবিনশ্বর মহাকাব্য রামা-युव अवयुन कतियां हिटलन । धक्या वान्तीकि करे चारमञ्ज व्यविष्टुदत उभमा नमी औरत छत्-ছাজ শিষ্য সমভিব্যাহারে গমন করিয়াছি-লেন। তথায় অফর্দ্ধ্য তীর্থ দেখিয়া স্রোত-च्छीत्र निर्मल कदल व्यवशीरत्मत्र व्यादशासन क्रिया श्राप्तित शृद्ध यथन नणीकीत्रक् विश्वन ধ্বে বিষয়ণ করিতেছিলেন, তখন চারু-দর্শন

क्लीक-विश्वन वर्गन कतिरलम ; अक रेवत-मि-লয় ব্যাধ তাঁহার সন্মুখে ক্রেনিঞ্চকে বাণ ছারা বিশ্ব করিল; ক্রৌঞী পতির শোণিত-পরি-লিপ্ত অস মহীতলে চেন্ট্যান দেখিয়া চীৎকার क्रिटि लाशिल: (वांक्रमामाना क्लोक्षीक বিলাপ-ধনি অবণ করিয়া সর্বভূত-হিতা-কাজকী দয়ার সাগর ধর্মাঝা মহর্ষির মনে कांक्रगा तरमत मधात इहेल. कश्क्रगार खहे শ্লোকটি তাঁহার মুখ ছইতে বিনিঃসৃত হ-ইল "মা নিযাদ প্রতিষ্ঠাং ব্যগমঃ শাশতীঃ मभाः। यद क्लिक्षिभिषुनारमक्यवधीः काम-মোহিতং॥" হে বাাধ। তুই চির কাল প্রতিষ্ঠা লাভ করিতে সমর্থ হইবি না, যে ভেতু কাম-মোহিত ক্রে)ঞ্চ-মিথুনের একটাকে ভূই বি-নাশ করিলি। এই অনুষ্ঠুপ্ছন্দের শ্লোকটী সংকৃত ভাষায় রচিত প্রথম শ্লোক; এই লোকটা অন্য লোক শিখাইবার পূর্বে দর্ব প্রথমে আমারদিগের সন্তানদিগকে শিক্ষা করাই। এই ছন্দে মহর্ষি বাল্মীকি রাজা রামচন্দ্রের আশ্চর্য্য ক্রান্তি ক্রন্তিন করিবার অভিলাষ করিলেন, তাহাতেই লোক-প্রসিদ্ধ महा कावा जाभाग्रत्वज्ञ मुखि इहेल। जिनि এই মহাকাব্য রচনা করিয়া মহাজ্ঞা মহাভাগ নিয়তে ক্রিয় ঋবিদিগকে কপ-লক্ষণ-বিশিষ্ট-বিনীত সুস্তর সম্পন্ন রাম-প্রতিবিদ্ধ কুশীলব ছারা ইহার গান শ্রবণ করাইলেন। যথন श्विशंग मुक्रमांत कुमात्रष्टतत्र मधुत-कर्छ-वि-নিংস্ত তন্ত্রীলয়-সমন্থিত রামায়ণ গান প্রবণ করিলেন, তথন ওাঁহারা এ ৰূপ সম্ভন্ট হইলেন যে কেহ বা পানীয় কলস, কেহ বা ক্লফাজিন. क्टि वा कम खलू, क्ट वा कछावस्त्रन, क्ट बा कार्ष-त्रकृ. किर वा यद्धस्व गायकिंगिरक উপহার স্বৰূপ প্রদান করিলেন। কেহ বা কেবল বর প্রদান অথবা স্বস্তিবাচন করি-লেন। লোকে গায়কদিগকে কত বহু মূল্য উপহার প্রদান করে, কিন্তু সরল মনে প্রদৃত্ত

ঋষিদিগের এই সকল সামান্য উপহার তাহা হইতে কত ভোঠ প্রাঞ্জল মধুর ভাষায় বির-চিত এই মহা কাব্য যথন আমরা পাঠ করি, তথ্য আমর। কি বিশায়-রসে মগ্রই। রামের জন্ম-ভাঁহার শিক্ষা-দশর্থ-সমীপে বিশামিতের আগমন—যজ্জ-বিঘাতক রাক্ষ-স্দিগের দম্নার্থ রামকে লইয়া যাইবার জন্য দশর্থ-সমীপে বিশ্বামিতের প্রার্থনা-সুকুমার রাজীবলোচন রামকে ছাড়িয়া দিতে দশরথের প্রথমে অনিচ্ছা পরে সম্মতি —হাড়কাবধ—মিথিলায় রামের পূবেশ— তাঁহার ধনুর্ভকের ইচ্ছা—যাহাতে তিনি ধনু-র্ডন্দে সুসিদ্ধ হয়েন তজ্জন্য অন্তঃপুরস্থ সীতার ব্যাকুলতা—ধনুর্জন্ধ—সীতার সহিত রামের পরিণয়—অযোধ্যায় ক্রীর সহিত তাঁহার পুন-রাগমন—রামকে যৌব রাজ্যে অভিধিক্ত ক-রিবার জন্য দশরথের সংকত্প রুক্ষ হইতে পরিচ্যুত লতার ন্যায় ভূতলশায়িনী কৈকেয়ীর অভিমান—তরুণী-ভার্য্যানুরক্ত তুর্বল-চিত্ত বুদ্ধ দশরথের দারা কৈকেয়ীর অন্যায় প্রার্থনা-পুরণ—সীতাকে বনবাদে লইবার জন্য রাম-চক্রের অনিজ্ঞা-পতির কন্টভাগী হইবার জন্য পতিপরায়ণা সীতার একান্ত প্রতিজ্ঞা-বনে রাম লক্ষ্যণ ও সীতার আড়ম্বর-খূন্য মনোহর জীবন নির্বাহ—স্থর্পনখার নাসিকা क्किन-थेत ७ मृष्य वथ-मूर्**ार**क मरक तारमत मेकि मश्चाभन-वालि वथ-तारमत প্রতি বালির ভৎ সনা ও উপদেশ—সীতা-হরণ—দীতা হরণ সময়ে প্রকৃতির নিষ্পন্দতা —ছদর-গতা সীতার জন্য রামের বিলাপ— অশোক বনে সীতার বিলাপ—সেতু বন্ধন লক্ষায় রামের শিবির স্থাপন-বিতী-যণের সঙ্গে রামের অভেদ্য মৈত্রী সংস্থা-প্র-রাম রাবণের মুদ্ধ-কুড়কর্ণ বধ - অ-তিকায় বধ—মকরাক্ষ বধ—বীরবাত্ত বধ— लक्करणत गंकिरगल-इक्क कि वश-महीता-

वर्ग वथ-- त्रावर्ग वथ- गरकाकतीत अहिल ता-**पित्र नाकार — विजीयलंत्र ताजाजित्यक** সীতার উদ্ধার ও অগ্নি-পরীক্ষা—রামের অ-যোধ্যায় প্রত্যাগমন তরতের প্রত্যাদামন — রামাভিষেক—সীতার বনবাস—লবকুশের জন্ম—রামের সন্মুখে লব কুশের ধারা গান-রামের ছারা লবকুশের অভিজ্ঞান—রামের বিলাপ—দীতার পুনঃ-পরীকা ও পাতাল প্রবেশ লক্ষণ বর্জন লবকুশের রাজ্যাভিষেক—রামের স্বর্গা-রোহণ—এই সকল ঘটনার বিবরণ আমরা योवन-नगरत कि উৎमार्-अब्बलिज-िर्छ পাঠ করিয়াছিলাম, এখনও আমারদি-গের মনে তাহা কি উজ্জ্বল ৰূপে মুদ্রিত র্হিয়াছে। বাল্মীকির যুদ্ধ-বৰ্ণন-শক্তি কি অদুত! আমরা যখন তাঁহার যুদ্ধ বর্ণনা পাঠ করি, তখন বোধ হয় যেন আমরা র্থচক্রের ঘর্ঘর শব্দ, বাণের সন্সন্শব্দ, অবের হ্রেযারব, হস্তীর বুংহিত, যোদ্ধাদিগের ছক্ষার শ্রবণ করিতেছি। বিশেষতঃ করুণ-রস বর্ণনে বাল্মীকি অধিতীয় , তিনি এ বিষয়ে নিশ্চয় ৰূপে কবিকুল-রাজা; অন্য কোন কবির সহিত এ বিষয়ে তাঁহার উপমা হয় না। এই আমারদিগের সম্খৃখিত সীতা-পরিহার স্থানে যে সকল ঘটনা ঘটিয়াছিল, ভাহার বর্ণনা চিত্তে কি করুণ-রসের উদ্রেক করে! সে বর্ণনা পাঠ করিয়া অঞা সম্বরণ ক-রিতে পারি না। সেই বর্ণনার শ্বরণ একে তো আমারদিগের মনে জাগৰক আছে: তাহাতে আবার এই স্থান আরো জাগ-ৰক করিয়া দিতেছে। আমি যেন সমুখে দেখিতেছি তরণী, সীতাও লক্ষণকে লইয়া करम करम এ পারে আসিয়া লাগিল: তাঁহারা উভয়ে অবতরণ করিলেন : দীন লক্ষণ ভাঁহার লোকানুরাগ-প্রিয় জােঠ ভ্রাভার নিষ্ঠুর আদেশ গর্ভবতী সীতাকে কি ৰূপে

छा भन क्रतिरवन, धरे ভावनात्र चाकूल स्टेश ভূতলে অধীর হইয়া পড়িলেন, পরে সীতার পুনঃ পুনঃ অনুরোধ বশতঃ সেই নিষ্ঠুর আদেশ তাঁহাকে একান্ত ভগ্ন-চিত্তে জ্ঞাপন कतिएक वाधा इहेरलन । आहा ! अक्चार गिरत वक्राचार्जत नाम इः नह यथन तिह আদেশ সীতা প্রবণ করিলেন, তথন তাঁহার क्रमग्न विमीर्ग इट्रेग्ना जिमि य काल-धारम পতিত হইলেন না, এই আশ্চর্যা। আমি যেন সম্মুখে দেখিতেছি সীতা বলিতেছেন আমি ছুংথেরই জন্য সৃষ্ট হইরাছিলাম, मकलई जामात अपृष्ठे वर्गकः इटेरक्र বোধ হয় পূর্ব জন্মে কোন পতি-প্রাণা স্ত্রীকে তাহার স্বামী হইতে বিয়োজিত করি-য়াছিলাম তজ্ঞন্য আমার পতি আমাকে পরিত্যাগ করিয়াছেন। আমি ভাঁহার কি ক্রিয়াছি যে তিনি আগাকে পরিত্যাগ করি-লেন। আমি তো তাঁহারই, আর কাহাকেও আমি যদি রাজ-বংশ জানিতাম না। छम्दत् धात्र ना कतिजाम, जाहा इहेटल आमि এখনই জাহুবীনীরে ঝাঁপ দিয়া আমার সকল কন্ঠ শেষ করিতাম "। আমি যেন সন্মুখে দেখিতেছি সীতা কিঞ্চিৎ মনের সুস্থিরত। লাভ করিয়া বলিতেছেন, লক্ষণ। শ্বজ্ঞগণকে আমার প্রণাম দিয়া সকলের শক্ষুধে আর্যাপুত্রকে বলিবে পতির হিত দাধন জ্বীর কর্ত্তব্য; আমি এই স্থানে বাস করিয়া তাঁহার লোকাপবাদ অবশ্যই দূর করিব"। আমি যেন সম্মুখে দেখিতেছি লক্ষণ সীভাকে প্রদক্ষিণ ও প্রণাম করিয়া जुननी भूनतारताहन कतिरलन; य भर्यास ना উহা পরপারে সংযোগ হইল সে পর্যাস্ক উভয়ে উভয়কে অনিমিষ-লোচনে নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। আহা। রাজার কন্যা ও রা-कांत्र वशृ हरेसा नीण फित्रकृः थिनी हिटलन; চিরতু:খিনী দীতার ছংখ সারণ করিলে

ष्यक्र मद्रत्व कता यात्र ना । वान्तीकि अहे সকল করুণ রসের ব্যাপার অন্তত কবিস্থ সহকারে বর্ণনা করিয়াছেন। কবির কি আশ্রুয়া ক্ষমতা: পঞ্চ সহস্রে বৎসর অতীত হইয়াছে বাল্যীকি পর লোক প্রাপ্ত হই-য়াছেন, তথাপি বোধ হইতেছে যে তিনি অদ্যাপি স্বীয় হস্ত দারা আমারদিগের মনের দার উদ্যাটন করিয়া তাহাতে প্রবেশ পূর্বক তাহার উপর সর্বাধিপত্য করিতেছেন— কখন আমাদিগকে বীর রসে স্ফীত করিতে-ছেন, কখন বা চক্ষে অঞ্জল আনয়ন করিতেছেন। তাঁহার মানব-স্বভাব-জ্ঞান কি সুগভীর ছিল। দশরথের তুর্বলচিত্ততা, কৌশল্যার পুত্রবৎসলতা, লক্ষ্মণ ও ভরতের ভ্রাতৃভক্তি: কৈকেয়ীর যৌবন ও সৌন্দর্য্য-মদ, মন্থরার কৌটিল্য, সীতার পতিপরায়-ণতা, বালির অক্ক মহত্ব, সুগ্রীব ও বিভী-ষণের মিত্র-পরায়ণতা, সীতার পতি-ভক্তি, হনুমানের প্রভু-ভক্তি, রাবণের নিরুষ্ট প্রবু-ত্তির প্রবলতা, এই সকল গুণ বাল্যীকি কি আশ্চর্য্য ৰূপে বর্ণনা করিয়াছেন। বিশেষতঃ ওাঁহার বর্ণিত রামচন্দ্রের স্বভাব কি ছাদয়-थाही ७ मत्नाहत ! त्रामठत्स्तत्र त्कवल वक्षी মাত্র দোঘ ছিল; দোঘ-পূন্য মনুষ্য কোথায়? তিনি অভ্যন্ত লোকানুরাগ-প্রিয় ছিলেন, কিন্তু আর সকলই তাঁহার গুণ ছিল। রাম-চন্দ্রের ঈশ্বর-ভক্তি, শৌর্য্য, বীর্ষ্য, সজ্ঞা-বাদিতা,জিতেব্রিয়তা, ও বাগ্যিতা প্রসিদ্ধই আছে। তিনি ধীমান, ধৃতিমান, নীডিমান, প্রতিতা-সম্পন্ন, অদীনাক্স ছিলেন। তিনি সমুদ্রের ন্যায় গঞ্জীর ও হিমালয়ের ন্যায় ধৈর্যাশীল ছিলেন। তিনি সর্বভূতের হিত সাধনে অবিশ্রান্ত রত থাকিতেন। তিনি ছফের দমন ও শিষ্টের পালন কার্য্য এই প্রকার সুচারু ৰূপে সম্পাদন করিয়াছিলেন. যে এখনও কোন রাজার প্রশংসা করিতে

इंड्रेटन ट्लाटक वटन त्य आमता त्राम-त्रांटना वाम कतिरुक्षि । धार्मिरकता घरमत सना भन्म कर्म करवम मा किछ छारावनिरगत का-যোৱ খ্যাতি পৃথিবীতে চিরকাল বিদামান थारक। कड मह्य वश्मत हरेल तामहत्व পরলোক আপ্ত হইয়াছেন কিন্তু অদ্যাপি जाहात थाछि व्यवनिमश्रदल प्रमीभागन রহিয়াছে। কৰির কীর্ভিও অবিনশ্বর ! উপ-ধর্ম-পরায়ণ লোকে বাল্যীকিকে কয় জন अयत मनूरवात गर्धा भना करत । वज्ज छेश-ধর্ম দৃষ্টিতে তিনি চিরজীবি নহেন কিন্তু আর এক দুষ্টিতে তিনি চিরজীবি; তিনি যশঃ-मुधाशात्म हिन्नकीवि। स्थायेहे वाध हहे-তেছে যে তিনি এই ৰূপ অমরত্বে প্রত্যাশা কবিষাছিলেন : তিনি বলিয়া গিয়াছেন থে যাবৎ পিরি ও সরিৎ মহীতলে স্থিতি করিবে ভাৰৎ রামায়ণ-কথা লোকে প্রচারিত ধা-কিবে। ভাহার এই প্রত্যাশা কথন বিফল হইবে মা; যাবৎ গিরি ও স্রোতশ্বতী অবনি-মণ্ডলে হিতি করিবে তাবৎ বাল্যীকি গিরি-সমূতা রাম-সাগর-গামিনী রামায়ণ-ৰূপ महा ननी मर्खाटलाटक विमामान शाकिया कावा-ভূবন পবিত্র ও উর্বুর করত প্রবাহিত হইবে। ইংরাজী সভ্যতা সহস্র পরিমাণে ভারত বর্ষে প্রচারিত হউক না কেন তথাপি बान्गीकित थााठि कथनहे वित्नाभ-मना आश इहेरव ना.। दद्रः ভারতবর্ষ অপেকা ইউদ্নোপ খণ্ডে তিনি আদৃত হইতেছেন ও উত্তরোত্তর আরো অধিক আদৃত হইতে থা-किरवन। हा। करव खान्ना मिर्टशं भरधा বাল্যীকির ন্যায় অসাধারণ কবিত্ব-শক্তি-मन्त्रज्ञ महाकवि छेपिछ इट्रियम ? वाल्यीकि-ৰূপ কোকিল কবিতা-শাখায় আৰুত হইয়া রাম রাম এই মধুরাক্তর কুজন করিয়াছিলেন; আমারদিগের কবি কবিতা-শাখায় আৰুঢ় इदेश डाहा जरभका जमश्था छटन मधुत उका

নাম কুজন করিবেন। তিনি কোন মর্চ্চা রাজার মহিয়া কীর্তন করিবেন না; ভিনি त्नरे भत्रम भूक्तवत्र महिमा कीर्डन कतित्वन, যিনি " রাজগণ-রাজামহারাজাধিরাজ তিভু-वन-भागक आंगाताम "। क्वल व्यवस्था किश्वा माकिशाका. किश्वा त्रिश्हल श्रीश তাঁহার বর্ণনা-ক্ষেত্র হইবে না: অসীম বিশ্ব-রাজা তাঁহার বর্ণনা-ক্ষেত্র হইবে। ভিনি वाल्गीकित नाम गठा घर्षनात जटक चलीक কম্পিত ঘটনা সকল বিমিঞ্জিত করিয়া বর্ণনা করিবেন না; তিনি কেবল সভাই বর্ণনা করিবেন। গ্রহনী হারিকা হইতে এখন-ও কি ৰূপ গ্ৰহ নক্ষতের উৎপত্তি হইতেছে. স্থ্য আর এক দুরস্থ স্থাকে কি ৰূপ প্রদ-ক্ষিণ করিতেছে, উত্তপ্ত ধাজুময় পিগু হইতে পৃথিবী কি ৰূপে বৰ্ত্তমান আকারে পরিণত हरेशार्क, शृथिवीत अन्तत्र चरत जेशमान-রচকের কম্পনা শব্জির অতীত কি অন্ত্ত পদার্থ দকল নিহিত রহিয়াছে, অবনি মুগু-লের উপরিভাগে কি কি আশ্চর্যা পদার্থ नकल चारह, এक किस्तु इट्टेंड चात्र धक কেন্দ্র পর্যান্ত প্রসারিত মহা সমুদ্রের গর্ভে কি কি চমৎকার জীব জন্তু ও উদ্ভিদ্ সকল আছে, তিনি অলৌকিক কবিত্ব শক্তি সহ-কারে এই দকল বর্ণনা করিবেন। \ ভিনি **एम्म (छर्म काल (छर्म ঈग्यरतत अ**जीम तहना সকল অবিনশ্বর কবিভাতে কীর্ত্তন করিবেন। তিনি যেমন নৈস্গিক পদার্থ সকল বর্ণনা করিবেন, তেমনি পুরাইত্তে বিচরিত ঘটনা সকলে ঈশ্বরের হন্ত আমারদিগকে সন্মর্শন क्यारेरवन ; छिनि अहे नकल दिवस वर्गमा-কালে এই ৰূপ মধুর হিতোপদেশ প্রাদান করিবেন যে, লোকের মূন তাহা আবন করিয়া **একে বারে বিযুক্ষ হইবে।** কখন বা বজের ন্যায় ডাঁহার কবিতা তেজনী ও গড়ীয়-খন इरेटव: कथम वा सूमल मान्नठ-हिट्डाल-

म्लिक रोलारित मात्र होश मूलिक रहेर । किनि अङ्ग्रेड क्ल वीण यस वामन कतिया और क्ल शीन कतिरवन य मर्छाटलांक स्वस हरेंग्रा अनिरव। वाभ हरेर यन कान वर्ग लाक वानी एवंद शुक्त शीन कति-एएहन। हा। अपन कवि करव आमात-मिरात मर्था केमिक हरेरवन । कामीयत स्वस्थारे आमात्रमिरात अ अञ्चाना कान मिन शूर्ग कतिरवन।

# সংস্কৃত সাহিত্য।

২৯৬ সংখ্যক পত্রিকার ২২১ প্রতার পর।

ভারত ববীয় গ্রন্থকর্তারা যে সকল विलुख मार्थात উল्लिथ करतन उৎमञ्जाहर ব্রাহ্মণ ভাগের। এই ব্রাহ্মণ গ্রন্থের মধ্যে कडकश्रमि बमापि विमामान बाट्य किख যে সমস্ত প্রস্থ হইতে প্রমাণ উদ্ধৃত করা হইতেছে, কেবল উদ্ধৃত অংশ ভিন্ন তা-टांत आंत्र किছू (मथा गांत्र ना ; हेरा घांता के मकल खन्न स्व कर नगरत हिल, करे মাত্র ভরাত হওয়া যায়। কতকগুলি ঋষি জন্মিয়াছিলেন, ভাহারা জ্ঞান ও কর্ম এবং ছন্দ ও ব্যাকরণ প্র-ভৃতির এক এক স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র প্রান্থ প্রস্তুত করিয়াছিলেন। তাঁহাদিগের ঐ সমস্ত গ্রন্থ ক্ষনপ্ৰতিতে বহুকাল অবিলুপ্ত ছিল। কুমা-রিল কংকন যে "মনুখ্যের ভ্রান্তি ও অসা-বধানতায় এবং কোন কোন গ্রন্থ কর্ত্তা गर्शित এक कार्ल दश्यालाश रखतांत्र के नकल अञ्च निः स्थिष रहेन्रा शिन्ना हा किन्त गर्थन विद्यालना कत्रा गांत्र त्य त्करल দ্রম আতি বছকাল প্রস্থ রক্ষার স্থিতীয় উপায় ছিল, তখন একণে যতগুলি ব্ৰাহ্মণ-अब चारह, उमरशका चिक मश्या अब যে বিলুপ্ত হুইবে, ভাহা নিভাৰ স্বাদ্ধ-

র্যার বিষয় নহে। " কুমারিল বেদের বিলুপ্ত শাখা সকল প্রমাণ স্বৰূপ স্থানার করাতে যে কি বিপদ উপস্থিত হইবে, তাহা বিশেষ স্ক্রম সৃতি বারা অনুস্ক্রান করেন নাই। 'বৌজেরা বে.দার বিলুপ্ত শাখাকে প্রমাণ কপে প্রহণ করিয়া ধর্ম-যুদ্ধে ক্ষমি-দিগের মত খণ্ডন করিতে পারিত। তথাচ তরিষয়ে কিছুমাত্র আশস্কা না করিয়া কুমা-রিল ও আপত্তম স্মৃতিকে প্রাতি-প্রমাণ বারা সমর্থণ করিবার নিমিত্ত বেদের বিলুপ্ত অংশের অপ্তিত্ব স্থীকার করিয়াছেন।

এক্ষণে ইহাই নিৰ্ণীত হইতেছে যে ৰৌদ্ধ ব্রীক্ষের প্রাছর্ভাব এবং স্থার প্রাছ সকল প্রস্তুত হইবার পূর্বে শ্রুতি ও স্মৃতি উভয়ই যে বতন্ত্র ইহা এক প্রকার ত্বির করা হইয়া-ছিল। স্ত্রকালের পূর্বে জনপ্রতিতে এমন কতকগুলি গ্রন্থ প্রচারিত ছিল যে গুলি পরে যে সমন্ত ধর্ম-গ্রন্থ প্রস্তুত হইয়াছিল, তাহার প্ৰমাণ স্বৰূপ বলিয়া গৃহীত হয় এবং ব্ৰাহ্ম-ণেরা যে সকল গ্রন্থকে অলৌকিক বলিয়া স্থী-কার করিয়া থাকেন। শ্রুতি শব্দের প্রক্লুত অর্ধ ব্রাহ্মণগণের অজ্ঞাত ছিল না। তৈত্তিরীয় আরণ্যকে দর্ব প্রথমে আমরা স্মৃতি শব্দ প্রাপ্ত হইয়াছি, কিন্তু এই স্মৃতি কথা তথায় শ্ৰুতি শব্দের যে ৰূপ অৰ্থ সেই ভাবে বাব-হত হইয়াছে। সূত্রেও শ্রুতি ও স্মৃতি উভারের স্বতন্ত্রতা স্বীকার দেখা যায়। আমরা অনুপদ স্থতে ইছার প্রমাণ প্রদর্শন করিতে পারি। এই সূত্র অন্যান্য সূত্র অপেকা প্রাচীন। নিদান হতে শ্রুতিকে স্মৃতি শব্দে উল্লেখ করিয়াছে, এবং পানিমিও আফ্রতি गृতिর বিশেষ বিভেদ নির্দেশ করেন নাই। কিন্ত নিদান স্থাও পানিনি বে অনুপদ इव चरणका थाहीन नरह, अक्था (क्र्र अवीकात कतिए शास्त्रन ना ।

# সানবেদীয় কর্মাস্থপানপন্ধতি।

ভবলেব ভট্ট প্রণীত।

२० मध्यान १८ मृशेत भन्।

### मईक्ष माधातन डेमी हा क्ये।

वांबदसवा नान ।

কংপরে ব্রাক্ষণকে পূর্ণপাতাদি দক্ষিণা প্রদান করিবে। যদি কুশময় ব্রাক্ষণ থাকে, তবে অগ্নি বেউন করিরা তাঁহার নিকটে গিয়া তাঁহার গ্রন্থি মোচন পূর্বক পুনরায় স্বস্থানে উপবেশন করিয়া কুশ কুসুম সহিত জল পাতে হস্ত দিয়া নিম্নোক্র কএকটি সাম গান করিবে। যদি গানে অসমর্থ হয়, তবে বারতার পাঠ করিবেক।

মহাবামদেবাঋষি বিরাজু গাযতীচ্ছনদ ইক্রোদেবতা শান্তিকর্মণি জপে বিনিযোগঃ।

ওঁ ক্যা নশ্চিত্র আভুবদূতী সদার্ধঃ স্থা ক্যা সচিষ্ঠয়া র্তা।

নব গ্রহের হোমে ইহার অর্থ করা হইগ্রহে। ওঁ কন্ত্রা সত্যো মদানাং মংহিষ্ঠো মৎ-সদস্কসঃ দৃঢ়াচিদঃরুজে বসু।

एक हैं खा ! 'काक्षमध' काक्षमा (मांगरमाठि यांबद 'कः' त्रमः 'फां' छार 'बदमद' बखर करताठि किस्तृतः 'मठाः' (मांब यारण क्रिण्यारण क्ष्यम्बादी पूनः किस्तृतः 'ममानार' छ-सांकोनार घरधा 'बरिक्टकः' काठिमारयम समझनकः (यन सदमन सफ खुर 'मृग्रांविद' मृग्रांनि काण 'वस्त्र' वस्त्रिन 'कांक्रस्कः' क्रिक्टकः' क्रिक्टकः ।

হে ইক্স । অবশাদেয়, অতিমাত মদজনক কোন সোমন্ত্র ভোষাকে হর্যস্কু করিবে, বাহাতে মজ হইয়া ভূমি দৃচ্তর ধনসম্পত্তি যজমানকে দিনার বিমিত ভঙ্গ করিতে পারিবে।

ওঁ অভীবৃণঃ স্থীনা ম্বিতা জ্বিতৃণাং শতং ভ্রাস্থাত্যে।

কৈ ইজঃ 'সধীনাং' নিত্রাণাং তথা করিতুশাং ভোতুশাং '
শানিতা' পালবিতা 'ভবাসি' তন 'শতং অভীবুণঃ' থবং
শতধা ভূমা ইত্যৰ্থঃ i 'উতবে' নত্তকার রক্ষণাব।

হে ইক্রা বছ প্রকারে রক্ষা করিবার নিমিত্ত শতথা হইয়া নিত্রগণকে ও স্থোত্রগতক প্রতি-পালন কর।

## ওঁ পতি ন ইজো হক্ষানাং পতি নং প্ৰা বিশ্ববেদাং পতি ন ভাৰ্কোং রিউনেমিং বতি নো হৃহস্পতির্ক্ষাত্ ।

'দুক্ষবাঃ' বৃদ্ধনা বাকাকারী 'ইআঃ' এনঃ' ক্ষাকা বৃদ্ধি শাস্ত্বি দধাতু। 'বিশ্বেদা' 'সর্ক্তকঃ পূবা তথা অনুবীনেমিঃ অন্যাসত গতিপ্রাসরঃ 'তাক্ষ্যি' তথা 'বৃহস্পতিঃ' অস্মাকং কৃতি দধাতু।

রুদ্ধগণের বাকোর বশীভূত ইন্দ্র, বর্জন পূবা, অপ্রভিহতগতি গরুড় ও রুহুম্পতি আন্।-দিগের শান্তি বিধান করুন।

২। তৎপরে কর্মের দ ক্ষণা দান করিয়া অহি-দ্রাবধারণ করিবেক।

সর্ব কর্ম সাংবরণ উদীচ্য কর্ম সমাপ্ত।

#### थनाराम।

যে আছে যথার দেখি তুমি ছে তথার। তোৰার নিগৃঢ় তত্ত্ব কেছ নাহি পায়॥ কারে বা দিতেছ দণ্ড কারে পুরস্কার। দণ্ড পুরস্কার দেখি স্বেহের ব্যাপার॥ সমান কর্মণা তব সকলের প্রতি। একমাত্র তুমি প্রভু সকলের গভি।। অতি সুশৃঙ্ধলা রূপে ওছে সমাত্র। একাকি করিছ তুমি বিশ্বের পালম H কেহ মাহি সহকারি সাহাষ্য করিতে। চির দিন চলিতেছে কার্য্য এক রীতে এক স্থা প্রতিদিন হইয়া উল্লা বিস্তাবে কিরণ-জাল না হয় বাত্যয় ॥ বর্ষে বর্ষে ঋতু গণ করি আগমন। करत क्रगांटजर मन छात्र উद्धावन । বাহার উপরে ভূমি দিয়াছ বে ভার। সে তাহা করিয়া যার নাহি নাতি চার 🛊 व्याना नक्त खरम भगम मश्रम। कांक जरक कांक माहि वार्ष कांमचरल # निर्कितारम निष्क कार्या करत निर्मापन। রাগ দ্বেন নাই যেন সাধুর মতন। বুঝিয়া বিশেষ ধেন তৰ উপদেশ। व्यक्तिमा प्रक्ति छोट शासिक बादका । क्रम्य वक्र द्वम कड काम ध्राप्त । ट्टर मन सम्बद्ध वित्यम मानादम। कि जाकारी अक्रमण किंदूरे सिथित। क्ट्रिके किथित रहन जैनकात्री विटम।

স্বাভাবিক পরিজ্ঞানে করি জালোচনা। করেছ ইক্ষায় কিবা জগত রচনা। कि जीवितन कि कतितन को भल निशम। नमान हिन्दि कार्या नाहि वाठि कम । কডকাল স্বজিয়াছ যত কাল রবে। পুমরায় পরিবর্ড করিতে না হবে।। খন্য খন্য খন্য তব আশ্চর্যা বিচার। ধন্য ধন্য ধনা তব কৰুণা অপার॥ না চাহিতে নিজ হতে দেও কত সুখ। मूर्यंत्र कांत्र कटत द्रार्थं ह ए द्रःथं। কত অপরাধ করি তোমার চরণে। তথাপি কৰণা তব তাই ভাবি মনে ৷ थना ८ प्रमान क्षेत्र निर्दित प्रमान । এখন ভরসা এই উপজিল মনে॥ वामि यपि कृति मक्त भाग धालां ज्या পাইৰ অক্লে কৃল তোমার ম্বরণে। অতএব কিবা আছে প্রার্থনা আমার। কুতজ্ঞতা সহকারে করি নমস্কার।

## নৃতন পুস্তক।

ক্লতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার করিতেছি যে নিম্ন-লিখিত পুস্তক গুলি আমরা প্রাপ্ত হইয়াছি—

১। বিবিধ পুস্তক প্রকাশিকার প্রথম থণ্ড দপ্তম সংখ্যা। ইহাতে মহাকবি কালিদাস-প্রণীত রম্বংশের অফীদশ সর্গের মূল ও বাদলা অনুবাদ এবং মলিনাথ-ক্রত টীকার দশম সর্গের প্রারম্ভ অবধি চতুর্দ্ধশ সর্গের কিয়দংশ পর্যান্ত মুদ্রিত ও আর এম বসু এণ্ড কোম্পানি কর্ত্বক প্রকাশিত হইয়াছে।

২। সমালোচনী। ইহা এক থানি মাসিক পত্রিকা। ইহা বহরম পুর সভারত্ব যন্ত্রে মৃত্রিত হইয়াছে।

৩। তত্ত্ব প্রকাশ। ইহা বারুইপুর নিবাসী প্রদেবেজ্রনাথ রায় চৌধুরী কর্তৃক প্রণীত ও কলিকাতা নিউ বেশল যত্ত্বে মুদ্রিত হই-রাছে। ৪। শিশুর নিতাকর্ম ও নীতি পঞ্চাশহ। ইহা জী দেবীদাস সেন কর্তৃক প্রণীত, চাকা বিজ্ঞাপনী যন্ত্রে মুদ্রিত হইয়াছে।

৫। জ্ঞান রত্ন অর্থাৎ সাহিত্যাদি ও
নীতিপ্রদপ্রবন্ধ মাসিক প্তা। ইহা কলিকাতা গুপ্ত যত্ত্বে মুক্তিত হইয়াছে।

৬। নীতিপাঠ প্রথম ও দিতীয় ভাগ। বালক বালিকাগণের শিক্ষার্থ **এ জ**য়নাথ দাস প্রণীত। কলিকাতা বারাণসী ঘোষের খ্রীট হিতৈবী যজে মুদ্রিত হইয়াছে।

## কলিকাত। ব্রাহ্মসমাজের পুস্ত-কালয়স্থ বিক্রেয় পস্তক।

| साराय है। यह व्यास में अप          | , (        |
|------------------------------------|------------|
| অমুষ্ঠান-পদ্ধতি                    | 10         |
| ব্ৰাহ্মধৰ্ম অথম খণ্ড (চীকা ও বাদলা |            |
| ভাৎপর্য্য সহিত )                   | No         |
| এ প্রথম ও দ্বিতীয় খণ্ড            |            |
| ( नान कान श्रकत्व ),               | 240        |
| সংস্কৃত ব্ৰাহ্মধৰ্ম (টীকা সহিত)    | 10         |
| वाक्रमा उद्याचनम्                  | 10         |
| धे धे विख्या थर्थ                  | 0          |
| बी बी जारभंग महिन्छ                |            |
| हिन्म बाकाभर्य-पितनाभन्न ककदन      | 10         |
| ব্রাকাধর্মের মত ও বিশ্বাস          | n o        |
| बाक्षधर्मात वाथान—खबर्ग श्रकत्र    | Дo         |
| এ এ ছিতীয় প্রকরণ                  | 110        |
| মাঘোৎসৰ                            | 5          |
| ভবানীপুর সামৎসরিক সমাজের বস্তৃতা   | 10         |
| क्तिकाचा बाक्षानगरमञ्जूषा          | 10/0       |
| डाकानमारका वर्ष्ट्र छ।             | into       |
| ताकनाताम वसूत वस्त्र वस्त्र ।      | 110        |
| विश्वा जानागात्मव वस्तृ ।          | 10/4       |
| <b>उद्</b> तिमा ध्यथम थरा          | <b>. 3</b> |
| वे विकीय चर्छ                      | 100        |
| वे क्डोग्र वर्थ                    | 100        |
| তিন খণ্ড একর বাঁধান                | 5110       |
|                                    | • (1)      |

| चारकाश्चर्य विधान                         | 210)0                  |
|---|------------------------|
| वाचारिक उत्कालाग्ना                       | Jo                     |
| उद्भागानमा                                | 10                     |
| उद्यानामना नव्हि                          | 1.                     |
| ত্রন-ব্যেত্র                              | 150                    |
| व्यार्थना अवर मनोज                        | 1.                     |
| আল্লভন্তৰ্বিদ্যা                          | )0                     |
| धर्म-निका                                 | 2.                     |
| পৌত্ৰিক প্ৰবোধ                            | 10                     |
| র্ত্তি সহিত্ত কঠোপনিবৎ দেবনাগর অক্ষরে     | 20                     |
| कीयानद्र উष्मिणा ও छৎमाधरनद्र উপाय        | 20                     |
| विनकारखीय                                 | 20                     |
| धर्मा ठर्का                               | 10                     |
| প্রবচন সংগ্রহ                             | 150                    |
| नश्गील मूकावनी                            | 10                     |
| प्रकार नजीख                               | 10                     |
| ळाच्च मक्कद्री                            | 11 •                   |
| উद्दिश्यनां क्रीत                         | 10                     |
| पृष्ट् कर्मी                              | Jo.                    |
| खाबमाना                                   | 10                     |
| धर्म हीका                                 | 1.                     |
| নীপ্ত-শিরার অভিবেক                        | (>0                    |
| क्रमाध्य                                  | 150                    |
| द्रांक वावस्त्र                           | 1.                     |
| हर्र्शाष्ट्रमं                            | 10.                    |
| । विश्वाना                                | (20                    |
| वे विकीत नर्था                            | 10                     |
|   | $\mathbf{A}\mathbf{s}$ |
| Defence of Brahmoism and the Brahmo Somaj | 4                      |
| Selections from Vaidanta                  | . 2                    |
| Hindoo Theism                             | 1                      |
| Theists Prayer Book                       | . 1                    |
| Signs of the Times                        | . 1                    |
| Vaidantic Doctrines Vindicated            | 2                      |
| Doctrine of Christian                     |                        |
| Ressurrection                             | 2                      |
| Lectures on Patholgy of                   |                        |
| Fever                                     | 1 4                    |
|   |                        |

# কলিকাতা বান্ধ-সমাজের বার্ষিক আয় ব্যয়।

১৭৮৯ শক। বৈশাখ অবধি চৈত্ৰ প্ৰস্ৰাস্ত।

আয় ... ৪৭৪৪। ১০ গত বংলরের ছিত ... ৮৮ ১ ৫

৪৮০২॥ ১৫

বার ... ৪৭২৭ ১৫

ছিত ... ১০৫। ১৫

#### আয়

| ভৰ্ৰোধনী পজিকা   | > | ¢ | 9  | 9 | ŧ | 2 |   | 0 |  |
|------------------|---|---|----|---|---|---|---|---|--|
| शुंखकानम्        |   | 9 | \$ | 0 | 1 | d |   |   |  |
| रक्कांनेय        | > | > | >  | ۵ | Į |   |   | ¢ |  |
| <b>जाक मामूल</b> |   | > | •  | 2 | 1 | 1 |   | ¢ |  |
| मान आश्च         |   | 8 | 0  | 9 | B | J | ۵ | ٠ |  |
| অনিরুগিত         |   | > | 0  | 0 | 4 |   | 5 | 0 |  |
| গৰিত             |   | Œ | Ь  | 9 | H | 1 | > | ¢ |  |

#### 89881 250

#### वास

|                   | 4)  | स |     |     |   |   |    |      |      |
|-------------------|-----|---|-----|-----|---|---|----|------|------|
| ভৰ্বোধিনী পত্ৰিকা |     | > | 2   | >   | ۵ |   | 1  | , s  |      |
| शुक्तकाम्         |     |   | 0   | 9   | æ | į | 0  | >    | c    |
| रजानम्            |     | > | 0   | •   | > | 1 | 0  |      | 2    |
| মাসিক বেডন        | • • |   | Ъ   | 5   | 8 | H | 2  | >    | Œ    |
| डांक मासूत        |     |   | ર   | ٥   | ¢ | 4 | J  |      | 0    |
| আলোক              |     |   | >   | ¢   | 0 |   | 2  |      | ¢    |
| অনিক্লপিত         |     |   | 9   | 9   | • |   | `( | 5    | Œ    |
| গৃহিত             | ٠.  |   | 8   | •   | ٥ | Ħ | -  |      | Œ    |
|                   |     | 8 | 9   | 2   | 9 |   | J  | 3    | ¢    |
|                   |     | 3 | শ্ব | , w | ख | न | 9  | ठे१व | न ।  |
|                   |     |   |     |     |   |   |    | _    | FE I |

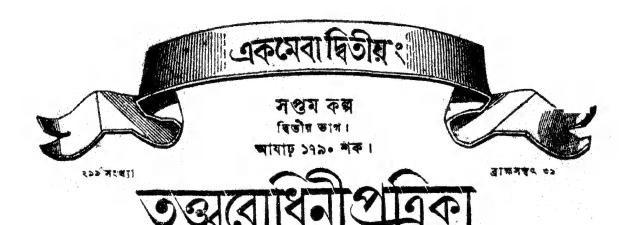
# বিজ্ঞাপন।

আগামী ৯ অ:বাঢ় রবিবার রাত্রি ৮ খন্টার সময় ভবানীপুরের বোড়েশ সাধংসরিক ব্রাহ্মসমাজ ইইবে।

**बिजीमाथ बरम्मानाथात्र** 

# ज्यामीश्र है जाकनमान 🕻

ভত্ববোধনী পত্ৰিকা কলিকাত। ব্ৰাক্ষণৰাজ কইতে আতি নানে একালিত হয়। বৃদ্য হয় আনা। অঞ্জিন বাৰ্থিক বৃদ্য ভিন্ন টাকা। ভাক নাজ্মল বাৰ্থিক বাব আনা। সম্বং ১৯২৫। কলিগভাক ৪৯৬১। ২০ জ্যৈট সোম বার।



ব্ৰহ্ম বাএকনিজনপ্ৰস্থাসী স্থান্য কিন্ধনাসী জনিকং সৰ্কাশসূত্ৰ । তাদেব নিতাং জ্ঞানন্ত শিবং শভক্ষিরবয়বনেক-নেবালি ডাবং সৰ্কাশালি সৰ্কানিয়ন্ত্ সৰ্কাশ্ৰয় সৰ্কাবিৎ সৰ্কাশক্তিনন্ত গ্ৰন্থতিকনিতি। একস্য তলৈ চ্বাণাসন্মা পার্ত্তিকনৈ জিকক শুক্তক্ত্বতি । তল্মিন্ প্রীতিক্তাস্য প্রিয়কার্যসাধনক তদুপাসন্মেব।

# ঋণেুদ সংহিত। 1

ध्यथमम्थनमा प्रकृषिनान्यादक मनमः श्रुकः। भारतम् श्रीयः अञ्चले भूष्ट्यः अश्रीदर्शामा (प्रवर्णा।

31 अभी सामानिमर स्नू त्रं मृग् ठर र्मग्। रवर । প্রতি मृ-ज्ञानि र्यठर ভবতर দাওবে मर्यः।

১। হে কামপ্রদ অগ্নিও সোম। তোমরা আমার এই আহ্বান এবং স্থক্ত সকল সমাক্ অবণ কর। তৎপরে যজমানদিগের সুখদ হও।

20%0

২। অগ্লীবোমা বে। অদ্য ৰাম্দিং বচঃ সপ্ৰতি। তকৈ

# श्रुर कृरीर्गुर गर्गर (शार्र अर्थार।

২। কে 'জন্নীষোমৌ' 'যঃ' বজমানঃ 'জদ্য' আমিম কর্মনি 'বাং' বুবান্ত্যাং বুমুদর্থং 'ইদং' স্তুডিলক্ষণং 'বচঃ' বাক্যং 'সপর্যতি' পুলিতং করোডি 'তদ্মৈ' বজমানায 'গবাং' পল্নাং 'পোষং' অভিবৃদ্ধিং 'ধরং' অবল্পতং কীদৃশং পোষং 'স্থীহ্যং' লোভনেন বীর্ষ্যেণ লামণ্যেন উপেতং। 'স্থাং' গোভনৈঃ অব্যঃ বুক্কং।

২। হে অগ্নিও সোম! যে যক্তমান অদ্য তোমাদিগের নিমিত্ত এই স্তৃতি বাক্যকে সমা-দর করিতেছে, ভোমরা তাহাকে বলসম্পন্ন বহু সংখ্য গোও অশ্ব প্রদান কর ।

৩। অগ্লী ষোমা য আছ তিং যো বাং দাশা জুবিফ্ তিং। স প্রজ্ঞা স্কুবীর্যাং বিশ্বনায় ব্যাগ্রহ।

७। दे 'कतिरवारमे' 'यश' यक्षमामः'वाक्षिर' वाक्षाछिट 'वार' यूर्गाक्षार 'माभाव' मम्माव क्षमा 'हिक्कि छिर'
हरिया एक्ष्युद्धांफामामिमा कृषार व्याक्षिर द्या वक्षमामः
मम्माव 'मः' यक्षमानः 'व्यक्षया' श्रुव्धर'विश्वर'मक्षर 'वायूः' क्षीवनर
'क्षशीर्यार' (मांकन वीर्यायुक्कर'विश्वर'मर्क्यर 'वायूः' क्षीवनर
'याववर' गारकार।

ত। হে অগ্নি ও সোম। যে যজমান ভোমাদিগকে স্থতাহতি ও চরু প্রভৃতির আছতি প্রদান করিবে, সে বল বীর্যা লাভ করিয়া পুত্র পৌত্রাদির সহিত জীবুন অভি-বাহিত করিবে।

2005

## जिये ु श्काः।

৪। অগ্লীষোমা চেত্ত তদ্বীর্য'াং বাং যদমুকীতমবৃসং
পূণিং গাঃ। অবাতিরতং বৃদ্যস্য শেষোংবিন্দত্ং জ্যোতিরেকং বৃহ্ভাঃ।

৪। হে 'জল্লীষোমো' 'বাং' যুবযোঃ 'তং' কক্ষ্যাণং 'বিহি' সামর্থাং 'চেতি' জক্ষাভিজ্ঞাত মতুৎ 'য়ে 'যেন বীর্ম্যেণ 'গাঃ অবসং' গোরূপং জ্বয়ংগিনিং' পণেঃ বিভক্তিব্যুত্তঃ। এতরাম্যে ক্রাং 'অমুফীতং' অপাহার্যাং। তথা 'কুম্মান্য' কৃদিক্ষেন্টনার্থাঃ কুম্মতি সুর্বাং বেইবভীতি কুম্নোহস্ত্রন্থা ভাষা জান্তর্ম্য 'শেষঃ' অপত্যং শেষইতি অপজ্য নাম শিষ্যতে প্রয়ত ইতি যাক্ষঃ। জুন্টু সকাশাং উৎপল্পং বৃত্তং জ্বাতির্ভং' জ্বাধিই অবভির্ভির্বাধকর্মা। প্রাণাপাণ রূপয়ে যুব্বয়ে ব্যুত্তর্মনবৃদ্ধান সামর্থা প্রাণাপাণ রূপয়ে যুব্বয়ে ব্যুত্তর্মনবৃদ্ধান সামর্থা প্রাণ্ডা। তথা চামা্যতে ভক্ষাক্তঃ ক্রত্যানাদলীঘোমি নিরক্রামভাং প্রাণাপাণে বা এনং ভদক্ষিতামিতি। ততঃ বৃত্তবধানজ্বং 'জ্যোভিঃ' দ্যোভ্যানং স্থাং' 'একং' নভানি গক্তং 'বৃত্তাঃ' ক্রনেজ্যঃ বৃত্তনামর্থায় 'অবিন্দতং, অলপ্যাথাং এতং সর্বাং যেন বীর্ম্যেণ ক্রিয়তে জন্মাভিক্ষণত মিত্যুর্থঃ।

৪। হে অগ্নিও সোম! তোমরা যাহা
ভারা পণি নামক অসুর হইতে গোকপ অন্ন
অপহরণ, বৃত্ত বধ এবং বহু লোকের নিমিত্ত
জ্যোতিহ্বান এক মাত্র স্থাকে লাভ করিয়াছিলে, আমরা ভোমাদিগের সেই বল জ্ঞাত
হইরাছি।

3000

৫। যুবমেতানি দিবি রোচনান্যান্নিল সোম সক্ত অধভং।

যুবং সিন্ধৃ রভিশত্তে রব্দ্যাদগ্লী যোমাবমু ধতং গভীতান্।

৫। হে 'সোম' ছং 'অছিঃ চ' 'সক্রছু' সমানকর্মানে। সজ্জৌ 'বুংং' মুনহি 'রোচনামি' রোচমানানি দীপ্যমানানি

'এডানি' অস্মাভিঃ নিশি দৃশ্যমানানি, তারাগ্রহানীনি জ্যোতিংহি 'দিবি' দ্যুলোকে 'অগতং' অধার্যতং । উত্তরার্চস্যমাধ্যায়িকা ইজো বৃত্তং হলা ব্রক্ষহত্যা ভীতঃ
নন্ পৃথিব্যাং বৃক্ষেমু ছীলব্লু চ তাং ব্রক্ষহত্যাং মামার্কাই তাসামপাং ঝিদি রগ্নীবোমান্ডাং লাতেতি। ব্রক্ষহত্যাংশেন পাপেন 'গৃভীত'ন' গৃহীতার আক্রাজান 'সিদ্দুন'
নদীবিশেষান হে 'অগ্নীযোগো' 'যুবং' যুবাং 'অভিশক্তে'
অভিশস্যানাথ অভিতঃ প্রক্টিতাথ 'অবলাথ' তস্মাথ পাপাথ 'অনুক্তং' মুক্তবজৌ। যলা বৃত্তঃ ইস্তেশ হতঃ সন্
নদীযু পথাত ততো মৃত্তন বৃত্তশারীরেণ নদ্যঃ সর্ব্বা দুটা বভূরুঃ। তথাচ উভিন্নিয়কং ইস্তো বৃত্ত মহন্ লোহপোহত্যভ্রিষত। তাসাং যন্মেধ্যং যজ্জিবং সদেবমাসীজদপোদক্রান্নিভি। তেন দোষেণ গৃহীতা নদীঃ তৃত্যাথ দোষাথ অগ্নীযোগী সৃক্তাত্তী।

৫। হে সোম! তুমি ও অগ্নি তোমরা উভয়ে তুল্য কর্মা হইয়া এই জ্যোতিষ্ক মণ্ড-লীকে আকাশে ধারণ করিয়াছ। হে অগ্নি দোম! তোমরা পাপাক্রান্ত সিন্ধু নামক নদী সকলকে সর্ব্বি ব্যাপ্ত পাপ হইতে মোচন করিয়াছ।

2028

৬। আন্যং দিবে। মাতুরিশ্ব। জভারানথাদন্যং পরি শ্যেনো অদেঃ। অগ্লীবোনা বন্ধানা বাব্ধানোকং যুক্তার্য চক্রথুরু লোকং। ১। ৬। ২৮।

 । ८० 'काबीटबाटमी' यून्टयार्बाटका 'कानार' करूर क्रिक्त 'মাঙরিখা'বাযুঃ 'লিবঃ' দুলেলাকাৃ-, 'আজেভার' ভূগৰে যক্ষানায আজহার। তথাচ মক্তাস্তরং দিজন্মানং রহি-মিব প্রাণত্তং রাতিং ভর ভুগবে মাতরিবেতি। 'শোমঃ'. শংসনীয়গতিমান পক্ষী পক্ষ্যাকারা পায়তী 'অন্যং' মোনং 'অন্তেঃ পরি' নেরোরাপরি কাবস্থিতা ২ 'দিবঃ' অর্গাৎ 'জাম-थांद' वलामाक्ष उन्जी। अवर महानू जारवी धूनार 'जुक्कना' यस्। मचतराम (छार्ताम इतिलंकातमारस्य वा 'वाद्धांमा' वर्कमादनी यूर्वार 'यञ्चाय' काटमासार दानवादा बानास 'छक्र' विकीर्व 'त्नाकर' कृमर 'ठक्कशू:' कुछवरको। क हैटजाज्य शांमशूर्वनय काकाखान तमन्त्रत्याः कादीरंगामत्या-क्षज्यार्क पिक्किशर्करवार्ष्यरः । उत्तरधा स्वता देवनञ्जानि नर्वाणि इतोश्वि वृष्ट्याः । जन्मश्रामः श्रामः अतिरयाम-कुछर। उथांक टेजिकशियकर बाळाटना वा कटली दमवानार श्वन्तीरबामावखना स्वत्वा देरकारक स्वत्वांनार विश्वता \$ @ 101 + 1 50 1

৬। হে অগ্নিও লোম। বায়ু ছালোক হইতে অগ্নিকে এবং প্রক্যাকার। গায়ত্রী সুমের পর্বতের উপরি অবস্থিত স্বর্গ হইতে সোমকে হরণ করিরাছিলেন। তোমরা অন্ন বারা পরিবর্দ্ধিত হইয়া যাগের নিমিন্ত বিস্তীর্ণ স্থান প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছ। ১। ৬। ২৮।

# ধর্মা ও ত্যাগ স্বীকার। কলিকাতা ত্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা। বুধবার ১৫ কৈটে ১৭৯০ শক।

" এখানে ধর্মের জন্যে তে দুঃখ সন্থা করিতেই ইইবে, বিসদকে ডো আলিজন করিতেই ইইবে, ত্যাগ তো স্থাকার করিতেই ইহবে। এমন ফি, সক্ষট বিশেষে, সময় বিশেষে, উত্তরের অভিশ্যায় বিশেষে জাণ পর্যায়ত অবাতরে বলিদান দিতে ইইবে।" ১ ম প্রকরণ—২৫ ব্যাধান।

যিনি যে পরিমাণে পুণ্য সঞ্চয় করিবেন, তিনি সেই পরিমাণে স্বর্গ-পথে অগ্রসর হই-বেন। যেমন অল্পান ব্যতিরেকে শরীর-क्रका इब्र ना, मिह बिंश श्रुण मक्ष्य वाण्टितरक সকাতি লাভের দ্বিতীয় উপায় নাই। ঈশ্বর প্রসাদে মনুষ্য যে অবিনশ্বর পর্যায়ু লাভ করিয়াছেন, যাহার প্রভাবে এই শরীর বিনষ্ট হইলেও তিনি স্বয়ং জীবিত থাকিবেন, সেই উপাদের পরমায়ুঃ তাঁহার ঘোর যন্ত্রণার আ-ধার হইয়া উঠিবে, যদি তিনি পুণ্যোপার্জনে व्यवरहला करत्रन । উদরে অন্নরস না থাকিলে मनुषा रायन काजब हरेया भरजन, तारे बन মনেতে সুখ না থাকিলে ততোধিক কাত-রতা উৎপন্ন হর, এই পর্যান্ত পরীক্ষা করিয়া অনেকে বুঝিতে পারিয়াছেন; কিন্তু পুণ্যবান্ नौ हरेल य कि नौष्ठ थाछ हरेए हर, তাহা অনেকে আলোচনা করিয়া দেখেন ना। এই अना मनुषा ११० व्यव मध्यस ७ मुर ভোগে যে ৰূপ ব্যস্ত হন, পুণ্য উপাৰ্জনে বে ৰূপ আগ্ৰহ করেন না। পর লোকে ৰে শান্তির প্রত্যাশা আছে, তাহা পুণা বাতীত

क्थमरे लाख कता गरित्व मा । रेर लाइक्ख পুণাহীন জীবন ঘোর যন্ত্রণার কারণ হয়, এমন কি সুখের সামগ্রীতে পরিবেটিত श्रेषा पाकिल्ल भूगशीम वास्त्रि परुत्र मूथी हरेट भारत ना : किंख भर्वकृतित-नि-বাসী দরিজ ব্যক্তিও পুণ্য-বলে প্রফুল মনে কাল যাপন করেন। এই গৃহহ প্রয়েশব্র বৰ্ত্তমান আছেন ; কিন্তু কোন ব্যক্তি ভাঁহার মধুময় সন্নিকর্ষ উপতোগ করিয়া অন্তঃক্রু-तिरु यानम-तरम উक्षुमिरु श्रेर**ाइ**न ? याँशंत ऋषय भूगामितित त्रिक्ष रहेता आहर, তিনিই নিভূত ভাবে ঈশরের আবির্ভাব অনুভর্ব করিয়া এখানে আগমনের কল লাভ করিতেছেন। ঈশ্বরকে ধ্যান করিবার নি-মিত্ত যত্ন কর, কিন্তু যদি অন্তরে পুণ্য সঞ্চয় না থাকে, দে ধ্যান বিচ্ছিন্ন হইয়া যাইবে। যাঁহাকে চকুতে দেখিতে পাওয়া যায় না, কোন বহিরিক্রিয়ই যাঁহাকে লাভ করিতে পারে না এবং অন্তঃকরণও ঘাঁহাকে ধারণ করিতে সমর্থ হয় না, জাঁহাতে আত্মার সমা-ধান করা অনায়াস-সাধ্য নহে। প্রথমে সর্বপ্রকার পাপ কর্মা পরিত্যাগ ও অন্তর হইতে পাপের কামনা সকল উন্মূলন করিতে ·হয়, তৎপরে পুণ্য কর্মের অনুষ্ঠান *ধা*রা আত্মাকে পবিত্র করিতে হয়, তবে পর্মা-ত্মাতে সমাহিত হইবার সামর্থ্য জ্বনো। এক্ষণে এই গৃহে উপবেশন করিয়া যিনি সেই সা-ন্দ্রানন্দ উপভোগ করিতেছেন, ভিনিই ধন্য: কিন্তু যিনি সেই সর্ব্যাপী প্রমাত্মাতে অনুপ্রবিষ্ট থাকিয়াও তাঁহার সতা অনুভব করিতে পারিভেছেন না, "এক যাতায় পৃথক্ ফল "লাভ করিতেছেন, ডিনি নি-শ্চয় জানিবেন যে, তাঁহার প্রতি ঈশরের করুণার অভাব নাই, কিন্তু তিনি যথাযোগ্য প্ৰস্তুত হইয়া আইসেন নাই; এই জনা সেই অবারিত করণা-হারও তাঁহার চল্ফে রুল

विभिन्न (ताथ इरेंट्ट्रिं) जिनि जमारिथ भूष क्टबंत जन्छीन कतिता भूग नक्षत्र कतिट्ड बाकून, ज्ञेषत्रटक शाहेता চतिजार्थ इरेट्ट्रिन। गांध्रतत्र धम शत्राम्बत्रटक विना-माध्रत क शाहेट्ड शाह्य है

ংর্মের প্রতিপালন ধারা মনুষ্য পুণ্য লাভ क्रिटिक भारतन। अहे भृषिदी धर्मा कर्म अनु-ষ্ঠান করিবার ক্ষেত্র। পুণ্য কর্ম্মের অনুষ্ঠান না করিয়া পুণ্যের প্রভ্যাশা করা যাইতে পারে ना । करूनायम् श्रद्धायत यनुवार्गन्तक भूना-সলিলে প্রকালন করিবার নিমিত্তই ধর্ম্মের ব্যবস্থা সকল প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছেন। যিনি ভৌতিক নিয়ম প্রতিষ্ঠিত করিরা অধি-ভূত জগতের শৃত্থলা রক্ষা করিতেছেন,তিনিই ধর্মের নিয়ম প্রতিষ্ঠিত করিয়া অধ্যাত্ম জগৎ প্রতিপালন করিতেছেন। আমাদের শরীর যেমন তাঁহার জড় জগতের প্রজা, আযাদের আত্মা সকল সেই ৰূপ তাঁহার অধ্যাত্ম জগ-তের প্রজা—আ! তাঁহার প্রেমান্পদ পুত্র। পিতার আশীর্বাদে আমরা অসামান্য সৌ-ভাগ্যের অধিকারী হইয়াছি: কিন্তু হায়! তিনি আমাদিগেরই মঙ্গলের জন্য যে আ-দেশ প্রদান করিয়াছেন, আমরা তাহা প্রতিপালন করি না; যে কর্ম করিতে নিমেধ, করিয়াছেন, মোহান্ধ হইয়া তাহাই করি-ছেছি। ন্যায়, ভক্তি, প্রীতি, দয়া প্রভৃতি এক একটি আদেশ তিনি এমন উজ্জ্বল অক্ষরে আমাদের অন্তরে লিখিয়া দিয়াছেন যে, মনুষ্য অনায়াসেই তাহা পাঠ করিতে সমর্থ হইতেছে; কিন্তু তাহা প্রতিপালন করিয়া পুণ্য সঞ্চয় করিতে যে যত্ন ও চেন্টার প্রয়ো-জন হয়, মনুষ্য ভাষাতেই উপেকা পুদর্শন क्तिरक्टर ।

ক্তকগুলি যালন সুখের কামনা ও বেষ ক্রমা প্রভৃতি কতক গুলি আন্তরিক রিপু মনুযোর ধর্মা পালনে বিশ্ব উৎপাদন করি- তেছে। ঈশরের সাহায়ে ও পুরুষকার প্রভাবে সেই সমস্ত প্রতিবন্ধক অভিক্রম করিয়া পুণ্য কর্মের পথ পরিষ্কৃত করিতে হইবে। পুণ্য পথের পথিক হইতে হইলে আপনাকে জয় করাই প্রথম কার্য্য হয়।

ভারত ববীর পূর্বতন ধার্দ্মিকের পুণার अना जाननात मूर्थ धक बाद्ध विमृत इरेज़ ঘোরতর তপদ্যার প্রবৃত্ত থাকিতেন—ভাঁহারা অনাহারে শরীর শুক্ত করিয়া কেলিভেন, চকু কর্ণ প্রভৃতি ইন্দ্রিয়াবার ক্লক্ষ করিয়া রাথিতেন, উৰ্দ্ধ-বাহু হইয়া অতি কটে জীবন নির্বাহ করিতেন; গ্রীয় কালে পঞ্চপা করিতেন—মস্তকে প্রচণ্ড স্থর্য্যের কিরণপাত সহ্য করিতেন এবং চতুষ্পার্শে প্রক্ষালিত অগ্নি সংস্থাপন করিতেন; বর্ষা কালে অনা-হত স্থানে অবস্থান করিয়া হৃচিধার। বহন করিতেন; ছরস্ত শীত কালে জলে আকণ্ঠ নিমগ্ন হইয়া ঈশবের আরাধনা করিতেন; डाँशामत डेएफमा धरे एए, कि कतिएन भन-रमभत जामात्मत अिं अनम इरेटवन। हा! তাঁহারা প্রায়োপবেশন ও ভুষানলে প্রাণ দান করিয়া ঈশ্বরের জন্য ত্যাগ স্বীকারের পরা-কাষ্ঠা প্রদর্শন করিয়া গিয়াছেন। এই প্রকার কঠোর তপস্যায় কুসংস্কার যতই থাকুক, তাহা গণৰা করিতে চাই না ; কিছ উ৷হারা পুণোর প্রত্যাশায় ঈশরের জন্য আপনার সুখ সন্তোগ যে কেমন তুক্ত করি-शांकिटलन, देश मिथिशारे आमात समग्र তাঁহাদের প্রতি শ্রদ্ধা ও ভক্তিতে আত্র হইরা चारह। घटेना-जन्म विश्वतकत्र रुख निश्-তিত হইয়া ধর্মের জন্য অগত্যা প্রাণত্যাস করিয়াছে, ইহার ইতিহাস আও হওয়া যায় वटि, किंह विना वाशकांत्र क्वल श्रामत व्यमुद्धार्थ श्राद्यांश्रतमात्म, कृषामात्म वर्षना প্রজ্ঞানিত চিতানলে কে প্রাণ দান করিতে भारतन ? हा ! जिल्लातत कना **छाहाता** कि

কঠোর উপন্যা করিতেন ? তাঁহার। তৎকালে যে প্রকার জ্ঞান লাভ করিয়াছিলেন, অক-পটে তাহার আদেশ প্রতিপালন করিয়া গিয়াছেন । তাঁহার। ঈশবের বিশাসিক সেবক ছিলেন, তাহার কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।

আমরা এক্ষণে তাঁহাদিগের অপেকা উন্নত জ্ঞান লাভ করিয়াছি বলিয়া অভিমান কবিয়া থাকি, কিন্তু সে প্রকার ঈশ্বন-ভক্তি, ধর্মনিষ্ঠা ও তপশ্চর্য্যা কোথায় ? তথন যে প্রকার জ্ঞান ছিল, তপস্যাও তাহার অনুযা-য়িনী ছিল; এক্ষণে উন্নত জ্ঞান অনুসারে উন্নতভর তপস্যার অনুষ্ঠান আবশ্যক হই-হেছে। এক্ষণে চকু কর্ণ হস্ত প্রভৃতি ইন্দ্রিয়-গণের উচ্চেদ করা তপস্যা বলিয়া গণ্য করা উচিত नय : किश्र धर्यावित्यांथी विषयमुर्थ ভোগ করিবার নিমিত্ত যেঁ সকল মলিন कामना मत्न छमग्र इय, जल्ममूपारयत छत्क्प করাই এক্ষণকার তপস্যা। অনাহারে শরী-त्रक. ७% कता वाखिवक छभगा नरह; কিন্তু স্বর্ধা ধেষ প্রভৃতি আন্তরিক রিপুগণকে শুষ্ক করিয়া ঈশবের উদার প্রীতির অনুকরণ করাই এক্ষণকার তপস্যা। ভৌতিক নিয়ম অথবা শারীরিক নিয়মের বিপক্ষে তুষানলে मक्ष रुउरा, मलिल निमग्न थाका व्यथता নিবিড় অর্থ্যে প্রবেশ করা বাস্তবিক তপস্যা নহে; অসভোর বিপক্ষে, অন্যায়ের বিপক্ষে, কুসংক্ষারের বিপক্ষে, কুসংকৃত সমাজের विशक्त, कलूविछ मिना हारतत विशक्त, যদি আবশাক হয়, সমুদায় পৃথিবীর বিপক্ষে দ্তায়মান হইয়া ধর্মের আদেশ প্রতিপালন করাই এক্ষণকার তপস্যা। পুণ্য উপার্জন করিতে গেলে ক্দ্র সুথের কামন। সকল পদ্মিত্যাগ করিতে হইবে, ছর্দ্দান্ত প্রবৃত্তি সকল मधन कतिए हहैत, धर्मत अनुभंठ हहेग्रा বিষয়সুখ ভোগ করিতে হইবে। দিবা রাত্রির মধ্যে আমরা বে সমস্ত সুখ তোগ

করিতেছি; ভাষা ভীক্ষু দৃষ্টিভে পরীক্ষা করিতে হইবে; যে সুখ অসত্য ও অন্যায় বারা উপাজ্জিত হইতেছে, তাহা তৎক্ষণাৎ পরিত্যাগ করিতে হইবে। খলিন কামনা ও মলিন চিন্তার স্থত্রপাত দেখিলেই যে কোন প্রকারে তাহা মন হইতে উচ্ছিন্ন করিতে হইবে। ঈশবের প্রেমাম্পদ মনুষ্যের প্রতি যদি দ্বেষ উৎপন্ন হয়, তবে মনকে ঈশ্ব-ष्वयो विलय्ना भेगा कतिए इस्टर अवः ७९-ক্ষণাৎ তাহার সেই ভাব সংশোধন করিতে হইবে। অন্যের সৌভাগ্য দর্শনে যদি ক্ষোভ উৎপন্ন হয়, তবে তাহা মনের বিক্লুত অবস্থা বলিয়া বিবেচনা করিতে হইবে, এবং ভালা দূর করিতে হইবে। সতা পথেও ন্যায় পথে দণ্ডায়মান হইলে यদি মান সম্ভ্রম যশ কীর্ত্তি বিসর্জ্জন দিতে হয়, তাহাও করিতে হইবে। ইহাই এক্ষণকার তপস্যা।

জ্ঞান প্রচারের সঙ্গে সঙ্গে সমুদায় কন্পিত मित्र क्यों जित्राहिक स्ट्रेट इस वरहे. कि অন্য প্রকার তিনটি দেবতার উপাসনায় পৃথিবীর অধিকাংশ মনুষ্য ব্যতিবাস্ত হইয়া আছে ৷ এই তিনটি দেবতার মধ্যে প্রথম দেবতা—কাম। মনুষ্য যৌবনসীমায় পদার্পণ করিবামাত্রই ইহার দাসত্ত্বে নিযুক্ত হয়। ইহার নিকটে যে কভ নরনারীর অমূল্য ধর্মের বলিদান হইয়া গিয়াছে: এবং অদ্যাপি **रुटेंट्ट. डोहोत मःथा कता गांग्र ना।** দ্বিতীয় দেবতা—অর্থ ; ঘাঁহারা এই দেবতার দাসত্তপুর্বল পরিধান করিয়াছেন, ভাঁছা-দের ছর্দশার পরিসীমা নাই। মিধ্যা প্রজা-রণা জাল চৌর্যা নরহত্যা প্রভৃতি কোন ष्ठकर्यरे वर्षमाटमत व्यनमूट्येय बाटक मान তৃতীয় দেবতা—যশ ; ইহার উপাসকদিগের চরিত্র অতি আশ্চর্যাজনক, ইহাঁদের কর্ম সকল আড়ৰরে পরিপূর্ণ এবং একটি মনোহর স্বশুঠনে স্বশুঠিত হইয়া ধাকে। সেই

बाक्निन छेक्षांचेन कतिशा (नथ, बाक्टर्स) खन रहेट इहेटन । পूर्वतात्व बहरस अख ধারণ করিলা নিরাজ্ঞারের কওছেদন করিয়া-ट्रिंग. 'चना छारातरे चर्च खर्ग पूर्वक ताज-शर्थ मखासमान हरेसा जूति जूति भूगा कर्णात অনুষ্ঠান করিতেছেন। গতরাতে পিশাচ-इंडित এकरणंच कतिरानन ; প্রাতঃকালে मयोज-मश्कादत वन्न-পরিকর হইলেন। এ-कहि नामाना कर्भ कतिहाई ल्लांट्कत मूर्थ নিরীক্ষণ করিয়া আছেন, কত ক্ষণে প্রশংসা ধনি সমুখিত হইবে ৷ যশের উপাসক ব্যতি-রেকে এমন প্রত্যাশা আর কে করিতে পারে যে, আমি সংগোপনে সৎকর্ম করিয়া থাকি ইহা লোকে অবগত হউক ? লঘুচেতা মান-ৰগণ এই তিনটি দেবতার—তিনটি পিশা-চের উপাসনাতেই সমস্ত আয়ু: নিংশেষ করিতেছে; ঈশরের উপাসনা আর কখন क्तिरव ?

এই সমস্ত লোভনীয় ক্ষতা পরিত্যাগ कतिसा भूगाकाम इरेशा धर्मात अनुष्ठीतन श्रद्भुख रुट्रेट रुट्रेट । ट्रेग्टिंग्याभनाटक रा কত দুর শাসনে রাখিতে হইবে, তাহা কে না বুৰিতেছেন ৷ কিন্তু পৃথিবী 'বান্তবিক পৃ-थिवी ; प्रवत्नोक मरह ; এখানে সর্বপ্রকার প্রলোভন অতিক্রম করিয়া পুণ্য উপার্ক্তন করা সহজ ব্যাপার নছে। পৃথিবীর সুবর্ণে যদি কোন প্রকার শ্যামিকা মিঞ্জিত না থাকে, ভাহাতে কোন অলঙ্কারই প্রস্তুত হইতে পারে না; সেই ৰূপ যথাৰ্থ ধৰ্মপরায়ণভায় এখানে करनक रक्षना मञ् कदिए इस । छूःथ, ক্লেখ, প্রভারণা, অপমান, তিরস্কার হয় তো थार्चिकिकिशंदक व्यक्तक मधन्न मखटक वहन করিতে হয়; তিনি অনাহারে স্তপায় ररेला अमाप्त भूर्वक धक्छि कशक्क अ छेशार्कन कतिएक शादतम मा ; छत्र क्षतर्मन করিলেও ভিনি বস্তা পথ পরিভাগে করিছে

পারেন না: ভিনি বিপদের সম্ভাবনা দেখি-लिंख धरम्बंत चारमभ लब्बन कतिएक भारतन मा। उंशित धरे क्ष शुठिखा प्रिश्ता পুথিবী তাঁহাকে নিৰ্বাতন করিতে থাকে। शृथियो विश्वक जूबर्पत डेक मूला व्यवगढ হইয়াও থাদি না দিয়া ব্যবহার করিতে পারে ना। किन्तु मर्वनभी जेखत जाहारक मार्थन: क्ट्र जानिए भारत ना, ज्यात जाहारक ক্রোড়ে লইয়া শাস্তুনা প্রদান করেন। তাঁ-হার শরীর যদিও প্রাঘাতে অবসর হয়, কিন্তু তাঁহার আত্মা ঈশ্বরের কোমল স্পর্লে নব জীবনে পূর্ণ হইয়া থাকে; তিনি মর্জ্য লোক হইতে যতই আঘাতের পর আঘাত প্রাপ্ত হন, ততই এক দৃষ্টে সেই প্রেমমুখের প্রতি চাহিয়া থাকেন এবং এক এক বার পুথিবীকে দেখেন; তাঁহার সেই দৃষ্টিপাত পৃথিবীর মন্তকে আশীর্বাদ হইয়া পড়ে। তিনি ঈশ্বরকে বলেন, নাথ! ভুমি যদি আমাকে পরিত্যাগ না কর, আমি সমুদায়ই সহ্ করিতে পারিব।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

# সংস্ত সাহিত্য।

২৯৮ সংখ্যক পত্রিকার ৩৭ পৃঠার পর।

বেদের ছয় অয়, এই জন্য আ্মরা য়ড়য় বেদ বলিয়া থাকি। এই ছয় অয় যে এক এক থানি স্বতন্ত স্বতন্ত গ্রন্থ ভাষা নহে, ইয়া স্বতন্ত স্বতন্ত ছয়টি বিষয়। এই ছয় অবের সাহায্যে বেদের অর্থ-গ্রহাদি করা যাইতে পারে। মহর্ষি মনু শিক্ষা কম্প ব্যাকরণ নিরুক্ত ছনদ ও জ্যোতিষ এই ছয়, অয়কে প্রবচন ও

১ जााः मर्द्भव त्रतम् मर्वाद्धनस्य ह। वक्

ধে প্রাক্ষণেরা সমস্ত বেল ও বেলাজ শিক্ষার ক্রে-ঠম লাভ করিয়াছেন (ঠাছারা সকলকে পবিত্র করিয়া থাকেন)।

भएक निर्दर्भन करतन । श्रवहन भएक डाक-१७ वला शाहेरा भारत ।

পৌরাণিক সময়েই কেবল যে পুরাণ প্রস্তুত হইয়াছিল আর ঐ কালের পূর্বে যে हेशां नाय शक्त हिल ना, ठारा नरर। उक्ति ভাগে কছকগুলি উপাখ্যান উদাহরণ স্বৰপ উদ্ধৃত করা হইয়াছে। পৌরাণিক এম্বর্করারা মেই সমস্ত উপাখ্যান সঙ্কলন করিয়াই পুরাণ প্রস্তুত করেন। কলত এক সময়ে ত্রাকাণ ভাগে পুরাণের বীজ রোপিত হয়, তৎপরে তাহার শাখা পল্লব প্রভৃতি সমস্ত অল প্রতাল উৎপन्न इरेग्नाहिल। এरे कटण दिनाटकत বীকও ব্রাহ্মণ ভাগে আছে। সেই সমন্ত বেদার মত অবলয়ন করিয়া শেষে বিস্তর গ্রন্থ প্রস্তুত হইয়াছিল। রুহদারণ্যক ও তা-হার ট্রিকায় এই বিষয়ের স্পর্যক্তীল্লেখ আছে। টীকাকার ইতিহাস শব্দের অর্থ করিতে গিয়া কহিয়াছেন যে, শতপথব্ৰাহ্মণে যে উৰ্বশী পুৰুরবার হুত্তান্ত আছে, তাহাই ইতিহাস। তৎপরে তিনি ব্রাক্ষণ হইতে কতকগুলি বচন উদ্ভ করিয়াছেন এবং তৎসমু-माय्रक डेशनियम श्लाक खूव अनुवार्था उ ব্যাখ্যা শব্দে নির্দ্ধেশ করিতেছেন। ফলত

প্রকর্ষেটণবোচাতে বেদার্থ এতিরিতি প্রবচনা-নান্ধানি। রূলুকভট্ট।

এই সমস্ত বেদান্দ বেদার্থ ব্যাখ্যা করিতেছে এই নিমিত্ত ইয়ার নাম প্রবচন।

২ কালববিনাগণি প্রবচন বিছিতঃ শ্বরঃ স্বাধ্যায়ে। প্রবচন শব্দেন ব্রাহ্মণমূচ্যতে। প্রোচ্যতে ইতি প্রবচনং।

কালব্ৰিলিগেরও স্থান্যায় কালে প্রবৃচন বিছিত বর স্লাছে। প্রবৃচন স্বর্থ ব্রাহ্মণ, ব্যাখ্যা করিতেছে এই নিমিন্ত প্রবৃচন বলা বার।

প্রান্থান ভেলে এই কণা আছে " এবং প্রবচন ভলাত প্রভিবেদং ভিন্না ভূমসাঃ শাথাঃ। প্রবচন-ভলে বেলের শাথা সকল ভিন্ন ছইয়াছে। মনুস্পন ঘ্রুক্তন শব্দে উচ্চারণ বলিরা এবং কঠোপনিবদ মন্ত্রন ক্রিয়া ব্যবহার করিয়াছে। धरे ममस्तरे दिनारमञ्ज श्रास्तिनामा धरः धरे ममस्य मारम दिनाम खोकारणम् असर्गक महिन ग्राह्म ।

धरे इस दिमालित या दिनाथीम ध्यापन উল্লেখ আছে, তাহার কিছুই নিশ্চয় করা भुअत्काशनियम व्यक्ति इत व्यक्त निर्देश बाह्य वर्षे किंद थे উল্লেখ আছে, প্ৰনিধান পূৰ্বক দেখিলে বোধ হইবে যে ঐ অংশ উহাতে কেহ প্রকেপ করিয়া থাকিবে। যাত্ত স্থল-বি-म्पट्य दिलाटकत नाटभाटकथ कतिशाटकन, किस रेश इन्न कि क्य़िंग छारा किहूर कटरून नाई। চরণবাহে বেদের অল-সংখ্যা নিক্পিত षाष्ट्र<sup>°</sup>। मन् गुणिए७७ এই मःशा गृहीछ হইয়াছে। ছালোগোপমিষদের নব্ম ঞ-পাঠকে वড়দের কথা নাই, কিন্তু ভিন্ন ভিন্ন নামে বেদাল মত প্রকাশ করিয়াছে °। সাম-বেদের ত্রাক্ষণ ভাগে অল-সংখ্যা ধরিয়া গিরাছে, কিন্তু উহাতে ছয় অন্তের বিশেষ वित्निय नाम निर्फिष्ठे नाहे। ভाहाटक धाई ৰূপ লেখা আছে, চারি ৰেদ স্বাহা দেবীর मिर्, (तरमत इस अम छेटाँत अम.। शाहाहै...

চার বেদ জীহার দেহ বেদের হুর অক তীহার অস এবং ওম্বি ও বনস্পতি সকল তীহার লোম।

ও শিক্ষাকল্পো ব্যাকরণং নিকক্তং ছন্দো জ্যো-তিখং।

৪ একদা নারদ সনৎকুমারকে জিজ্ঞাসা করেন,
আপনি কি কি শাস্ত্র প্রধানন করিরাছেন। তাহাতে
সনৎকুমার কহেন আমি চারি বেল ইতিছাস পূরাণ
ব্যাকরণ এবং পিত্রা, দৈব, রাশি, দিখি, নহা কালাদি নিধি শাস্ত্র, বাকোবাকা, একারন, দেববিদ্যা,
ব্রহ্মবিদ্যা, ভূততন্ত্র, ক্তরিদ্যা, নক্ষত্র বিদ্যা, সর্প
বিদ্যা ও গাকড়শাস্ত্র অধ্যরন করিরাছি তথাচ আল্
আর বিষয় কিছুই জানিতে পারি নাই।

চত্বাহলৈ বেলাঃ শরীরং বজ্লানালানি।
 ওম্বি বনস্পতয়ো লোমানি।

হউক প্রাচীন ত্রান্ধণেও যে অল-সংখ্যা নিজ-পিত আছে, এবং ত্রান্ধণ-কম্পের শেবাবস্থায় যে বেদাদকে প্রাহ্ম করিয়া গিয়াছে, সাম-বেদের এই প্রমাণ ছারা তাহাতে আর কোন সংশার হইতে পারে না।

শিক্ষা, কম্প, ব্যাকরণ, নিরুক্ত, ছন্দ ও জ্যোতিষ এই কএকটি বেদাঙ্গের বিষয়।

সায়নাচার্য্য ঋষেদের টীকায় শিক্ষা শব্দের এই ৰূপ ব্যাখ্যা করিয়াছেন—যে প্রস্থ দ্বারা বর্ণ স্থর প্রভৃতির উচ্চারণ জানা যাইতে পারে তাহাই শিক্ষা। সায়নাচার্য্য এস্থলে তৈত্তিরীয় প্রস্থ হইতে কিয়দংশ উদ্ধৃত করি-রাছেন, এই প্রস্থের আরণ্যক খণ্ডের এক অধ্যায়ে শিক্ষা প্রকরণ আছে। আমরা অল্যাপি এই তৈত্তিরীয় আরণ্যকের সপ্তমাধ্যায়ে শীক্ষাং ব্যাখ্যায়ামঃ, বর্ণঃ, স্বরঃ, মাত্রা, বলং, সাম, সন্থানঃ, এই কএকটি কথা দেখিতে পাই। কিন্তু ইহাতে এই সমস্ত কথা ভিন্ন আর কিছুই নাই।

এছলে কেছ কহিতে পারেন যে তৈতিরীয়

মারণ্যকে শিক্ষা প্রকরণ নাই। এ বাক্য

নিতান্ত অমূলক। যদি তৈত্তিরীয় আরণ্যকে

শিক্ষা প্রকরণ না থাকিবে 'তাহা হইলে

"ইত্যুক্তাঃ শিক্ষাধ্যায়াঃ" এই বাক্য থাকিবার অভিপ্রায় কি? এবং "শিক্ষাং ব্যাখ্যায়ামং" এই বাক্যেরই বা তাৎপর্য্য কি?
বেদের টীকাকার সায়নাচার্য্য বৈদিক ইতিরক্ত বিলক্ষণ অবগত ছিলেন, এ বিষয়ে তিনি
যে কাপ লিখিয়াছেন, তাহাতে স্পর্যুই বোধ

হইতেছে যে তৈত্তিরীয় আরণ্যকে এক সময়ে

শিক্ষা প্রকরণ ছিল। তিনি সাংহিতী উপনিষদের টীকার এক শ্বলে এই কপ কহিয়া-

্রাক্তবের বড়কো বেদো নিকারবোহবোরো ক্ষেত্রক।

ব্ৰাহ্মণ নিকাম হইয়া বড়ক বেদ অধ্যয়ন ও ভাছার অর্থপ্রেছ করিবেন।

ছেন "তৈভিরীয় উপনিবদ ভিন ভাগে বিতক্ত—সাংহিতী, যাজ্ঞিকী ও বারুণী '। এই वाक्रगी উপনিষদে আধ্যাত্মিক বিষয় উক্ত इहेग़ाह्म, मुख्ताः हेम वित्नम छेशरमांगी। যাহাতে অধ্যেতাদিগের বৃদ্ধির্ত্তি একত হইয়া ক্রমণ উচ্চ বিষয় শিক্ষা করিতে পারে. माः हिंछी উপনিষ্দে তাহাই আছে। এই সাংহিতীকে অধ্যাত্ম বিদ্যার অনুক্রমণিকা বলা যাইতে পারে।" সাংহিতী উপনিষদে প্রথমেই শিক্ষাধ্যায় আছে। ইহার টীকা-কার কহিয়াছেন যে, "এই শিক্ষা দারা লোকে বর্ণ স্বরাদির প্রকৃত উচ্চারণ জানিতে পারিবে। বর্ণ স্বরাদির উচ্চারণ অভ্যন্ত হইলে অধ্যেতার সহজেই অধ্যাত্ম বিদ্যায় প্রবেশ হইবে<sup>২</sup>। কিন্তু অনেকে কহিতে পারেন যে এই শিক্ষাধ্যায় এম্বলে সম্মি-বেশিত করিবার আবশাকতা কি ? বেদের নীয় হইতেছে। সতা বটে কিঞ্ক কৰ্মকাত্তে ভ্রম হইলে প্রায়শ্চিত্ত দ্বার। পাপক্ষয় হইতে পারে, জ্ঞান কাত্তে ভ্রম হইলে আর প্রায়শিত নাই। সুতরাং জ্ঞান কাণ্ড নির্দ্ধোষে আয়ন্ত

১ সেয়ং তৈজিরীয়োপনিষৎ ত্রিবিধা। সাংছিতী যাজিকী বাৰুণী চেতি। তাসাং তিসণাং মধ্যে বাৰুণী মুখ্যা।

তৈতিরীয় উপনিষৎ তিন প্রকার, সাংছিতী যাজ্ঞিকী ও বাকণী। ইছার মধ্যে বাকণী সর্বজেষ্ঠা। ২ তত্মাৎ বিদ্যায়ামবৈকল্যার মধাশাস্ত্রং ৰোজুং উপনিষৎ পাঠে প্রয়জাতিশয়ং বিধাতৃং অক্তির

শিক্ষা থাবেরা হড়িধীরতে। তদ্য চ আ ক্রার্থ জ্ঞান-প্রধানত্বাৎ পাঠে মাতুর্দোনাদীন্য মিত্যেভদর্থে দ্বিতীয়াত্বাকে শিক্ষা থাবেরা হড়িধীরতে।

অতএব বিদার প্রহৃত রূপ মর্ঘ গ্রহ ও উপনিবৎ পাঠে প্রহৃতি বিধানার্থে এই ছলেই শিক্ষাধার অতিহিত হইতেছে। এই গ্রন্থ অর্থপ্রধান, অতএব তৎ পাঠে লোকের মনোধোগ বিধানার্থ বিতীয়ান্থবাকে শিক্ষাধার অভিহিত হইতেছে। कतिबात जिमिष अद्दल गिकाशात तारी समावगाक ताथ इंट्रेंट्ट ना ।"

আরণ্যকে এবং বোধ হয় ব্রাক্ষণেও '
এক সময়ে শিক্ষা প্রকরণ ছিল। পরে যথন
এমন সব প্রস্থ প্রস্তুত হয় যাহাতে শিক্ষাসংক্রান্ত মত অপেক্ষাকৃত সুস্পর্য হইয়াছিল, তখন আরণ্যক ও ব্রাক্ষণে শিক্ষার
প্রকরণ রাখা আর তত আবশ্যক হয়
নাই।

যে এছে শিক্ষা সুপ্রণালী ক্রমে সুপ্রষ্ট ৰূপে বিরুত হইয়াছে, তাহার নাম প্রাতি-শাখ্য। ব্রাহ্মণ-কালে বেদ লোকের মুধস্থ ছিল। যখন এই ভারতবর্ষের চলিত ভাষা ক্রমশ উল্লভ হইয়া আদিম বৈদিক ভাষার রীতি পরিত্যাগ করিতে থাকে, তথন ছন্দ শ্বর ও উচ্চারণের সাধারণ নিয়ম না করিলে বেদু গানি রক্ষা করা নিতান্ত কঠিন হইত। যথন নিয়ম হয় তথন অবশাই উচ্চার-ণাদিগত ক্লিছু না কিছু বৈলক্ষণ্য ঘটিয়া থা-কিবে। যাহাই হউক এই দোষ প্রশমনার্থ ভিন্ন ভিন্ন শাখাবলম্বীরা স্বর উচ্চারণাদির এক একটি বিভিন্ন ব্যবস্থা স্থাপন করেন এবং উচ্চারণাদির বিভিন্ন ব্যবস্থা স্থাপন করিতে গিয়া তাঁহারা বেদার্থের বাতিক্রম করিয়া কেলেন। ব্রাহ্মণ ভাগে এমন সমস্ত ঋক আছে যে উচ্চারণ-ব্যত্যয়ে অর্থেরও ব্যতি-ক্রম হয়। এই বিষয় লইয়া পুরের ঘোরতর বিচার হইয়াছিল; বিভিন্ন শাখাবলম্বীরা পরিশেষে এই সিদ্ধান্ত করেন যে, যে প্রণা-লীতে উচ্চারণ করিলে বেদার্থের কোন ব্যাঘাত बर्णित मा, जारा अवनारे आय ररेत जवः ইহাতে বিভিন্ন শাখায় স্বরাদিগত যে কিছু অংশ তেদ অগ্নিবে তাহা অবশাই সহা क्तिएक श्रेट्व।

कोमविकायित ध्वक्यविद्यः खतः चाराहतः।

बाकालता रेक्छ रहेट डेमारत तरबार করিয়া একটি সাধারণ নিয়ম প্রস্তুত করেন। এই সমস্ত নিয়ম পাণিনি প্রভৃতি ব্যাকরণের বীজ। পাণিমি ব্যাক্রণ যদিও এক জন গ্রন্থকার প্রণয়ন করেন কিন্তু তাঁহার পূর্বে वहकील इट्रेट इहात महलन इट्रेडिंस । প্রাতিশাখ্য যদিও স্পষ্ট ব্যাকরণ নতে কিন্তু हेहा भक्ष अञ्चल अद्वर्शक मत्मक् नाहे। কেবল এই প্রাতিশাপোর সময যে ব্যাকরণ **ठक**। इस डोश नटर: এই প্রাতিশাব্যের পূর্বেও বণকরণের অনুশীলন হইত। প্রাতি-শাগ্যা পাঠ করিলে ইহাতে আর কোন সংশয় থাকে না। প্রাতিশাধ্যে কতকগুলি নিয়ম উদ্ধৃত আছে, ঐ সমস্ত নিয়ম উহার সহিত কোন কোন স্থলে ঐক্য হয় না। যে সমস্ত প্রাচীন গ্রন্থ হইতে প্রাতিশাখ্যে নিয়ম উদ্ধৃত कता इडेग्राट्ड, मिथिएल विधि दश य के नकल গ্রন্থ প্রাতিশাখ্যেরই অনুরূপ ছিল। ঋথেদের সাকল্যশাথার শৌনক-প্রাতিশাথ্য সর্বা-পেক্ষা প্রাচীন। শৌনক কছেন যে সকল বিষয়ে সাকল্য-বৈযাকরণিকদিগের বিভিন্ন মত দৃষ্ট হয়, দে সকল বিষয়ে তাঁহার মতও স্বতন্ত্র। যথন বৈদিক ধর্ম ক্রমশ হীন দশায় নিপতিত হইতেছে, সেই সময়ে যে সকল প্রাতিশাখ্য প্রস্তুত হয়, শৌনকের প্রাতিশাখ্য उद मसुमात चरशका अधित।

প্রতিশাখা শব্দ হইতে প্রতিশাখ্য হইয়াছে।

এক থানি প্রাতিপখ্যে যে চারি-বেদের বিষয়

বলা হইয়াছে তাহা নহে, প্রত্যেকু বেদের প্রত্যেক শাখায় হরবর্ণাদির যে সকল বিভিন্নতা
আছে, এই সমস্ত প্রছে সেই গুলি সংগৃহীত

হইয়াছে। বেদের শাখা বেদের প্রায়ই শনু
রূপ, কেবল বেদ বছকাল লোকের মুখহ ছিল
বলিয়া স্থানে স্থানে এই সকল শাখার কিছু

কিছু বাত্যয় হইয়াছে। হয়ত কোনহলে একটি
শব্দ, অধিক হয়ত কোন হলে একটি ক্লো-

কের পরিবর্ত্ত ঘটিয়াছে। এই শাখা সকলকে কোন ক্ৰেই এক এক ধানি স্বতন্ত্ৰ প্ৰত্ত্ৰ প্ৰত্ वना याहेट भारत ना। এक भूखक (यमन নানা প্রকারে মুদ্রিত হয়, বেলের পক্ষে শাখা সকলও সেই রূপ। মনে কর এক খানি ঋষেদ বিভিন্ন বংশের লোক পাঠ করিত, যে খানে অক্ষরের সৃষ্টি নাই, গ্রন্থ কেবল লোকের কণ্ঠত্ব থাকিত, সে হলে কারণ শক্তির मिर्जना निवस्तन विया हि स्ट्रेट भारत कि না ? কিন্তু এ ৰূপ অবস্থায় যত দুর প্রত্যাশা করা যায় তাহা ঘটে নাই। বেদের কোন অংশ পরিবর্ত্তি হওয়া লোকে দোষাবহ বিবেটনা করিত। এই নিমিত্ত তাহা অবি-কল রাখিবার নিমিত্ত সকলেই প্রাণপণে চেফা করিত। সুতরাং বেদের শাখা সর্বত্র প্রায়ই সমান থাকিত। এই সকল ভিন্ন ভিন্ন শাখা ভিন্ন ভিন্ন স্থানে যে প্রণালীতে অধীত হইত, প্রাতিশাখ্য সেই প্রণালী একত্র সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছে। সুভরাং এক খানি প্রাতিশাধ্য গ্রন্থে যে সমুদায় বেদের বিষয় অৰগত হওয়া যাইবে ইহা কোন ৰূপেই সম্ভবপর নহে। প্রাতিশাখা দ্বারা যেমন ष्मनामा উপকার প্রাপ্ত হইতেছি, তন্মধ্যে এই একটি বিশেষ যে পূর্বে যে সকল বংশ এক সময়ে এই পৃথিবীতে থাকিয়া কাল ক্রমে লোপ পাইয়াছে, এই প্রাতিশাখ্যে তাহার नामानि नयूनाय काना गारेट भारत।

# মূসলমান ধর্ম ও তাহার বিস্তার।

মহম্মর্শ খৃষ্টীয় পাঁচ শতাব্দীর শেষে রোম দেশীয় সম্রাট যফিনিয়নের সূত্যুর চারি বংসর পরে আরব দেশে জন্ম গ্রহণ করেন। তংকালে মক্কা নগরের যে ধর্ম তাহাই আরবদিশের সাধারণ-ধর্ম ছিল। ঐ সময়ে মকার মন্দিরে নানা প্রকার দেবদেবীর প্রতিমৃতি ও একটি কৃষ্ণ বর্ণ প্রস্তরের । উপার্কনা হইত। এই সমস্ত পৌতলিক দিগের সহিত্ত আরব দেশে অন্যান্য মন্ত্রালারও বাস। করিত। চন্দ্র সূর্য্য প্রভৃতি গ্রহ নক্ষত্র সকলইহাদিগের উপাস্য হিল। মহম্মদ স্বজাতীয় পৌতলিক ধর্মে বিবেষ প্রদর্শন করিয়া ধর্ম-সংকারে প্রস্তুত্ত হন। তথ্য তাহার বয়ংক্রম প্রায় চলিশ বৎসর হইবে। বাল্যাবিবি তাহার ধর্ম বিষয়ে যে অলোকস্যান্য উৎসাহ ছিল, এই সময়ে তাহা প্রক্ষান্ত হইয়া উঠে।

তাঁহার শৈশবাব হা অতীত না হইতে তাঁহার পিতা মাতা তাঁহাকে নিংস্ব ও নিংস্ব হার কিলা কালা কালা হারত হন। এ জন্য তাঁহার বিদ্যাভ্যাস তাদৃশ কিছুই হয় নাই কিন্ত তাঁহার বৃদ্ধি ও প্রতিতা এই রূপ ছিল যে কেবল ইহারই বলে তিনি এই পৃথিবীকে মোহিত করিয়া যান। ইনি প্রথমাব হায় খাদি জা নামী কোন বিধবার অধিকারে নিযুক্ত হন। এই বিধবা মৃতপত্রির অতুল ঐশর্যের আধিপতা লাভ করিয়াছিল। মহম্মদ বিষয় কার্য্যে অভিশ্ম নিপুণ ছিলেন বলিয়া জনতিকাল মধ্যেই খাদিজার বিশাসের পাত্র হইয়া উঠেন। পরে এই রম্নীরই পাণিগ্রহণ করিয়া স্বয়ংধনী বলিয়া জারব দেশে প্রখ্যাত হন।

মহমদ ধর্ম-সংস্কারে প্রয়ন্ত হইয়া প্রথমত লোক-ভয়ে মনের ভাব কাহারই নিকট প্রকাশ করিতে সাহসী হন নাই। কেবল খাদিজা তাহা জানিতে পারিরাছিলেন। মহম্মদ সর্বাগ্রে এই খাদিজা ও অন্যান্য তিন জনকে আপনার এই সংস্কৃত ধর্ম অবলয়ন করান। কোরাণ তাহার ধর্ম পুত্তক ছিল।

১ পূর্বে হিন্দু জাতীরের। এই প্রস্তরকে শিব্রিজ বলিয়া পূজা করিত।

ভিনি কহিতেন যে যখন গিরিগুহায় নির্জনে একতান মনে ঈশার-চিন্তার নিময় থাকিতেন. তখন গ্রিব্রিল নামক এক স্বর্গীয় দুত আসিয়া ভাঁহাকে কোরাণের স্লোক প্রদান করিয়া गाहेड। এই तुन क्षवान चारह य এই শ্লোক পাইবার কালে তিনি অপসার রোগ-প্রস্তের ন্যায় ভূতনে নিপ্তিত হইয়া অন্বর্ত কেনা উদ্বমন ও উন্মাদের ন্যায় ব্যবহার করি-তেন। किह किह करहन य महत्त्रापत मुनी রোগ ছিল। যাহাই হউক তিনি এই কোরা-ণকে ঈশ্বর-প্রেরিত নিভা ও অভ্রান্ত বলিয়। প্রচার করিয়াছিলেন। তাঁহার বিশ্বাস এই যে, ঈশ্বর এক মাত্র। স্বর্গ সুসজ্জিত রাজ-क्षामाम व्यापका व्यवस्थात उदक्ष त्रानीय স্থান। এই স্বর্গ সাতটি ও নরকও সাতটি আছে। মনুষ্য পুণ্য সঞ্চয় করিয়া স্বর্গে ইন্দ্রিয়ের ত্থিকর নানা প্রকার বিষয় সকল প্রাপ্ত হয়। যিনি এক কালে পাপ-শূনা হইতে পারেন নাই, ঈশর তাঁহাকেও তথায় বছ সংখ্য ভোগ্যা স্ত্রী প্রদান করেন। কিন্তু যাঁহারা ইন্দ্রিয় সুখ পরিত্যাগ পূর্বক মুমুকু হন, তাঁহারা তথায় ঈশবের সাক্ষাৎকার পাইয়া পাকেন। মহম্মদ নরকের বিষয় এই বলেন যে যাহারা অন্যধর্মাক্রান্ত তাহারা অনন্ত কাল তথায়বাস করিবে, কিন্তু ঘাঁচারা কোরা-ণিক ধর্ম অবলম্বন করিবেন, ঘোর পাপী হই-লেও ভাহাদিগকে সাত হাজার বৎসরের व्यक्षिक उथात्र राष्ट्रका मञ्च कतिएठ हरेटव ना। शृक्षीमिन्दिशंत नाश धक्षि निर्मिष्ठ विठात-मिवटन देहाँ इ दियान हिल। देनि कहिएकन, বিচার-দিবসে তুমুল ভেরী শব্দে মৃত ব্যক্তি-দিগের আত্মা উত্থিত হইয়া ঈশরের সমি-হিত হইবে এবং আপনার পাপ পুণানুসারে শণ্ড পুরস্কার লাভ করিবে। মলৌকিক ও অঞাকৃতিক কার্য্যে মহম্মদের বিশাস ছিল, তিনি স্বয়ংও তাহার অনুষ্ঠান করিতে পারি-

তেন। কোরাণে দিবসের মধ্যে পাঁচ বার উপাসনার বিধি আছে। ইহাতে উপাসনার सान निर्मिक नारे; পরिकृष ও পরিক্র चारन छेशामना कताई श्रमञ्ज। किंद्र श्रीक ख्यक्रवाइ मकरल क्रक इहेग्रा छेशामना क्या আবশ্যক। উপবাস করিয়া পেঁহ শুক্ত করা যদিও মহম্মদের অভিমত ছিল না কিন্তু এক मान छेशवारन विटमंच कल लाछ हन, रेहा ওঁহার অনুমোদিত ছিল। এই এক মাস উপবাদিকে মুদলমানেরা রোজা ক**হে। মুদল**-মান ধর্মে একাধিক জীর পাণি গ্রহণ निधिक नदर धदर महत्रामध तछ नश्शा দার গ্রহণ করেন। এই রূপে তিনি প্রাচীন ধর্মের উচ্ছেদ ও নূতন ধর্ম প্রতিষ্ঠা ক্রিয়া তাহা প্রচারে উদ্যত হন। প্রচারের চারি বৎসর পরে তিনি স্বয়ং আপনাকে ঈশার-প্রেরিত বলিয়া জনসমাজে প্রকাশ করেন। একে লোকে তাঁহার এই বিরোধী মত আবণ করিয়া তাঁহার প্রতি বিষেষ করিত; তৎপরে যথন শুনিল যে তিনি আপনাকে ঈশার-প্রেরত বলিয়া স্বীকার করিতেছেন, তখন তাহাদিগের রোঘানল এক বারে প্রস্থালিত হইয়া উঠে। এই অবসরে তাঁহার প্রাণ বধের (ठकी हरा। जिनि देशंत्र मक्कान शाहेका मक्का नगत हरेट यमिनात भलातन करतन। তাঁহার এই পলায়ন-কাল হইতে লোকে হিজরী শক গণনা করিয়া থাকে।

ক্রমণ তাঁহার শক্ত-সংখ্যা অধিক হইরা
উঠে। স্বসম্পর্কীয় লোকেরাও তাঁহার প্রতি
বিশেষ বিরক্ত হইয়া তাঁহার সংসর্গ এক
কালে পরিত্যাগ ও পদে পদে তাঁহার অনিষ্ট চেষ্টা করে। তাঁহার পিতৃব্যও এই
শ্রেণীর মধ্যে ছিলেন। কিন্তু তিনি কখনই
মহম্মদের অনিষ্ট করেন নাই, প্রস্তুতি
তাঁহাকে সময়ে সমরে বিশেষ আনুকুলা
করেন।

এই नगरत पिनाम डीशत धर्म विलक्ष्य প্রচার হয়। অনেকেই পূর্বতন ধর্মে বীত-त्रांश क्षेत्रा अहे धर्म व्यवलद्दन करत । मक्त्रम এই সুষোগে তথাকার অধিবাদিদিগকে বশীভুত করিয়া স্বয়ংই ঐ দেশের আধিপত্য লাভ করেন। এত দিন তিনি এক প্রকার निववला हिल्लन, जुलता गतनत यक धर्म প্রচার করিতে পারেন নাই। এক্ষণে তাঁহার অন্তর্বলের সহিত বাহ্য বল দ্বিগুণ হইয়া টুঠে। এমন কৈ মদিনায় আধিপত্য প্রাপ্তির ছয় বংসর পরে তাঁহার শিষ্য সংখ্যা চতুর্দ্দশ সহত্র হইয়াছিল। এত দিন তাঁহাকে লো-কের অন্তরে প্রবেশ করিবার নিমিত্ত অবসর অনুসন্ধান করিতে হইত, এক্ষণে বল প্রকা-শই ভদ্মিয়ে সহায়তা করিল। তিনি এক-মাত্র তরবারির আঞ্রয় লইয়া বছ সংখ্য লোককে ভাঁহার ধর্ম গ্রহণ করাইয়া ছিলেন। তিনি কহিতেন ঈশবের নিমিত্ত রক্তপাত পাপাবহ হইতে পারে না এবং তরবারিই স্বর্গের কুঞ্চিকা। মহম্মদ অদৃষ্ট মানিতেন এবং তাঁহার শিষ্যেরাও ইহাতে বিশ্বাস ক-রিত। এই অদুষ্টে বিশ্বাস থাকাতে প্রচার । কার্যো বিশেষ সুবিধা হইয়াছিল। তাঁহারা আপনাদিগের জন্যায় অত্যাচার লোকের অদুন্টের উপর আরোপ করিয়া স্বেচ্ছানুসারে ধর্ম প্রচার করিতেন।

তিনি মক্কা পরিত্যাগ করা অবধি তাহা
আপনার অধীনস্থ করিবার চেকার ছিলেন।
এক সময়ে কোরেশ জাতীয়েরা বাণিজ্য দ্রব্য
লইয়া মক্কা হইতে স্থানান্তরে গমন করিতে
ছিল। তিনি বল পূর্বক সেই সমন্ত দ্রব্য
গ্রহণ করেন। তত্বপলক্ষে কোরেশীয়দিগের সহিত তাহার ঘোরতর যুক্ষ হয়।
এইটি তাহার জীবনে প্রথম যুক্ষ। কিন্তু
তিনি এই যুক্ষে কোরেশীয়দিগকে পরান্ত
করেন। তৎপরে তাহার সহিত ইহাদি-

গের আবার ছুইবার যুক্ষ হয়, শেষ বারে
মহম্মদ প্রায় পরাজিত হইয়াছিলেন কিন্তু
কোন প্রকার দৈব উপদ্রবে বিপক্ষেরা রণ্ডল
পরিত্যাগ করিয়া প্রস্থান করে। তৎপরে
ক্রমশ তাঁহার মক্কা অধিকারের ইচ্ছা বলবতী
হয়, এবং মুক্ষার্থ য়য়ৼই তদভিমুখে যাত্রা
করেন। পথিমধ্যে কোরেশীয়দিগের সহিত
তাঁহার যুক্ষ হয় এবং তাঁহাকে ঈশ্বর-প্রেরিত
এই উপাধি পরিত্যাগ করিয়া তাহাদিগের
সহিত সন্ধি করিতে হইয়াছিল।

অনন্তর কিয়দিবস অতীত হইলে তিনি অত্যে কোন ৰূপ যুদ্ধ স্থচনা না ক্রিয়া সংসা মক্কা আক্রমণ ও কোরেশীয় জাতিকে পরা-জয় করেন এবং মক্কার মন্দিরে যে সমস্ত দেব দেবীর প্রতিমূর্ত্তি ছিল, তাহা চুর্ণ করিয়া ফেলেন। তদৰবি তাঁহার আদেশে ভিন্ন ধর্মা-বলমীর মক্কায় গ্রমন এক কালে নিষিদ্ধ হইয়া যায়। এই ৰূপে মহম্মদ ক্রমণ সমস্ত আরব দেশ অধিকার করিয়া আপনার ধর্মা মর্বত্র প্রচার করিয়াছিলেন। পরে ছয় শত ব্রক্রিশ খৃষ্টাব্দে তিনি দেহ ত্যাগ করেন। হিনি **एक् ट्रांग कतित्ल मका नगरत्रे डाइा**त সমাধি-মন্দির প্রস্তুত হয়। यथन জনসমাজে বিজ্ঞানের আলোচনা ছিল না, লোকের বুদ্ধি অপেক্ষা বিশ্বাদেরই বল অধিক ছিল, সেই मभरत्र छे अधर्म छे ९ अस इत्। मामाना लारकता वहे छेलधर्म अञादवहे मनुस्ता দেবত্ব প্রদান করেন। মহম্মদও মৃত্যুর পর জনসমাজে দেবতা বলিয়া ভানেকে-রই ভক্তিও আদ্ধার পাত্র হইয়াছিলেন। কিন্তু যেমন কোন কোন ধর্ম-প্রবর্ত্তককে আপনাকে ঈশর বলিয়া প্রচার করিছে प्तियो गांत्र, महत्त्वम त्न क्य इत्राकाञ्चा अस हिटलन ना।

## श्रश

একদা আমি প্রীমের ছংসহ তাপে সমস্ত দিন দক্ষ হইয়া সন্ধ্যা কালে বিদ্ধ্যাচলে আরোহণ করিলাম। সমীরণ সৃত্ব মন্দ গমনে পল্লব-দল আন্দোলিত করিয়া ইতন্তত সঞ্চরণ করিতে লাগিল। সন্ধ্যার সিন্দূর-রাগে মন্তোমগুল আরক্ত হইয়া উঠিল। ক্রমশঃ গভীর অন্ধকার। বিহলমগণ নিস্তন্ধ হইল। আকাশ যেন চতুর্দ্ধিকে মল্লিকা পুস্প ফুটাইতে লাগিল। কোন দিকে জনমানব নাই। শান্তি যেন স্থার্গ হইতে পৃথিবীতে অবতীর্ণ হইল। আমার সর্বাঙ্গ অলংগ অবশ হইয়া আদিল। রজনী জননীর নাায় আমাকে ক্রোড়ে লইলেন। নিত্রিত হইলাম।

নিদ্রাবেশে দেখিলাম যেন আমি কোন विक्रोर्भ व्यारमा উপস্থিত হইয়াছি। উহার চতুর্ব্দিকে র্ক সকল ফল-ভরে অবনত আছে: কিন্তু যাহারা দেগুলি বহুযত্নে প্রস্তুত করিয়াছিল, তাহারা নাই, অন্যে তাহা ভোগ করিতেছে। উহার এক দিকে গাঢ় তিমির অন্য দিকে আলোক। ঐ তিমিরের মধ্যে হিংস্ত্র জন্তু সকল মুখ ব্যাদন করিয়া ভ্রমণ করিতেছে, আর পথিক দিগকে দেখিয়া আক্রমণ করিবার চেন্টার আছে। এই অরণ্যে যে সকল পর্ণ-কুটীর দেখিলাম, তাহা অতি আশ্চর্যা। ঐ সকল কুটারের চতুর্দ্ধিকে **ছিত্র। ঐ সকল ছিদ্রের মধ্যে কোনটি বায়ু দক্ষারের কোনটি** বা আলোক প্রবেশের পথ; এই ৰূপ যুতগুলি ছিত্ৰ আছে, প্ৰত্যেকেই এ গৃহকে পরিকৃত ও পরিছেন রাধিয়া সুখ-সেবা করিতেছে। স্থপতি এই সকল খ্ৰকে যদিও সুদৃঢ় ৰূপে নিৰ্দ্মাণ করিয়া-ছেন কিন্তু দেখিলে<sup>\*</sup>বোধ হয় যেন প্ৰবল ৰাছ্যা উপস্থিত হইলেই ঐ গুলি এক কালে निर्मृत इरेशा याहेत्व। आधि ताहे मृत्हत

ইতন্তত নিরীক্ষণ করিতেছি, ইতাবসরে দেখিলাম, একটি তল্কর আপনার কএকটি সহচর লইয়া সন্ধি খনন করিবার নিমিন্ত উহার এক পার্শে গৃহ-স্বামীর অদৃশাভাবে দণ্ডায়মান আছে। তাহাকে দেখিবামাত্র আমার স্বাদ্ধালাঞ্চিত হইয়া উঠিল।

অনন্তর আমি তথা হইতে নিরুত্ত হইয়া এক হলে দেখিলাম ছুইটি সুকুমার বালক অনন্মনে ক্রীড়া করিতেছে। *ঐ বালক*-দ্বয় স্বভাব-সুলভ চপল্ডা বশত পথের ধূলি লইয়া কথন কোন বস্তু গড়িতেছে **কথন** ভাদিতেছে, কিছুতেই তাহাদের তৃপ্তি লাভ হইতেছে না। এই বালক দ্বয়ের **আকুতির** ন্যায় প্রকৃতিও ভিন্ন ভিন্ন। এক জন যাহাতে হাসিতেছে আর এক জন তাহাতেই কাঁদি-তেছে। এক জন যাহা চায় আর এক জন তাহা চায় না। সন্মুখে সন্ধ্যা উপস্থিত কিন্তু ইহারা দেখিয়াও দেখিতেছে না। চতুর্দ্দিকে ভয়ঙ্কর হিংস্র জম্ভ তথাচ অসা-বধান হইয়া আছে। আমি তাহাদিগের এই ৰূপ ভাব দেখিয়া যার পর নাই বিশিত रुरेलाग।

এই অবসরে যেন কেই জলকিত ভাবে কহিতে লাগিল, অবাধ বালক! তামরা কি ক্রীড়ায় এতই উন্মন্ত আছ যে সম্পূর্ণে গভীর রক্তনী আসিতেছে দেখিতে পাইতেছ নাই এখান হইতে তোমাদিগের গন্তবা স্থান বহু দূর। পথের মধ্যে নানা প্রকার সম্ব বিষম ভূমি আছে এবং চতুর্দ্ধিকে দস্যুদ্ধা অনোর শোণিত পান করিবার নিমিত্ত ছম্মবেশে অমণ করিতেছে। সাবধান, এখনই গৃহে যাইবার নিমিত্ত প্রস্তুত হও। আমার বাক্যে অপহেলা করিও না। দেখ, আমি তোমাদিগকে দয়া করিবা এই ক্রাক্তারক্রের ভাও ও বংশী প্রদান করিতেছি, প্রক্তিন্ত ও বংশী প্রদান করিতেছি, প্রক্তিন্ত বিত্তিন করিবা বিত্তিন বিত্তিন করিবা বিত্তিন

রস পান ও এই বংশী বাদন করিবে। এই বলিয়া সেই অলক্ষিত পুরুষ ঐ ছুই বালকের প্রত্যেককে দ্রাক্ষারসের ভাও ও বংশী প্রদান করিলেন।

অমন্তর একটি বালক প্রস্থাই মনে আর একটিকে সমোধন পূর্বক কহিল, ভাই! এই মাত্র যে কথা শুনিলাম, ইহাতে বস্তুতই আ-মার তয় হইতেছে। দেখ, রাত্রি আসিতেছে, এখন তুই এক জন যাহা দেখিতেছি, য়ুাইবার সময় পথে আর কাহাকেই দেখিতে পাইব না। বিশেষ এই অরণ্যে বিলক্ষণ দস্যুভয় আছে। এস্থানে থাকায় আর আমাদিগের ভ্রেয় নাই; অতএব আইস আমরা যাইবার নিমিত্ত এখনই প্রস্তুত হই। দিতীয় বালক কহিল ভাই! তুমি এত ভয় পাও কেন? রাত্রি আসিতেছে তাহাতেই বা কি? এমন রমণীয় অরণ্য ভাগে করিয়া এখন আর কোথায় যাইব। আইস আমরা উভয়ে ক্রীড়া করি।

প্রথম বালক দ্বিতীয় বালকের বাক্যে অসমত হইয়া গৃহাতিমুখে চলিল। যাইতে যাইতে পথের মধ্যে সে ভীমবেগ এক স্রোতম্বতী দেখিতে পাইল। বিস্তার বড় অধিক নহে কিন্তু মধ্যে মধ্যে এক একটি প্রবল বাত্যা উপস্থিত হইয়া তাহার বক্ষংস্থলে ভয়ানক তরঙ্গ তুলিতেছে। ঐনদীর তীরে পথিকদিগকে পারাবার করি-বার নিমিত্ত ছয় জন কর্ণধার নিরস্তর দণ্ডা-র্মান আছে। তাহাদিগের মধ্যে কেহ প্রিয়-দর্শন কেহ বা বিকটাকার ; কিন্তু সকলেরই **यूरचं म**धूत तांका ७ ऋषत्र विष्पूर्ण। এই ছয় জন কর্ণধারের মধ্যে স্থির-বিছাতের ন্যায় রমণীয়-মূর্ত্তি একটি জ্রীলোক ছিল। ঐ সর্বাসুন্দরী নারী হাসিতে হাসিতে আসিয়া किर्दे नार्शिन, शिथक ! अरे नमीत मर्सा আমি এক অটালিকা প্রস্তুত করিয়া রাখি-

রাহি, ইহাতে অবগাহন করিলেই ভূমি ভাহা দেখিতে পাইবে। আমার সেই প্রাসাদ স্বর্ণময়, দেখিবা মাত্র সকলেই মোহিত হয়। এক্ষণে তুমি আমার সহিত তথায় চল। আমি তো-गारक नानाविथ ভোগা वञ्च अमान भूईक সুখে রাখিয়া পশ্চাৎ নদী পার করিয়া দিব। বালক স্বীয় স্বাভাবিক চপলতা বশত সেই নারীর মধুর বাক্যে আন্ত্রপ্রায় হইয়া ছয় জন পুরুষ ও ঐ নারীর সমভিব্যাহারে এক জীৰ্ণ কাষ্ঠফলকে আরোহণ পূৰ্বক নদী বাহিয়া চলিল। নদীর তর**ন্ধ-**বেগ রুদ্ধি হইল,তথন সে কেবল একমাত্র নারী ও ছয় জ্বন পুরুষকে অবলয়ন পূৰ্বক যথায় প্ৰবাহ বেগ লইয়া যায়, সেই দিকে চলিল। কিয়দূর গমন করি**তে ক**-রিতেই সে ক্রমশ পরিস্রাস্ত ও ক্লান্ত হইয়া পড়িল। নদীর তরক দেখিয়া ভাগার মনে আতঙ্ক উপস্থিত হইল। তথন অরণ্য মধ্যে সেই পুরুষ অদৃশ্য ভাবে থাকিয়া বিপদ নিবারণ ও বলাধানের নিমিত্ত যে ত্রাক্ষার্স দিয়া-ছিলেন, সে তাহা পান করিল এবং মনের আনন্দে ঘন ঘন বংশীরব করিতে লাগিল।

কণকাল মধ্যে ঐ প্রীলোক সহচর পুরুষ
গণের সহিত অন্তর্ধান করিল। তদ্দর্শনে
বালক শুন্তিত হইয়া ভাবিতে লাগিল, এ কি!
যে স্ত্রীলোক ও হয় জন পুরুষ আমার সহিত
আসিতে ছিল, তাহারা কোথায় গমন করিল।
বোধ হয় আমাকে কোন কুহকিনী মায়াজাল
বিস্তার করিয়া ছলনা করিয়া থাকিবে?
যাহাই হউক, আমি প্রথমত যে দিকে যাইতে
ইচ্ছা করিয়াছিলাম, প্রবাহ-বেগ্রে তাহার বছ
দূরে পড়িয়াছি। সলেও এই প্রাক্ষরস ভিন্ন
আন্য কোন রূপ প্রাণ ধারণের উপায় নাই।
বালক এই কপ ও অন্যান্য রূপ নানা প্রকার
চিন্তা করিয়া পুনরায় শূর্ষ-পথে চলিল।

দেখিতে দেখিতে নদী-বেগ কমিয়া আসিল। কিন্তু তথনও নদী পার হইবার বিত্তর বিশেষ আছে। বালক সেই জীর্ণ কার্চ ফলক পরিত্যাগ করিয়া প্রবাহ বলে উপনীত এক সুদৃদ ফলকে আরোহণ পূর্বক সেই দ্রাক্ষারস পান ও ঘন ঘন বংশীরব করিয়া মনের আনন্দে চলিল। কোন ভয় নাই কোন বিপদ নাই সে আনায়াসে নদীকূলে উদ্ভীর্ণ হইল। পরে সেই নদীতীর হইতে আরও কিয়দূর গমন করিয়া স্বস্থানে আসিয়া উপস্থিত হইল।

এই স্থান অতি মনোহর। এ স্থানে রোগ
নাই, শোক নাই ও সন্তাপও নাই। তথায়
ঐ অরণ্যের ন্যায় জীর্ণ পর্ণকুটীরেও বাস
করিতে হয় না। বালক ঐ স্থানে উপস্থিত
হইবামাত্র কতকগুলি দিব্য পুরুষ তাহার
নিকট আসিয়া কহিলেন ভাতঃ। তুমি তবাটবী হইতে অনেক ক্লেশে আসিয়াছ, এক্ষণে
এই শান্তি-সলিলে অবগাহন করিয়া প্রান্তি
দুর কর। এই বলিয়া ভাঁহারা সকলে তাহাকে
লইয়া চলিল।

পূর্বে যে অরণ্যের কথা উল্লেখ করিয়াছি তথাকার নিয়ম এই যে কেহই তথায় স্বেচ্ছামত বহু দিবস বাস করিতে পারে না। দ্বিতীয় বালক সেই অরণ্য হইতে ধীরে ধীরে আসিতেছিল। দ্রাক্ষারস পান ও বংশী বাদনে তাহার কথনই প্রবৃত্তি হইত না। সে যদিও কথন কখন বিপদে পড়িয়া সেই अन्ना भूक्रस्य वाका न्यत्र भूर्चक वः भी-ধনি করিতে ইচ্ছুক হইত কিন্তু তাহা ঐ অরণ্যের ধূলি লাগিয়া এমনি যলিন হইয়া ছিল যে কিছুতেই ধনিত হইত না। আসিতে व्यामिएक रम भरवत गरधा कीर्व भीर्व छ 🖴 प्रचे इरेश পড़िल। त्न त्नरे नमीट আসিয়া বছকাল সেই নারীর সহিত পরম मूर्य बाम कतिल, के नातीत हर कन जन्हत নিরম্ভর ভাহার সংসর্গে থাকিত। সে সভতই তাহাদিগের পরামর্শ শুনিত এবং

সেই রমণীর হত্তে আপনার স্বাধীনতা সংপূর্ণ বিক্রের করিয়া ছিল। পরিশেবে ঐ নির্বোধ বালক নদী-তরকে ও প্রবল ঝটিকার ছিল তিন্ন হইয়া বছক্লেশে বছদিবলের পর পর-পারে উত্তীর্ণ হইল।

অনস্থর সে নদী পার হইয়াই অতিশয় বিষয় হইল। নদী-সংক্রান্ত অতীত রু**ভাত** সমুদায় স্মরণ হইয়া বিকারী রোগার ন্যায় व्यस्तारिक प्रका स्ट्रेटिक लागिल। মধ্যে সেই নারী ও হয় জন পুরুষ তাহাকে প্রলোভিত করিয়া তাহা দ্বারা যে সকল কুকার্য্য সাধন করিয়া লইয়াছিল, তৎসমু-দায় হৃদয়-মধ্যে যেন মর্ম্ম-বেদনা উপস্থিত করিল। এই অবসরে এক অদৃশ্য **পুরুষ** তাহাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন বৎস! এত দিন যাহা হইয়াছে, তাহা চিন্তা করিয়া আর তুমি কি করিবে। এখন আমার সহিত আইস এবং আমার আদেশানুসারে সমস্ত কার্য্য অনুষ্ঠান কর। তথন সেই বালক এই শ্রুতি-সুথকর মধুর বাক্যে আশস্ত হইল। ক্রমশ তাহার মনের ভাব সম্পূর্ণ পরি-বর্ত্ত হইয়া গেল। এত দিন সে দ্রাক্ষারস পান ও বংশী বাদন করিত না, এক্ষণে সেই রম পান করিয়া উন্মন্ত হইয়া অনবরত বংশী বাদন করিতে লাগিল। সুখ ও শা**ন্তি** আপনা হইতেই ভাহার নিকট আসিল। ক্রমশ সে গৃহের সন্নিহিত হইল এবং পরমা-नरम ज्यार्था अत्वन कतिल।

এই অবসরে বিদ্যাচিলে ঘন ঘটা গভীর গর্ক্তন করিয়া উঠিল। অমনি আমারও নিদ্রাভদ হইল।

ন জাতু কামঃ কামানামূপভোগেন শাম্যতি। হবিষা ক্লম্বম্মেব ভূম এবা ভিবর্দ্ধতে। মহাভারত।

#### গৰর 1

আছে আপুরা চট্ট আম প্রভৃতি পার্বতা আলেশে গবর নামক এই পশুক্তবিরা থাকে। তথাকার লোকেরা ইহাকে গেরল এবং এত দেশীরেরা গবর-পো বলে। বস্তুত ইহা গো বা মহিব জাতীর নহে। ইহা একটি খতত্র পশু ।

এই পশু বিলক্ষণ ক্ষি পুষ্ট ও বলবান্ হইরা থাকে। ইহার ললাট অতিশয় প্রশস্ত ও শুল অমতি দীর্য ও ক্রমশ ফুক্স। কর্ণ ৰিলক্ষণ লয়া ও চওড়া। ইহার গলকম্বল প্রশাস্ত্র ও তর্লায়মান নহে এবং উহাতে লয়া ও দৃঢ় লোম আছে। কিন্তু যধন এই পশুর বয়ন নিতান্ত অম্প, তথন ভাহার গলকমল দৈখিতে পাওয়া যায় না। ইহার কেশর ও করুদ নাই। ইহার কল্পেশ ক্রনশং উদ্ভেড হইয়া গিয়াছে। চকুষয় बूटबत्र नाग्न। किन्छ वत्रम व्यक्ति स्टेटल टेहाता व्याग्नरे व्यक्त इरेग़ा याग्न । रेशान्त मर्बाष পিদল বৰ্ণ লোমে আচ্ছাদিত কিন্তু উদরস্থ লোমের ধর্ণ তাদুশা পিঙ্গল নহে। কোন কোনটির পাও মুখ খেত বর্ণ দেখা যায়। লাভূল কুদ্র কুদ্র লোমার্ভ এবং উহার শেষে লোমের একটি শুক্ত আছে। এই পশুর চারি পা বিলক্ষণ স্থল এবং শব্দ महिरावहरे अनुकार। এই शवग्र शख निश्ह ব্যাড্রাদির ন্যায় হিংস্র-স্বভাব নহে। ইহারা সর্বনাই লান্ত ভাবে থাকে। এমন কি যথন बरमत गर्धा श्राधीम छारव शांकिरछ शांध, उथन । मानुष मिथिटल पूरत भलायन करत । ইহারা প্রান্তরের তৃণ ও বন্য পত্র লভাদি खक्कन कतिया भाटक। उँखाश हेरामिरशत जब रहा मा। जिया कृष्टे श्रहरत्रत नमह रही-त्वत्र उद्योश दक्षि श्रेटन श्वत्र जावि निविष् अन्ता शिया वान करता। महिचानित नाम ইহারা কখনই পরে পতিত হর না। ইহাবের জীজাতি পুরুষ অপেকা বেখিতে প্রারই দীর্য হয়।

কৃকিরা এই পশুকে গৃহে পালন করিয়া থাকে। এই পশুর মাংস কুকিদিগের একটি প্রিয় থাদা। ইহারা উৎসব-বিশেষে এই পশু হত্যা করিয়া থাকে। গবরের হ্যা অতি সুস্বান্থ এবং ইহাতে উত্তম নবনীত প্রস্তুত হয়। কিন্ত কুকীরা ইহার হ্যা পান করে না। এই পশুর চর্মে কুকিদিগের নানা প্রকার ব্যবহার্য্য বস্তু প্রস্তুত হইয়া থাকে। ইহারা এই পশুকে মৈরামও মায়া-রাম নামক পার্স্বত্য দেবভাদিগের নিকট বলিদান করে এবং আবশাক হইলে রাজাকে উপতৌকন দেয়।

গদর জাতি প্রায় কুড়ি বৎসর জীবিত থাকে। তিন বৎসর বয়স অতীত হইলে এই পশুর শাবক জন্মে। শাবক প্রায় এগার মাস গর্ভে বাস করে। কুফিরা এই পশুকে বলীবর্দের ন্যায় ভার বহন করিতে দেয় না। কুকিরা এই শাবকদিগকে প্রতিদিন রাত্রি-কালে লবণ খাওয়াইয়া থাকে। ক্রমশ লবণ ভক্ষণ ইহাদিগের অভ্যাস হুইয়া যার। हेश बाता छेशकात कहे या भवस्तता साधीन ভাবে যথেচ্ছা সঞ্চরণ করিলেও লবণের লোতে রাত্রিকালে আবাদে প্রভাগমন করিয়া থাকে। কিন্তু যদি কুকিদিগকে কে। म কারণে পূর্বস্থান পরিত্যাগ করিয়া স্থানান্তরে গিয়া বাদ করিতে হয়, তাহা হইলে তাহারা যাইবার কালে অগ্রে এই গবর-গৃহে আয়ি প্রদান করিয়া থাকে। নজুবা লবণের লোভে भवत्यता भूनताय थे चात्न चारेता ।

এই সকল ছানের হিন্দুরা কদাচই গ্রন্থ হিংসা করে না। তাহারা কহে গ্রন্থ গোল সদৃশ। এই কারণে গ্রন্থ জাতিকে গোল নাার পরিত্র নেত্রে দর্শন করিবা থাকে। এই গবরের স্থার এক প্রকার জ্ঞেণি আছে। তত্ততা হিচ্ছলাতীরেরা মহিবাদির ন্যায় তাহাদিগকে শীকার করিয়া থাকে। এই গবয় জ্ঞেণীকে অধিকাংশ চউগ্রামে দেখিতে পাওয়া যায়। লোকে ইহাদিগকে গৃহে পালন করিতে পারে না এবং ইহারা বাাদ্রাদির ন্যায় হিংঅ-স্থাব। কিন্তু কাচারের ক্ষত্রিয় রাজারা পূর্বোক্ত গবয় বলি দান করিয়া দেবতার আরাধনা করিয়া থাকে।

সংস্ত গ্রন্থে এই গবয় জাতিকে বনগো

এবং গবয়ন্ত্রীকে ভিল্লগাবী বলিয়া নির্দেশ

করিয়া থাকে। ভিল্ল এখনকার ভিল্ জাতি।

ইহারা পর্বতে বাস করে। ইহারা এই গবয়
পোষণ করিত এই জনা গবয় স্ত্রীর ভিল্লগাবী নাম হইয়াছে।

পূর্ব কালে এই ভারতবর্ষে যজ্ঞাদিতে
গবয় হত্যা হইত। বাজসনেয়ী যজুর্বেদের
এক স্থলে এই রূপ লিক্ষিত আছে যে তিনটি
তার্ফ বায়ু দেবতাকে তিনটি মহিব বরুণকে
বজ্ সংখ্য গবয় রূহস্পতিকে এবং অসংখ্য
উঠা, স্বাহীকে উৎসর্গ করিয়া দিবে।

# সামবেদীয় কর্মামুষ্ঠানপদ্ধতি।

ভবদেব ভট্ট প্ৰণীত।

विवार ।

্ জ্ঞাতি-কর্ম।

১ বিবাহদিবসে প্রথমে পিতার সপিও অথবা সুক্তং বব মমুর ও মাব কলারের লক্ষ্ণ চূর্ণ সকল একীকৃত করিয়া কন্যাকে মাথাইয়া নিয়োজ মত্র বারা স্নান করাইবেক। মত্রে বে হুলে "অমুং" আছে, ভাহার স্থানে "অমুক দেবলম্মাণং" বলিয়া পারের নাম নিক্ষেপ করিবেক।

প্রজাপতি ঋষিং প্রতাবপত্ত জিছন্দঃ কামোদেবতা জ্ঞাতি কর্মণি কন্যায়াং পানীয় সাবলে বিনিয়োগং। ওঁ কাম বেদ তে নাম মদো নামানি সমানরামুং সুরা তেহতবৎ পরমত্র জন্মারোঁ তপনো নির্মিতোহনি স্বাহ।

হে 'কাম' 'বেদ' জানাসি 'ডে' তব 'দান' 'মদঃ মান জিন' মদনামা ছং তবসি। 'সমান্য' সমাক্ থাপ্য 'অছ্' অমুকনামানং পতিং। ইবং কন্যা 'ডে' ভুত্যং 'অরা' 'অভবং' ছদুৎপত্যর্জং অরা অভুৎ অরমা হি কাম উৎপদ্যতে। 'পরং' উৎকৃত্যং 'জ্বত্র' অস্যাং কন্যায়াং 'ক্ল্ম' উৎপদ্মি: 'অয়ে' হে কাম। অগ্নিপূর্ক্কমিব কাম-পূর্ক্কিং সর্কাং কর্ম গুর্তিত ইত্যুতঃ কাম এব সমুধ্যতে অয়ে ইতি। হে কাম অস্যাং কন্যায়াং তব উৎকৃত্যং ক্ল্ম কন্যাহি কামস্য উৎকৃত্যুৎপত্তিভানমিতি। 'তপসঃ' ইচ্ছণাত্রপদঃ 'নির্মিতঃ অসি '।

হে কাম! তুমি তোমার নাম জানিতেছ, তোমার নাম মদ; তুমি অমুক দেবশর্মাকে সমাক জান্যন কর। এই কন্যা তোমার সুরাধরূপ:
ইহাতে ভোমার উৎকৃট জন্ম হয়; তুমি পুরুষদিগকে সাধনা করিবার নিমিত জীদিগের ভপদ্যা
হইতে সূট হইয়াছ।

২ তৎপরে নিয়োক্ত ছইটি মস্ত্র স্থার। ক্রমে কন্যার মস্তকে কিঞ্ছিৎ জল ও ক্রোড় দেশে বছ্তদ্র জল প্রদান করিবেক।

প্ৰজাপতিখ বিশ্বধ্যে জ্যোতিৰ্জ্ঞগতী ছুন্দ উপস্থৰপং কামোদেবতা জ্ঞাতি কৰ্মণি ক-ন্যায়া উপস্থ প্লাবনে বিনিয়োগং।

ওঁ ইমং ত উপস্থং মধুনা সংসূজামি প্র-জাপতেমুর্থমেতদ্বিতীয়ং তেন পুংসোহতি তবাসি সর্বানবশান্ বশিনাসি রাজী স্বাহা।

তে কন্যকে 'ইমং' 'তে' তব 'উপছং' আনক্ষেত্রহং 'মধুনা' মদ্যেন'সংস্কৃত্যি' সংযোজযামি যতঃ 'প্রকাপতে' ব্যাধ্যমতি দুর্বাজ্য একং মুধং ব্রহ্মগ্রহণার্বং অগরং প্রচ্যোত্তি প্রক্রান্তার্বং অস্তর্গতে একং মুধং ব্রহ্মগ্রহণার্বং অগরং প্রচ্যোত্রনার্বং অব্যান্তার্বং ক্রান্তার্বং ক্রান্তার্বি ক্রান্তার্বি ক্রান্তার্বি ক্রান্তার্বি । 'বনিমী ক্রান্তিম্তী 'রাজ্জী' ব্যামনী সর্ক্রামানং অসি।

হে কনো। ভোষার এই উপত্ মধুযুক্ত ক্রি, ইহা অজাপতির দ্বিতীয় মুখ; তুমি ইহা বারা অবাধা - পুরুষগণকেও বশীভূত করিয়া বাক; তুমি কাভিদতী রাজী।